श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर,
पुराना बाजार मालथौन, सागर (म.प्र.)

तीर्थंकर पार्श्वनाथ की अदभुत प्रतिमायें

6. श्री चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन मंदिर, पुराना बाजार, मालथौन, जिला- सागर, मध्यप्रदेश में प्रवेश करते ही बायीं ओर निर्मित वेदिका पर सफेद संगमरमर की सप्त सर्प फणावली युक्त एक कायोत्सर्गस्थ जिनबिम्ब है, जिसके पादपीठ पर नीचे चिह्न के स्थान पर, 'बन्दर', अथवा 'सिंह' जैसी आकृति बनी हुई है। साथ ही उसी फलक पर अन्य चार कायोत्सर्गस्थ जिनबिम्ब और भी हैं। उनमें से नीचे दोनों ओर एक-एक चिह्न रहित जिनबिम्ब हैं तथा उनके ऊपर 5-5 सर्प फणावलियाँ सहित जिनबिम्ब हैं। इस प्रकार एक ही फलक पर एक साथ पाँच जिन प्रतिमाओं के दर्शन हो जाते हैं। (चित्र क्र. 6)।

संकलनः निर्यापक मुनि श्री अभयसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रभातसागरजी महाराज, मुनि श्री चंद्रसागरजी महाराज, मुनि श्री निरीहसागर जी महाराज

इस तरह की और भी जानकारी इस लिंक पर देख व पढ़ सकते हैं - www.sanskarsagar.org\knowledge

दि.	वार	तिथि	नक्षत्र
		जून 2025	
16	सोमवार	पंचमी	धनिष्ठा
17	मंगलवार	षष्ठी	शतभिषा
18	बुधवार	सप्तमी	पूर्वाभाद्रपद
19	गुरुवार	अष्टमी	उत्तराभाद्रपद
20	शुक्रवार	नवमी/दशमी	रेवती
21	शनिवार	एकादशी	अश्विनी
22	रविवार	द्वादशी	भरणी
23	सोमवार	त्रयोदशी	कृत्तिका
24	मंगलवार	चतुर्दशी	रोहिणी
25	बुधवार	अमावस	मृगशिरा
26	गुरुवार	प्रतिपदा	आर्द्रा
27	शुक्रवार	द्वितीया	पुनर्वसु
28	शनिवार	तृतीया	पुष्य
29	रविवार	चतुर्थी	आश्लेषा
30	सोमवार	पंचमी	मघा
		जुलाई 2025	
1	मंगलवार	षष्ठी	पूर्वाफाल्गुनी
2	बुधवार	सप्तमी	उत्तराफाल्गुनी
3	गुरुवार	अष्टमी	हस्त
4	शुक्रवार	नवमी	चित्रा
5	शनिवार	दशमी	स्वाती
6	रविवार	एकादशी	विशाखा
7	सोमवार	द्वादशी	अनुराधा
8	मंगलवार	त्रयोदशी	ज्येष्ठा
9	बुधवार	चतुर्दशी	मूल
10	गुरुवार	पूर्णिमा	पूर्वाषाढ दि/रा
11	शुक्रवार	प्रतिपदा	पूर्वाषाढ
12	शनिवार	द्वितीया	उत्तराषाढ़
13	रविवार	तृतीया	श्रवण
14	सोमवार	चतुर्थी	धनिष्ठा
15	मंगलवार	पंचमी	शत/पूर्वभाद्रपद

शुभ मुहूर्त

दुकान प्रारंभः जून-19,28, जुलाई-2,3,7
मशीनरीप्रारंभःजून-16,27जुलाई-3,7
वाहन खरीदनेः जून-16,21,27,28 जुलाई-3,5,7

तीर्थंकर कल्याणक

17 जून : भगवान वासुपूज्य जी गर्भ कल्याणक
19 जून : भगवान विमलनाथ जी मोक्ष कल्याणक
20 जून : भगवान नमिनाथ जी जन्म तप कल्याणक
01 जुलाई : भगवान महावीर स्वामीजी गर्भ कल्याणक
02 जुलाई : भगवान नेमिनाथ जी मोक्ष कल्याणक
12 जुलाई : भगवान मुनिसुव्रतनाथ गर्भ कल्याणक

माह के प्रमुख व्रत

24 जूनः रोहिणी व्रत
30 जूनः ऋषि पंचमी
02 जुलाईः णमोकार पैंतीसी व्रत प्रारंभ
03 जुलाईः अष्टान्हिका व्रत प्रारंभ
06 जुलाईः रविव्रत प्रारंभ
09 जुलाईः चातुर्मास कलश स्थापना (चातुर्मास प्रारंभ)
09 जुलाईः कर्म निर्जरा व्रत
10 जुलाईः अष्टान्हिका व्रत पूर्ण
11 जुलाईः वीर शासन जयंती युग परिवर्तन दिवस
12 जुलाईः रत्नवाली-एकावली-द्विकावली
13 जुलाईः 20-27 रविव्रत

सर्वार्थ सिद्धि

19 जूनः 23/17 बजे से 29/42 बजे तक ।
20 जूनः 05/42 बजे से 29/43 बजे तक ।
23 जूनः 15/16 बजे से 29/43 बजे तक ।
25 जूनः 05/44 बजे से 10/40 बजे तक ।
26 जूनः 08/46 बजे से 29/44 बजे तक ।
27 जूनः 05/44 बजे से 07/42 बजे तक ।
02 जुलाईः 11/07 बजे से 29/46 बजे तक ।
05 जुलाईः 05/47 बजे से 19/51 बजे तक ।
07 जुलाईः 05/48 बजे से 25/12 बजे तक ।
12 जुलाईः 06/36 बजे से 29/50 बजे तक ।
17 जुलाईः 05/52 बजे से 29/52 बजे तक ।
18 जुलाईः 05/52 बजे से 26/14 बजे तक ।

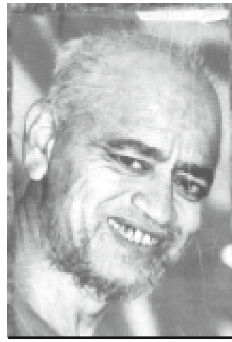

संस्कार सागर

• वर्ष : 25 • अंक : 314 • जून 2025
• वीर नि.संवत 2551-52 • विक्रम सं. 2082 • शक सं. 1945

लेख

• आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी 08
• दंसण शब्द का व्यापक अर्थ 13
• आधुनिक विज्ञान की दृष्टिकोण में वात दोष और आयुर्वेद 16
• पौराणिक कथा 21
• एक झूठ के लिये हजार झूठ 22
• खजुराहो की अनूठी आदिनाथ जिन प्राचीन प्रतिमा 27
• मंदिरों का अतिशय क्यों खतम हो रहा है ? 29
• करूणामयी शिक्षा के जनकः आत्मजयी तीर्थंकर 43
• आचार्य महावीरकीर्ति और उनकी श्रुतसेवा 46
• **वरिष्ठ नागरिकः** बुढ़ापा तथा वरिष्ठता का अंतर 58
• पुरुष वर्ग रोग-अंडकोष में जलसंचय हाइड्रोसील नियंत्रण उपाय 59

बाल कहानी

• जाली जियारूल 62

कविता

• गीत गुरु के गाते 12
• सिंदूर ऑपरेशन 30
• दानवता के दाग मिटा दों 33
• अनंत की यात्रा 41
• गीदड़ भभकी 45
• पहलगाम का हमला 48
• पतित पावन शीतलनाथ जी 57

कहानी

• मजाक में मौत 49

नियमित स्तंभ

पाती पाठकों की : 5 • भक्ति तरंग : 6 • संस्कार प्रवाह : 7 • संयम स्वास्थ्य योग : 25
चलो देखें यात्रा : 31 • आगम दर्शन :32 • माथा पच्ची : 34 • पुराण प्रेरणा : 35
• कैरियर गाइड : 36 • दुनिया भर की बातें : 37 • इसे भी जानिये: 41
•दिशा बोध : 42• हमारे गौरव : 55 • वरिष्ठ नागरिक : 58 • हास्य तरंग-पाककला : 61
• बाल संस्कार डेस्क : 62 • संस्कार गीत व बाल कविता : 63 • समाचार : 64

प्रतियोगिताएं

: वर्ग पहेली : 66

प्रेरणा – परम पूज्य संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के प्रियाग्र शिष्य
एलक श्री सिद्धांतसागरजी महाराज

प्रधान संपादक
ब्र. जिनेश मलैया, इन्दौर–6232967108

प्रबंध संपादक
ब्र. जयकुमार निशांत टीकमगढ़–94251 41697

कार्यकारी संपादक
ब्र. सुदेश जैन कोठिया इन्दौर–9826593189

सलाहकार संपादक
श्री हुकुमचंद सांवला, इन्दौर–9542505311
पं. विनोदकुमार जैन, रजवांस–9575634411
डॉ. मुकेश जैन 'विमल', दिल्ली–9818855130

महिला संपादक
डॉ. ज्योति जैन, खतौली–94128 89449
डॉ.ब्र. समता जैन मारौरा, इन्दौर–8450088410

अतिथि सम्पादक
डॉ. सुनील जैन 'संचय', ललितपुर–97938 21108
अभिनंदन सांधेलीय, पाटन–9425863244
डॉ. पंकज जैन, इंदौर –9584201103
विनीत जैन प्राचार्य, साढ़ूमल–9721419696
अक्षय अलया, ललितपुर – 9453031432

संयोजना
इंजी. अभिषेक जैन 'रिंकू', इन्दौर–9827282170

प्रकाशक
श्री दिगंबर जैन युवक संघ, इन्दौर (म.प्र.)

❊ आंतरिक सज्जा ❊
आशीष कुशवाह, इन्दौर 9179169060

कृपया, संस्कार सागर मासिक पत्रिका का
बाकी सदस्यता शुल्क
जो पत्रिका के लिफाफे पर चिपकी पते की स्लिप पर छपा है, अविलंब भेजकर सहयोग करें।

सदस्यता शुल्क

-आजीवन	: 2100/-	(15 वर्ष)
-संरक्षक	: 5001/-	(सदैव)
-परम सम्मानीय	: 11000/-	(सदैव)
-परम संरक्षक	: 15001/-	(सदैव)

अपने शहर के

• स्टेट बैंक ऑफ इंडिया –**संस्कार सागर**
खाता क्र. 63000704338 (IFSC : SBIN0030463)

• भारतीय स्टेट बैंक –**ब्र. जिनेश मलैया**
खाता क्र. 30682289751 (IFSC : SBIN0011763)

•आईसीआईसीआय बैंक
श्री दिगम्बर जैन युवक संघ
खाता क्र. 004105013575 (IFSC : ICIC0000041)

में भी अपने पूर्ण पते सहित राशि जमा कर हमारे कार्यालय को सूचित कर सकतेहैं।

कार्यालय –संस्कार सागर
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर,
सत्यम् गैस के सामने, ए.बी. रोड़, इन्दौर –10
फोन नं. : 0731–3193601
मो. : 89895–05108, 6232967108
website :www.sanskarsagar.org
e-mail : sanskarsagar@yahoo.co.in

◆ लेखक के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
◆ संस्कार सागर में प्रकाशित रचनाएँ बिना आज्ञा, किसी भी प्रकार से उद्धृत नहीं की जाना चाहिए।
◆ कथा–साहित्य में नाम संस्था काल्पनिक होतेहैं। किसी से समानता मिलना संयोग मात्र है।
◆ पत्रिका संबंधी प्रकरण में न्याय क्षेत्र इन्दौर रहेगा।

•श्री दिगम्बर जैन युवक संघ द्वारा श्री दिगंबर जैन पंच बालयति मंदिर, ए.बी. रोड़, इन्दौर–10 से प्रकाशित एवं मोदी प्रिंटर्स (76, बी–1, पोलोग्राउंड, इन्दौर) द्वारा मुद्रित।

पाती पाठकों की....

• सम्पादक महोदय, 7 मई को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने आलोचलों को गलत सिद्धकर दिया कि मात्र मोदी अति प्रचार नहीं करता अपितु कुछ करना भी जानता है ऑपरेशन सिन्दूर करके आतंकी ठिकानों को तबाह कर यह सिद्ध कर दिया कि मोदी सिंह की सवारी करता है। यह आपरेशन पाक और उसके आतंकियों के लिए साफ संदेश दे गया कि भारत आतंकवाद रूपी सर्प के फन कुचलने में सक्षम है। ऑपरेशन सिंदूर भारत की आतंकवाद रोधी रणनीति का सटीक जबाव है। और आतंकवाद रोकने की संकल्प बद्धता को स्पष्ट करता। अतः पाकिस्तान को यह स्वीकार कर लेना चाहिए की भारत आतंकवाद का सफाया कर सकता है।

....

• सम्पादक महोदय, विगत दिनों पाक के लिए जासूसी करने वालों को पकड़ा गया जिनकी सरगना ज्योति मलहोत्रा अनेक प्रकानर के चैट और वाट्सएप से परत दर परत राज खुलने से उलझ गई परंतु सवाल इस बात का उभार कर आया कि क्या ज्योति भारत माता को नहीं मानती होगी क्या उसे के लिए देश की गरिमा कम नजर आयी। देश के लिए कितनी ही माताये अपने बच्चों को सेना में भर्ती कराती है और दूसरी ओर ज्योति जैसी देशद्रोही बालिका पर उसकी माँ क्या सोचती होगी। अपनी कोख पर पघताती होगी कि मैंने कैसी संतान को जन्म दिया। देश में बड़ा कोई नहीं होता इसे ध्यान में रखना जरूरी है।

....

• सम्पादक महोदय, संस्कार सागर के जून अंक में प्रकाशित डॉ. अरविंद प्रेमचंद भोपाल का लेख पढ़ा मंदिरों का अतिशय खत्म क्यों हो रहा है। इसके तल में जाने से पहले सोचना होगा कि अतिशय प्रतिमा या मंदिर देवकृत होता है। पंचमकाल में व्यंतर भवनवासी और ज्योतिषी देव है। अपनी विक्रिया से अतिशय करते है। उनके स्थायित्व को बनाने के लिए मंदिर की पवित्रता बनाये रखने श्रावकों का कर्तव्य होता है मद्य-माँस मधु का सेवन करने वालो यदि प्रभु प्रतिमा स्पर्श करेंगे तो देवगण अपनी दूरी अवश्य बनायेंगे अतः शुद्ध मन शुद्ध तन और शुद्ध वाणी व्यवहार बनाये रखने से मंदिर का अतिशय अवश्य ही कायम रहेगा।

....

• सम्पादक महोदय,

भक्ति तरंग
चरण तरू की छाँव

प्रभु ! तुम नैनन-गोचर नाहीं ॥ टेक ॥
मो मन ध्यावै भगति बढ़ावै, रीझ न कहु मनमाहीं ॥ प्रभु ॥1॥
जनम-जरा-मृत-रोग-वैद हो, कहा करै कहां जाहीं ॥ प्रभु ॥2॥
द्यानत भव-दुख-आग-माहितै, राख चरण-तरु-छाहीं ॥ प्रभु ॥3॥

हे प्रभु ! आप इन्द्रिय गोचर नहीं हो, इन नेत्रों से दिखाई नहीं देते, इस शरीर से देखे-जाने नहीं पाते।

मेरा मन आपका ध्यान करता है और आपके प्रति अपनी भक्ति भावना को बढ़ाता है, उसमें वृद्धि करता है। मन में कोई मोह नहीं है।

आप जन्म, बुढ़ापा, मृत्यु रूपी रोग का निवारण करने वाले वैद्य हो। आपको छोड़कर हम कहाँ जावें, क्या करें ?

द्यानतराय कहते हैं कि मुझे भव-भव के दुःखों की दाह से, आग से बाहर निकालकर अपने चरण-रूपी वृक्ष की छाँह में रख लीजिए, शरण दीजिए अर्थात तपन को दूरकर शीतलता प्रदान कीजिये।

संस्कार प्रवाह

भारत की गुस्सा

जम्मू कश्मीर के पहलगाम की बेसरन घाटी में पर्यटक मौज मस्ती में मगन थे। किसी को भी कोई भी भय आशंका नहीं थी लेकिन 22 अप्रैल मंगलवार के दिन अचानक वातावरण में परिवर्तन हुआ और सम्पूर्ण घाटी आतंकी हमले से रक्त रंजित हो गई 27 निर्दोष हिन्दू नागरिक अपनी पत्नियों, बच्चों व परिवारों के सामने गोलियों से भून दिये गये। इस क्रूर आतंकी घटना से भारत का हर शहर गुस्से में भर गया कन्याकुमारी से कश्मीर तक हलचल मच गई। गृहमंत्री अमित शाह ने ताबड़तोड पहलगाम का दौरा किया। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सउदी अरब का दौरा छोटा करके दूसरे दिन ही भारत लौट आये। उन्होंने दूसरे दिन ही बिहार के मधुबनी की सभा में उन्होंने घोषण कर दी आतंकवादियों और उनके सहयोगियों को उनकी कल्पना से बड़ी सजा मिलेगी।

पूरा भारत पहली बार आतंकी हमले से गुस्से में भर गया उसका सबसे बड़ा कारण यह कि आतंकियों ने मात्र हिन्दूओं का नरसंहार नहीं किया अपितु उन्होंने सबसे पहले हिन्दू और मुसलमान को अलग-अलग होने को कहा फिर हिन्दूओं से कलमा पढ़ने को कहा और हद तो तब पार हो गई जब वस्त्र उतारकर सुन्नत दिखाने को कहा इससे और क्या बड़ी साजिश हिन्दू मुसलमान को लड़वाने की हो सकती है ? परंतु पाकिस्तान की साजिश सफल नहीं हो सकी एक ऐसा भी मुस्लिम बंदा आदिल नाम का था जिसने आतंकी की ए.के. 47 की नाल पकड़ ली और कहा ये हमारे कश्मीर के मेहमान हैं आप इन्हें ऐसे नहीं मार सकते।

टीवी चैनलों से आतंकी हमले की खबर पूरे देश में फैल गई पूरा भारत गुस्से में आ गया। सभी राजनैतिक दलों ने एक स्वर में पाक की नापाक हरकत का मात्र विरोध ही नहीं किया अपितु सरकार के हर फैसले और कारवाई का पूरा समर्थन भी किया। गृहमंत्री अमित शाह ने हमले के दसवें दिन कहा कि हम हर एक आतंकी को चुन-चुन कर मारेंगे।

आतंकवाद के विरोध में यदि भारत का इसी तरह एकता के साथ गुस्सा फूटता रहा तो पाक जैसे आतंकी समर्थक देश अपने आप सुधरेंगे या फिर नेस्त नाबूद हो जायेंगे।

आचार्य विद्यासागर जी एवं युवा पीढ़ी

❊ बाल ब्र. जिनेश मलैया, इंदौर ❊

प्रायः देखा जाता है कि बालक, बालक से मित्रता करते हैं, वृद्ध-वृद्ध की संगती करते हैं और युवा, युवा का साथ पसंद करते हैं पर इसके विपरीत आज लाखों बाल-वृद्ध युवा आचार्य श्री जी के दीवाने हैं अथवा यूँ कहें कि उनके लिए पागल हैं और क्यों न हों गुरुदेव भले ही 71 वर्ष के हो गये हों किन्तु वे कभी भी इतने बूढ़े नहीं होंगे की युवा न रह सकें।

गुरु के अंदर सौंदर्य देखने कीअद्भुत क्षमता है। जो विद्रूपताओं में भी खूबसूरती ढूंढ लेती है। जो हमेशा खुश रहता है, ऐसा शख्श कभी भी बूढ़ा नहीं हो सकता है। गुरुजी के समक्ष प्रातः से संध्या तक सैकड़ों शिकायतें और समस्याएँ आती रहती हैं लेकिन वे कभी भी अपने मन को हताश नहीं होने देते हैं। कठिनाईयों और निराशा के घने तम के बीच भी वे अपना दिया जला ही लेते हैं। कहा भी हैं कि

माना कि घना अंधेरा है- मगर दिया जलना कहाँ मना है।

दीप निष्कंप जलता रहता है। समंदर को भी वहां ले जाने वाले तूफानों के बीच गुरुदेव की आत्मा से आस्था और उमंग का दीप।

नवम्बर अंत 2004, तिलवारा की बात है ठण्ड बहुत तेजी से बढ रही थी। गुरुजी जिस कक्ष में विराजमान थे उसमें 7-8 दरवाजे के आकर की खिड़कियां थी, सुबह के समय तो उस हॉल में ठण्ड इतनी अधिक होती थी कि गर्म कपड़े पहनने वाले भी काँपने लग जाते थे। अनेक लोगों ने अपने स्तर पर कक्ष बदलने के प्रयास किये पर वे असफल रहे। कई मुनिराजों ने गुरुजी से किसी अन्य कक्ष में शिफ्ट होने का निवेदन किया लेकिन सभी की अर्जी नामंजूर हो गई। एक दिन एक ब्रह्मचारी जी ने हंसी करते हुए कहा गुरु जी तिलवारा में एक भव्य विधान का आयोजन होना है, जिसमें बहुत सारे ब्रह्मचारी आने वाले हैं चूँकि यहाँ जगह की कमी है इसलिए ये हॉल आपको खाली करना पड़ेगा, तो गुरु जी कहते हैं मैं भी तो एक ब्रह्मचारी हूँ क्या इस कक्ष के एक कोने में मुझे भी जगह नहीं मिल जायेगी। कोई और होता तो ब्रह्मचारी जी को इस टिपण्णी पर आंख दिखा सकता था, डाँट सकता था लेकिन गुरुदेव माहौल को खुशनुमा करना जानते हैं, कर्कश शीत लहर के बीच भी वे समओ सव्वत्थ सुंदरो लोए को चरितार्थ कर लेते हैं।

सौंदर्य खोज लेने से इस हुनर में निपुण गुरुदेव की मनमोहक मुद्रा ही युवाओं में चुंबकीय आकर्षण पैदा करती है। एक बार आर्यिका श्री अंतरमति माताजी ने बतलाया था कि जब वे कॉलेज में अध्ययन कर रही थीं उसी दौर में गुरु जी का मढिया आगमन हुआ। उनके मन में आचार्य श्री जी के दर्शन का कौतुहल पैदा हुआ अतः सहेलियों के साथ गुरुजी के दर्शनार्थ वे मढिया पहुंची। प्रथम बार ही गुरु जी की भव्य अलौकिक मुद्रा के निष्काम अप्रतिम सौंदर्य देखकर वे सदैव के लिए गुरु चरणों में समर्पित हो गयीं। ये कहानी मात्र एक साधक की नहीं है पूज्य समतासागर जी महाराज श्री सहित गुरुजी जुड़े हर एक साधक का कमोबेश यही अनुभव रहा है।

गुरुजी के इस जादुई व्यक्तित्व से प्रभावित होकर आधुनिक भौतिक विलासवादी परिवेश में कामनाओं से बजबजाती जीवनशैली में भी युवा साधकों का इतना विशाल गुरुकुल बन गया। ये साधक अपना तो उत्थान कर ही रहे हैं साथ ही साथ देश में कोने-कोने में पहुंचकर लाखों युवाओं का

पथ प्रशस्त कर रहे हैं।

पहले के युवा अपने से बड़ों की गुरुओं की बात सीधे-साधे स्वीकार कर लेते थे किन्तु आधुनिक माहौल में पले पुसे युवा किसी भी बात को बिना तर्क वितर्क के स्वीकार नहीं करते। आज के युवा वैज्ञानिक एवं व्यवहारिक बातों को ज्यादा महत्व देते हैं। गुरु जी भी किसी बात को कहने के पहले उसकी व्यवहारिकता पर विचार करते हैं। गुरुजी न केवल उसे तार्किक तरीके से हर एंगल से परखते हैं अपितु उसका प्रयोग भी करते हैं। गुरुजी प्रयोगधर्मिता के एक बहुत बड़े वैज्ञानिक हैं।

गुरु जी समर्पण को सफलता का मूल मंत्र मानते हैं। किसी भी कार्य की सफलता के लिए पूर्ण समर्पण की जरूरत होती है। अनेक बुद्धिमान लोग समर्पण के बिना अपने कार्यक्षेत्र में असफल हो जाते हैं जबकि कुछ सामान्य बुद्धि वाले लोग समर्पण के कारण सफलता के क्षितिज को छू लते हैं। गुरु जी ने पहले स्वयं इस मंत्र को अपने जीवन में अपनाया है।

गुरुजी से नेमावर में एक भाई ने पूछा आचार्य श्री जी आपने मात्र 4 वर्षों में इतना गहन अध्ययन कैसे किया। प्रश्न सुनते ही गुरु जी कहीं खो गए, शायद अपने गुरुजी की स्मृति में। गुरु जी से उस भाई ने बार-बार निवेदन किया तो उन्होंने संकोच करते हुए बतलाया की 4 वर्ष में नहीं 2 वर्ष में, एक वर्ष तो भाषा के अध्यय में लग गया और एक वर्ष गुरुजी की सल्लेखना के लिए समर्पित रहा। 2 वर्ष तो बड़ा लम्बा समय है ऐसा एवं इससे भी अच्छा अध्ययन 9 वर्ष में भी किया जा सकता है बशर्ते शिष्य और गुरु के बीच भगवान भी न आये तो।

गुरु जी का यह उत्तर कितना जीवंत और व्यवहारिक है। उन्होंने ऐसे समर्पण का प्रयोग अपने जीवन में किया अब इस युवा पीढ़ी को यह अमूल्य धरोहर सौंप रहे हैं। यही कारण है कि आई.आई.टी जैसे संस्थानों से शिक्षित, मल्टी नेशनल कंपनी में काम करने वाले एवं अमेरिका जैसे देश में सेवारत युवा भी आज चरखा चला रहे हैं। इतना ही नहीं अनेक सी.ए., वकील, डॉक्टर, इंजीनियर भी आपके एक इशारे की प्रतीक्षा में खड़े हुए हैं।

पहले कहते थे कि कितनी चादर है उतना पैर फैलाओं, लेकिन आज का युवा ऊंचे सपने देखता है वह बड़े लक्ष्य निर्धारित करता है, वह सोचता है कि।

जिंदगी की असली उड़ान अभी बाकी है।

जिंदगी के कई इम्तहान अभी बाकी है अभी तो नापी है मुट्ठी भर जमीं हमने

अभी तो सारा आसमान बाकी है।

उसे लगता है कि यदि रिक्शे वाले का बेटा आई.ए.एस बन सकता है, एक चाय बेचने वाला प्रधानमंत्री बन सकता है और एक गरीब धीरू भाई अम्बानी जैसा बन सकता है तो मैं क्यों नहीं ? अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए वह लीक से हटकर सोचता है, वह रिस्क लेता है, चीजों और परिस्थितियों को ऑब्जर्व करने का उसका एक अलग तरीका होता है। युवा पीढ़ी के सोचने का इस ढंग से गुरुजी न केवल परिचित हैं बल्कि उनके जीवन में भी ये सारे गुणधर्म विद्यमान हैं। इसलिए युवाओं के लिए उनका कहना है कि

जब हौसला बना लिया ऊँची उड़ान का फिर देखना फिजूल है कद आसमान का

आज कल एक इंटरव्यू का वीडियो वॉयरल हो रहा है। एक युवा नौकरी के लिए इंटरव्यू देने पहुँचता है, एच.आर. कहता है **राईट समथिंग** वह युवक जाब लिख देता है। उसका अकादमिक

रिकॉर्ड बहुत अच्छा होता है लेकिन उसे एच.आर रिजेक्ट कर देता है फिर दूसरा युवक आता है इसी प्रश्न में उत्तर में वह लव माय कम्पनी लिखता है। उसका भी चयन नहीं होता। ऐसे करते करते बहुत सारे युवकों को एच.आर मना करता जाता है। तब एक और युवक आता है उससे भी वही प्रश्न की राईट समथिंग वह युवा **समथिंग** ही लिख देता है। इस युवक ने 4 वर्ष की डिग्री 6 वर्ष में पूरी की थी लेकिन उसके सहज जवाबों से एच.आर खुश होकर उसे जॉब पर रख लेता है।

गुरु जी के शिष्यत्व स्वीकार करने के लिए भी ऐसे ही बड़ी-बड़ी साधना करने वाले चर्यावान और बुद्धिमान व्यक्ति आते हैं लेकिन उनके निरीक्षण की पद्धति बहुत अलग है। बुद्धिमान रह जाते हैं और भोले-भाले लोग उनकी चरण छाँव में स्थान पा जाते हैं। एक दिगम्बर आचार्य द्वारा गौ शालाओं के लिए प्रेरणा और आशीर्वाद देना साधुओं और विद्वानों को अटपटा लगता है किन्तु यह उनकी करूणा की अभिव्यक्ति का लीक से हटकर एक अलग तरीका है। श्रमण संस्कृति को संरक्षित और संवर्धित करने की पवित्र भावना के कारण वे अहिंसा बैंक, अस्पताल और मांस निर्यात विरोध आदि कार्यों के लिए जब युवाओं को प्रेरित करते हैं तो कितनी उंगलियाँ उनकी तरफ उठती हैं लेकिन गुरुजी का बिल पवार बहुत स्ट्रांग है। गुरुजी किसी की टीका टिपण्णी पर ध्यान नहीं देते , वे सोचते है कि

उम्र जाया कर दी लोगों ने औरों के बजूद में नुक्स, निकालते निकालते
इतना खुद को तराशा होता तो फरिस्ता बन जाते।

गुरु जी को कोई फरिस्ता कहते हैं, कोई कलिकाल तीर्थंकर कहते हैं, तो कोई चलते फिरते सिद्ध कहते हैं। ये भक्तों की गुरुजी के प्रति श्रद्धा है लेकिन सैद्धांतिक दृष्टिकोण से गुरुजी भगवन नहीं है। पर आश्चर्य तो ये है कि हमारे जैसा ही हीन संहनन, वैसा ही प्रतिकूल वातावरण एवं इस कलिकाल की नैतिक पतनाभिमुख भौतिक संस्कृति के होने पर भी जगत् को विस्मित कर देने वाली आपकी साधना की ऊंचाई स्तुत्य है, वंदनीय है। जगत् पूज्य गुरुदेव अपने इन्हीं अनूठे गुणों के कारण से आज की युवा पीढ़ी के आकर्षण के केन्द्र बने हुए हैं ।

स्वामी विवेकानंद जी कहना हैं कि जो फूल बिलकुल ताजे हैं , जो मसले नहीं गए हैं और अभी सूंघे भी नहीं गये हैं, वही फूल भगवन के चरणों में अर्पित किये जातेहैं इसलिए युवाओं तुम्हारे सुनहरे भविष्य का निश्चित करने का यही सही समय है। युवावस्था में नये जोश और उमंग के साथ काम कर अपने भाग्य का निर्माण करो तथा एक महान ध्येय को पाने के लिए अपने यौवन को अपने लिए समर्पित करे दो।

गुरुजी भी मानते होंगे कि बालकों के पास सोच नहीं होती और वृद्धों के पास उम्मीद नहीं होती इसलिए उन्होंने हमेशा युवाओं पर भरोसा जताया है। गुरु जी इस युवा पीढ़ी को प्रशासन के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। गुरुजी इस सोच के पीछे एक मजबूत कारण है कि भारत प्राकृतिक सम्पदा एवं नैतिक संस्कारों के दृष्टिकोण से तो समृद्धशाली देश है किन्तु आज विश्व समुदाय में आधुनिक विकास के मामले में बहुत पिछड़ा है, जिसका एक प्रमुख कारण भ्रष्टाचार है।

गुरुजी ने इस सत्य को पहचानकार प्रशासनिक क्षेत्र में जाने के लिए संस्कारित युवा पीढ़ी को दिशा निर्देश प्रदान किया जिससे आज हजारों युवक युवतियां उच्च प्रशासनिक पद पर आसीन हो चुके हैं । गुरुदेव ने इन युवाओं के अंदर इतनी ऊर्जा भर दी है कि यदि वे अपने उद्देश्यों से विचलित नहीं होते हैं तो अगले कुछ वर्षों में भारत की तस्वीर कुछ और ही होगी। ये अधिकारी भी अपने लक्ष्य के लिए दृढ़ संकल्पित हैं। चाहे कितनी भी प्रतिकूल परिस्थिति आ जाये पर हार नहीं मानना है।

इनके लिए श्री अटल बिहारी बाजपयी जी ये पंक्तियाँ प्रांसगिक हैं कि

क्या हार में क्या जीत में किंचित नहीं भयभीत में
वरदान नहीं मांगूगा, हो कुछ भी पर हार नहीं मानूँगा।

आज हर मां-बाप अपने बच्चे को अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर आदि बनाना चाहता है कोई उन्हें अच्छा नागरिक बनने के लिए प्रेरित नहीं करता। गुरुजी एक बार बीनाबारहा में बड़े गौर से डिक्शनरी देख रहे थे मैंने पूछा आचार्य श्री जी कुछ खास विषय है क्या ? गुरु जी ने कहा ग्रेजुएट का अर्थ देख रहा हूँ। ग्रेजुएट का मतलब क्रमिक। इंजीनियरिंग, विज्ञान आदि की डिग्रियों में मात्र यांत्रिक ज्ञान होता है किन्तु इसमें युवाओं के व्यक्तित्व निखार के लिए कोई स्थान नहीं है। इसलिए आज इस युवा पीढ़ी के अनेक सदस्य कभी कभी आर्थिक मजबूरियों के कारण से अथवा कभी अपने अव्यवहारिक लक्ष्य में असफल होने के कारण से अनैतिक आचरण की और बढ़ जातेहैं।

यह युवा पीढ़ी कभी गुमराह ही न हो इस हेतु गुरुजी ने शिक्षा के स्तर से सुधर की जरूरत पर महत्त्व दिया है। जिस तरह मैकाले ने शिक्षा पद्धति में परिवर्तन कर भारत को बहुत समय तक गुलाम बनाये रखा था, उसके विपरीत भारतीय समाज एवं आने वाली पीढ़ी के उन्नयन के लिए गुरुजी ने शिक्षा के समीचीनकरण करते हुए प्रतिभास्थली विद्यालय इस राष्ट्र को समर्पित किया। प्रशिक्षित एवं सुसंस्कृत शिक्षकों के द्वारा स्थानीय भाषा में आवश्यक विषयों के साथ-साथ भारतीय संस्कृति के उच्च आदर्शों की शिक्षा दी जाये, उन्हें इस देश, समाज, परिवार और अपने निजी जीवन का अर्थशास्त्र सिखाया जाये, भारतीय विधिक एंव न्यायिक व्यवस्था से परिचय कराया जाए तो इस युवा पीढ़ी की सोच में चमत्कारी परिवर्तन देखने मिलेंगे।

यदि प्रतिभास्थली मॉडल को सम्पूर्ण भारत वर्ष के बालक-बालिकाओं के लिए लागू कर दिया जाये तो निःसंदेह अगले 15-20 वर्षों में न केवल अपराध, अलगाववाद, आतंकवाद बेरोजगारी आदि की समस्याएं नियंत्रित हो जायेंगी बल्कि विश्व के मानव विकास मानदंड में भी ऊँची छलांग देखी जा सकेगी।

अपने आपको धर्म, निरपेक्ष कहने वाले बड़े-बड़े लिवरल लोग भी धर्म के मायने नहीं समझ पाते लेकिन धर्म के विषय में गुरुजी की सोच बहुत विस्तृत है। आप मात्र जैनियों के बारे में नहीं सोचते अपितु समूचे राष्ट्र के विकास के लिए सोचते हैं। सुना था कि प्रधानमंत्री श्री मोदी जी ने गुरु जी से मिलने के उपरांत कहा था-मैंने सोचा था कि ये बाबा भी किसी मंदिर या प्रोजेक्ट के लिए जमीन या कुछ सुविधाओं की मांग करेंगे लेकिन नहीं इन्होंने चर्चा की।

1. देश के युवाओं को ज्यादा से ज्यादा रोजगार कैसे मिले ?
2. गरीबी का उन्मूलन कैसे हो ?
3. किसानों की आत्महत्याएँ कैसे रूके ?
4. जंगलों एवं पर्यावरण की सुरक्षा कैसे हो ?

इतना ही नहीं इन समस्याओं के कुछ बेहतरीन समाधान भी गुरुजी ने सुझाये थे।

1. श्री सावला जी के अनुसार गुरुजी ने कहा कि रेलवे कि पटरियों के दोनों तरफ खाली पड़ी लाखों हेक्टेयर जमीन को यदि कृषि कार्यों के उपयोग में लाया जाए तो लाखों कृषकों को आमदनी का अच्छा साधन मिल जायेगा।

2. गुरु जी का दूसरा सुझाव था कि यदि कुटीर उद्योगों में हथकरघा जैसे उपक्रम का प्रोत्साहन दिया जाए तो इससे करोड़ों युवाओं का जीविका का न्यूनतम साधन प्राप्त हो जायेगा।

इस तरह युवा पीढ़ी और सम्पूर्ण भारतवर्ष के प्रति गुरुजी की करूणा के बारे में जितना भी कहा जाए बहुत कम है। गुरुदेव ने इस पीढ़ी को वो सब कुछ दिया जो किसी देश का मुखिया भी नहीं दे सकता। अब समय है गुरुजी के संकेतों को समझकर उसे क्रियान्वित करने का। गुरुजी के अवदानों से उपकृत यह सृष्टि सदैव उनकी ऋणी रहेगी।

इतना सब कुछ देने के उपरांत भी गुरुजी कर्तृतत्व भाव से बहुत दूर है। वो हम सब के बीच रहते जरूर हैं पर वे जगत् से अजनबी बने हुए हैं।

निदा फाजली का एक शेर गुरुजी पर प्रासंगिक है

बदला न अपने आपको जो थे वही रहे,

मिलते रहे सभी से मगर अजनबी रहे।

संयम साधना के 50 वर्षों से साधना की पराकाष्ठा को छूने वाले है गुरुदेव इतनी अनुकंपा करना कि मेरा हृदय कभी भी आपके चरण कमलों की सान्निध्य से दूर न रहे। मेरी आत्मा के एक-एक प्रदेश पर आपकी ही छवि अंकित रहे।

कविता

गीत गुरु के गाते

✻ संस्कार फीचर्स ✻

सब शिष्यों को छोड़कर तो गये अंत विदाई
दिल में से तुम कहे करी ठिठाई
संयम पथ दिखलाया गये बांधी प्रेम की डोर
बंद नयन कर चल दिये देखा निज की ओर
अघ मद जीते जिन बने जीती राग कषाय
विषय वासना तज गये निज आतम को ध्याय
अरिहंतों की शरण में संयम चरण विशाल
अमर तत्त्व के ध्यान में संभारा तन धार
नश्वर तन से मोह तज साम्य भाव उर धार
अंत समय संल्लेखना आरा धन शुभ चार
विद्यासागर गुरु बने किया कोटि उपकार
सत् पथ शिवपथ दे गये अतः नमन शत् बार
उपकारों की याद सताती अँखिया पल रोती
नयन निहारें विद्या छवि को झर झर झरते मोती
पलकों में विद्यासागर छवि भूल नहीं हम पाते
विरहा सी पीड़ा सह करके गीत गुरु के गाते।

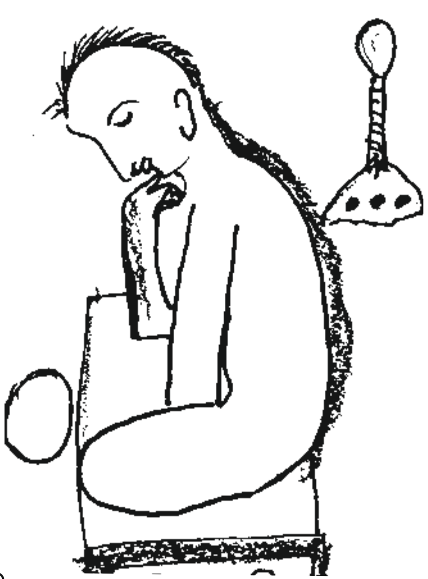

दंसण शब्द का व्यापक अर्थ

✻ ब्र. सुशीला दीदी, सागर ✻

दंसण शब्द के प्रायः कई अर्थ होते है जिसमें देखना, श्रद्धान करना आदि भी है। लेकिन यहां पर कुन्द कुन्द स्वामी ने जिनमत, जिनमुद्रा, सम्यक्त्व, दर्शन आदि अर्थो में दंसण शब्द लिया है।

आचार्य कुंदकुंद स्वामी महान आचार्य हुये हैं। जिन्हें मंगलाचरण में बड़ी श्रद्धा के साथ स्मरण किया जाता है।

मंगलं भगवान वीरो मंगलं गौतमोगणी

मंगलं कुन्द कुन्दाद्यौ जैन धमोऽतु मंगल

आचार्य देव ने अष्ट पाहुड़ में जैन दर्शन का हार्द, रत्नत्रय धर्म, श्रमणाचार्य आदि विषयों का बड़ी स्पष्टता से विवेचन किया है।

सर्व प्रथम दर्शन शब्द का अर्थ स्पष्ट करते हुये लिखा है। मंगलाचरण में ही कहा है-

काऊण णमोस्कारं जिणवर वसहस्स बड्ढमाणहस्स।

दंसण मंग्गं वोच्छामि जहा कमं ससासेण॥1॥

प्रस्तुत गाथा में कुन्द कुन्द स्वामी ने **दंसण मंग्गं वोच्छामि** कहा है विचारणीय है। दर्शन मार्ग क्या है! टीकाकार और अनुवाद कर्ता ने भी दंसण का अर्थ सम्यग्दर्शन किया है। लेकिन दर्शन मार्ग कहने से स्पष्ट होता है रत्नत्रय रूप मुनि मुद्रा है। अगली गाथा में स्वयं कुन्द कुन्द स्वामी कह रहे हैं।

दंसणं मलो धम्मो उवइट्ठो जिणवरेंहिं सिस्साण

यहां पर दर्शन शब्द का अर्थ मुनि मुद्रा है। इस गाथा के माध्यम से दंसणं को धर्म का मूल बताया है। और यह भी कहा हैं कि दर्शन से हीन वंदना के योग्य नहीं है।

यहां पर अगर दंसणं शब्द का अगर सम्यग्दर्शन मानेगे तो कुन्द कुन्द स्वामी अपने शिष्यों को, जो कि रत्नत्रय के आराधक है। उनको सम्यक्त्व का उपदेश देते हैं? और यह भी कहते हैं कि अपने कानों से सुनो। सुनी बात पर ही विश्वास करो। दर्शन से हीन वंदना के योग्य नहीं हैं।

अगर सम्यक्त्व अर्थ लेंगे तो सप्तम नरक में रहने वाला नारकी भी सम्यग्दृष्टि हो सकता है। एक तिर्यञ्च भी हो सकता है। फिर उसे भी कुन्द कुन्द स्वामी के शिष्यों द्वारा वंदना के योग्य मानना पड़ेगा।

इसका सही अर्थ न समझने के कारण ही मात्र सम्यक्त्व को ही महत्व देने में लगे हैं। जबकि रत्नत्रय युक्त सम्यग्दर्शन अर्थ है।

उसे ही अगली गाथा में स्पष्ट करते हैं-

दंसणं भट्टा भट्टा दंसण भट्टस्स णत्थि णिव्वाणं।

सिज्झन्ति चरिय भट्टा, दंसण भट्टाण सिज्झन्ति।।

यहां पर भी दंसणं का अर्थ मार्ग मुनि मुद्रा है। जो जिनेन्द्र भगवान के मत से अर्थात् मुनि मुद्रा से भ्रष्ट हैं उन्हें कभी निर्वाण की प्राप्ति नहीं हो सकती। चारित्र से भ्रष्ट को कालान्तर में निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है।

यहां पर भी वही बात स्पष्ट होती है कि जो मार्ग में भ्रष्ट होने पर मुक्ति चाहते हैं उन्हें निर्वाण की प्राप्ति नहीं हो सकती। अगर जिनमुद्रा है, भले ही अंदर में चारित्र कभी रत्नत्रय न रहा हो फिर भी बाहर में यथावत् भेष होने पर अंतर्मुहूर्त में रत्नत्रय आ सकता है। और स्थिर होकर मुक्ति को प्राप्त कर सकता है। इसलिये **सिज्झंति चरिय भट्टा** कहा है। क्योंकि बाहर में अगर निर्दोष दिगम्बर भेष है। तो भले ही द्रव्य लिंगी हो। और द्रव्य लिंग का अर्थ अकेले मिथ्यादृष्टि नहीं है। चतुर्थ गुण स्थान से युक्त भी हो सकता है और पंचम गुणस्थान से युक्त भी द्रव्यलिंग हो सकता है। लेकिन ऐसे मुनि अंतर्मुहूर्त के अंदर भी छटवें सातवें में आकर श्रेणी भी चढ़ सकते हैंऔर क्षपक श्रेणी चढ़कर केवल ज्ञान और निर्वाण को भी प्राप्त कर सकता हैं।

जहाँ पर दंसणं से सम्यग्दर्शन अभिप्रेत है वहां पर वह स्वयं **सम्मत्त रयण भट्टा** कहते है। वह व्यक्ति बहुत से शास्त्रों का ज्ञान रखने पर भी संसार में परिभ्रमण करता है। मिथ्यादृष्टि को भी ग्यारह अंग और नव पूर्व का ज्ञान हो सकता है। लेकिन वह ज्ञान मुक्ति प्राप्त नहीं करा सकता।

कहा भी है-

ज्ञान ही दुख का मूल है ज्ञान की सुखकार राग सहित प्रतिकूल है, राग रहित अनुकूल।

अज्ञानी मिथ्यादृष्टि का ज्ञान मद् आदि उत्पन्न करके दुख का कारण बन सकता है संसार परिभ्रमण करा सकता है, और सच्चा ज्ञान अगर राग से रहित है तो भले ही पोथी का ज्ञान न भी हो शिव भूति महाराज जैसा। वह भी निर्वाण प्राप्त करा सकता है।

आगे कुन्द कुन्द स्वामी कहते हैं कि मार्ग से भ्रष्ट हैं जो, वे भले ही बाहर में ज्ञानी हों पर वे ज्ञान से भी भ्रष्ट हैं आचार से भी भष्ट है, और वे भ्रष्टों से भ्रष्ट हे। ऐसे व्यक्ति अन्य लोगों को भी कुपथ पर चलाकर नष्ट कर देंगे। इसलिये ऐसे लोगों से बचकर रहने की प्रेरणा दी हैं।

20 गाथा- जैसे मूल के नष्ट होने पर वृक्ष के शाखा आदि की वृद्धि नहीं हो सकती।

तह जिण दंसण भट्टा मूल विणट्ठाण सिज्झंति

यहां पर मूल शब्द से जिनमत स्पष्ट अर्थ है। उसके वहां रत्नत्रय रूप धर्म ही नहीं आ सकता। बिना रत्नत्रय के कभी भी सिद्धि प्राप्त नही हो सकती।

आगे स्पष्ट करते हुये कहते हैं कि

12 गाथा- कि जो जो मार्ग पर चलते नहीं हैं। जिनमत से बर्हि हैं। और जो दंसण धारियों की अर्थात् जो मार्ग पर चल रहें हैं उनके लिये वंदना नमस्कानर आदि नहीं करते हैं। वे लूले और गूंगे होते हैं।

रत्नत्रय आराधक, मार्ग पर चलने वाले इस विषम काल में दुर्लभ हैं। लेकिन उनका अभाव

नहीं है।

आज भी रत्नत्रय आराधक हैं। आत्मा का ध्यान करके लौकान्तिक देव, इन्द्र आदि पद को प्राप्त कर सकते हैं। और वहां से आकर निर्वाण को प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसे मुनियों के लिये जो नहीं समझ पाते हैं। और उनकी निन्दा आदि करते हैं। उनके लिये कुन्द कुन्द स्वामी कहते हैं कि ऐसे व्यक्ति गूंगे होते हैं। और कहने से क्या।

दर्शन प्राभृत में ही स्पष्ट करते हुये दंसण किसे कहते हैं। यह लिखते हैं।

दुविहं पि गंथ चायं तीसुवि जोएसु संजमो ठादि।

णाणम्मि करणसुद्धे, उब्भसणे दंसणं होई।।

अर्थात् जो मुनि दोनों प्रकार के परिग्रह का त्याग करते हैं। तीनों योगों पर संयम रखते हैं। अर्थात् मन वचन काय पर नियंत्रण रखते है, ज्ञान को इन्द्रिय के विषयों में शुद्ध रखते हैं और खड़े होकर भोजन करते हैं उन्ही मुनियों के दर्शन होता है।

दर्शन का अर्थ अगर सम्यग्दर्शन माने तो वही सम्यग्दृष्टि होगा जिसके दोनों प्रकार के परिग्रह का त्याग होगा। संयमी होगा खड़े होकर भोजन करेगा।

खड़े होकर भोजन तो कुन्द कुन्द स्वामी ने मुनियों के लिये ही कहा है अकेले सम्यग्दृष्टि को खड़े होकर भोजन करने की आज्ञा नहीं दी है, इससे स्पष्ट है कि दर्शन का अर्थ मुनि मुद्रा जिनमत ही है।

अन्य टीका ग्रंथों में भी सम्यक्त्व अर्थ किया है लेकिन सम्पूर्ण प्रतीत नहीं होता। अगर सम्यक्त्व अर्थ मानें तो रत्नत्रय युक्त दंसणं और मुनि मुद्रा है अकेले चतुर्थ गुणस्थानं वर्ती नहीं है।

मुनि के बाध्य भेष को ही दंसणं शब्द से स्पष्ट किया है। गृहस्थ के भले ही सम्यग्दर्शन हो पर उसका कोई भेष नहीं होता। उसे देखकर कोई अंदाजा लगाया जा सकता है कि यह सम्यग्दृष्टि है या नहीं।

सम्यग्दर्शन हमारी आंखों का विषय नहीं है। हमारे ज्ञान का भी विषय नहीं बनता। इसलिये यहां पर दंसणं का अर्थ जिनमत मुनि मुद्रा ही है। इसे ही स्पष्ट करते हुये कहा है कि (बोधपाहुड 14 गाथा) दंसेइ मोक्खमग्गं सम्मत्तं संजमं सुधम्मं च।

णिग्गंथं णाणमयं जिण मग्गे दंसणं भणियं।।

जो मोक्खमार्ग को दिखा दे। जिसे देखने से मालूम हो जाय यही जैन साधू है। इनका श्रद्धान संयम धर्म आदि का निर्ग्रन्थ ज्ञान मय जो है वही जिनमार्ग में दर्शन कहा गया।

इससे स्पष्ट है कि दंसणं के अनेक अर्थ होते हुये भी यहां विवक्षित अर्थ मार्ग, जिनमुद्रा जिन मत है। क्योंकि उनके दर्शन करने मात्र से पाप का क्षय देखा जाता है।

वही मुद्रा वंदनीय है। सम्यग्दर्शन को नापते का थर्मामीटर हमारे पास नहीं है इतना कहकर वाणी को विराम देती हूँ।

आधुनिक विज्ञान की दृष्टिकोण में वात दोष और आयुर्वेद

※ डॉ. अरविन्द प्रेमचंद जैन, भोपाल ※

वात दोष मानव शरीर के शारीरिक प्रदर्शन और बल सिद्धांत को नियंत्रित करते हैं। जिसके माध्यम से शरीर के प्रमुख कार्य जैसे शारीरिक क्रिया या गति, संचार, परिवहन, श्वसन, रक्त परिसंचरण और मानसिक कार्य आदि। वात दोष शरीर के उन प्रमुख दोषों में एक है जो पूरे शरीरिक स्वास्थ्य के लिए जिम्मेदार होते हैं। आयुर्वेद ने अभिव्यक्तियों और प्रभावों के आधार पर इन दोषों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया है। ये तीन दोष वात, पित्त और कफ हैं। वात का अर्थ वायु से है।

वात दोष का सिद्धांत आकाश वायु पर आधारित है। इन दोनों घटकों में आकाश (ईथर) पहला तत्व है जो बहुत की सूक्ष्म तत्व है और जिसे आकाश या स्पेस भी कहा जाता है। ईथर के बाद वायु दूसरा प्रमुख तत्व है जो वात दोष का घटक हैं। यह ईथर (आकाश) से विकसित होता है जिसे वायु कहा जाता है। वात इन दो तत्वों का संयोग है। हालांकि वात भी सूक्ष्म है इसलिये इसकी उपस्थिति केवल शरीर में अपने कार्यों द्वारा ही महसूस की जा सकती है।

वात दोष के गुण क्या है- आयुर्वेद में वात दोष की व्याख्या बहुत ही प्रभावी ढंग से की गई हैं। जिसके अनुसार वात दोष में प्रयोग किये गये संस्कृत शब्दों का अंग्रेजी में अनुवाद इस प्रकार है।

रूक्ष, शीत, लघु, सूक्ष्म, चल, विशद, खर, कठिन

हालांकि वात को शीत माना जाता है लेकिन वात योगावही के रूप में कार्य करता है। इसका मतलब यह है कि जब यह गर्म पदार्थ के साथ मिलता है तो यह उष्ण गुणवत्ता को दर्शाता है। लेकिन जब यह ठंडे पदार्थो से मिलता है तब इसकी प्रकृति ठंडी हो जाती है। हालांकि वात अपने आंतरिक गुणों को कभी भी नहीं खोता है। लेकिन यह इसके साथ जुड़े अन्य पदार्थो के गुणों को प्रभावित कर सकता हैं।

यह पित्त के साथ जुड़ने पर गर्माहट पैदा करता है। उसी तरह जब यह कफ से जुड़ता है तो ठंडक का एहसास दिला सकता है। पित्त और कफ वात के बिना काम नहीं कर सकते हैं लेकिन वात पित्त और कफ के बिना काम कर सकता है। यही वात की स्वतंत्र प्रकृति है। वात के अपने स्वतंत्र कार्य हैं लेकिन पित्त और कफ अपने कार्यो के लिए वात पर निर्भर रहते हैं।

सामान्य शब्दों में कहा जाये तो वात तंत्रिका तंत्र के सभी प्रमुख कार्यो के लिए जिम्मेदार है। वात कार्य निम्नलिखित हैं।

होश- (सेंसेस) संचार- (कम्युनिकेशन) प्रवाहकत्व- (कंडक्टिवित्य) इंपुल्सिविटी (इम्पुल्सिवित्य) भेद्यता- (परमाबिलिटी) संवदेनशीलता- (सेंसिटिविटी) परिवहन- (ट्रांसपोर्टेशन) प्रसार- (सर्कुलेशन) निकाल देना- (एलिमिनेशन) मूवमेंट-(मूवमेंट) श्वसन- (रेस्पिरेशन) विचार- (थॉट) रफनेस पैदा करना- (प्रोडूसस रौगनेस्स) लपट पैदा करना- (प्रौडूसस लाइटनेस)

वात जीवित कोशिकाओं में संचार, आंदोलन और परिवहन को नियंत्रित करता है। यह सेलुलर संरचनाओं में अणुओं के आंदोलन को निर्धारित करता है जिससे शरीर की गतिशीलता को भी नियंत्रित किया जाता है। वात मस्तिष्क से शरीर के अन्य भागों और अंगों को भी संचालित करने में अहम भूमिका निभाता है। हमारे शरीर में सेलुलर विभाजन वात के बिना संभव नहीं है। वात सेलुलर संगठन और ऊतकों में संयुग्मित करने में सहायक होता है। इसलिये शरीर में वात की अधिक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। शरीर के लिए वात के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं-

भ्रूण का आकार- वात क्रिया के कारण भ्रूण का आकार होता है वात भ्रूण के आकार को बनाने और निर्धारित करने में अहम भूमिका निभाता है। यह शरीर में सूखापन पैदा करता है।

वात शारीरिक गतिविधियों और मूवमेंट को प्रेरित करता है जिससे यह शरीर में अपचय (कतबोलिस्म) का कारण बनता है।

वात शारीरिक क्रिया की गति को निर्धारित करके और पित्त को नियंत्रित करता है।

वात एक प्रमुख घटक है तो भ्रूण के विकास से लेकर जीवन के विनाश तक लगभग सभी क्रियाओं के लिए अहम होता है।

मस्तिष्क रीढ़ की हड्डी और परिधीय नसों सहित तंत्रिका तंत्र के सभी कार्य वात के कारण ही होते हैं। यह तंत्रिका में आवेगों की उत्तेजना में एक भूमिका निभाता है।

शरीर में वात के मुख्य स्थान कहां है ?

यह निर्धारित करना मुश्किल है कि वात शरीर के किस प्रमुख हिस्से में होता है। क्योंकि वात पूरे शरीर और जीवित कोशिकाओं में मौजूद होता है। लेकिन फिर भी आयुर्वेद ने शरीर के कुछ प्रमुख हिस्सों को निर्दिष्ट किया है जहां मानव शरीर में वात की क्रियाएं अभिव्यक्तियों सामान्य रूप से दिखाई देती है। आयुर्वेद के अनुसार नाभि के नीचे के सभी अंगों को वात क्षेत्र माना जाता है। जिनमें शामिल हैंः

पेल्विक कोलन (पेल्विक कोलन) मूत्राशय (ब्लैडर) श्रोणि (पेल्विस) गुर्दे (किड्नेस) हड्डियों (बोनस) कान, त्वचा (स्किन) निचले अंग लोअर लिम्बस- (लेग्स, फिट)

वात के प्रकार क्या है-

सामान्य रूप से वात के 5 प्रकार होते हैं जिन्हें हम इन नामों से जानते हैं।

प्राण वायु, उदान वायु, समान वायु, व्यान वायु, अपान वायु

प्राण वायु क्या है- योग में प्राण वायु जीवन शक्ति और महत्वपूर्ण ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करती है। आयुर्वेद में यह मन, बुद्धि, विवेक, तंत्रिका तंत्र, इंद्रिय अंगों, मोटर अंगों और श्वसन की मूल कार्यात्मक इकाई है।

प्राण वायु का शरीर में संस्थान- प्राण वायु शरीर के विशिष्ट अंगों या भागों में मौजूद होती हे। जैसे किः दिमाग, दिल और फेफड़ों में गला जुबान मुंह नाक

हालांकि प्राण वायु की उपस्थिति या स्थान को लेकर कई लोगों में अलग अलग विचार है। लेकिन यह सेलूलर स्तरों से पूरे शरीर में काम कर रहा है। इसके अवलोकन योग्य कार्य सिर और नाभि के बीच दिखाई देते है। फिर भी जानकारों के अनुसार प्राण वायु के तीन प्रमुख मुख्य स्थान होते हैं।

सिर, दिल नाभि का क्षेत्र और उसके आसपास का क्षेत्र

प्राण वायु के सामान्य कार्य क्या हैं - सांस लेने का भोजन को निगलने को आसान बनाना थूकना छींक आना बेलचिंग या बरप पांच इन्द्रियाएं नसों का कार्य खांसी और बलगम को बाहर निकालना।

प्राण वायु बढ़ने के कारण होने वाले रोग- मानव शरीर में आवश्यकता से अधिक या प्राण वायु का अधिक मात्रा होने पर कुछ सामान्य या गंभीर स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। जो इस प्रकार हैं।

दमा, ब्रॉकाइटिस सामान्य जुखाम हिचकी आना आवाज की कर्कशता आमतौर प्राण वायु की अधिकता के कारण लोगों को श्वसन संबंधी रोग प्राण वायु के बढ़ने के कारण होते हैं।

उदान वायु क्या है- उदान वायु मुख्य रूप से भाषण या आवाज को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार होता है। यह डायाफ्राम, छाती, फेफड़े ग्रसनी और नाक के कार्यों का समर्थन करता है। उदान का अर्थ है जो शरीर के ऊपरी हिस्सों में चलती और काम करती है। उदान वायु का प्रमुख कार्य आवाज उत्पन्न करना है जो किसी से बात करने और आवाज निकालने में मदद करता है।

उदान वायु का शरीर में स्थान- उदान वायु शरीर के कुछ विशेष हिस्सों पर मौजूद रहती है। जो इस प्रकार हैः- डायाफ्राम, छाती, फेफड़े उदर में, भोजन, नाक

इसके अलावा चरक संहिता के अनुसार उदान वायु मुख्य रूप से निम्न तीन क्षेत्रों में स्थिति है। नाभि और इसके आस-पास, छाती और गला। भाग्भट्ट के अनुसार उदान वायु मानव शरीर में गला, नाभि के आसपास और नाक में।

नोटः छाती में प्राण वायु और उदान वायु दोनों ही होती हैं। अंतर केवल इतना है कि प्राण वायु इस क्षेत्र में आती और जाती है जबकि उदान वायु छाती में स्थाई रूप से रहती है।

उदान वायु के कार्य क्या हैः- उदान वायु का हमारे दैनिक जीवन में विशेष महत्व है। उदान वायु के प्रमुख कार्य इस प्रकार हैं।

भाषण- आवाज और शब्द पैदा करना।

प्रयास- व्यक्ति को प्रयास करने में सक्षम बनाता है।

उत्साह- कार्यों को करने के लिए व्यक्ति को उत्साही बनाता है।

शक्ति- समाप्ति के दौरान गैसीय अपशिष्ट उत्पादों को समाप्त करके शरीर की ताकत को बनाए रखते में।

रंग- यह रंगों को बनाये रखने में सहायक होता है।

अन्य प्राचीन महर्षियों के अनुसार उदान वायु निम्न कार्यों के लिए भी जिम्मेदार होता है।

संतुष्टि, याद, दृढ निश्चय, सस्वर पाठ, विचारधारा

श्वसन में डायाफ्राम के कार्यों के लिए उदान वायु भी जिम्मेदार है। यह डायाफ्राम और इंटरकोस्टल मांसपेशियों के संकुचन और विश्राम का कारण बनता है।

उदान वायु बढ़ने के कारण होने वाले रोग- शरीर में उदान वायु की अधिकता होने के कारण शरीर के ऊपरी हिस्सों के रोग हो सकते हैं। इस प्रकार के रोगों में नाक, गले, आंख और कान आदि शामिल हैं। इसके अलावा प्राण वायु के साथ रह खांसी, हिचकी, और सांस लेने में तकलीफ जैसी बीमारियों के लिए भी जिम्मेदार होती है।

समान वायु क्या हैः समान वायु पेट से बृहदान्त्र तक सहायक नहर के चैनलों में रहती है। यह विशेष रूप से आंत और पेय में सहायक पथ के क्रमांकुचन को नियंत्रित करता है। यह भोजन को नहर में ले जाने में भी मदद करता है।

समान वायु का शरीर में स्थान- समान वायु का शरीर मे मुख्य स्थान पेट और छोटी आंत है। लेकिन चरक के अनुसार समान वायु शरीर में पसीना, दोष और तरल पदार्थों के चैनलों में रहता है। यह पेट और आंतों में भी मौजूद रहता है जहां यह पाचक पित्त के कार्यों को बनाए रखता है।

समान वायु के कार्य - समान वायु भोजन के यांत्रिक विघटन के लिए जिम्मेदार होता है जो पाचन रस या एंजाइम को आगे की प्रक्रिया के लिए सहायता प्रदान करता है। यह भोजन के उपयोगी हिस्से और अपशिष्ट हिस्सों को अलग करता है और भोजन के पौष्टिक भागों के अवशोषण और फेकल पदार्थ के उन्मूलन में सहायता करता है।

समान वायु बढ़ने के कारण होने वाले रोग- शरीर में समान वायु की अधिक मात्रा या असंतुलन होने की स्थिति में पाचन समस्याएं हो सकती है। इसकी वृद्धि पाचन को बदल सकती है। और दोषपूर्व आत्मसात कर सकती है। जिससे दस्त और खट्टी डकार जैसी समस्याएं हो सकती हैं।

व्यान वायु क्या है- चरक के अनुसार व्यान वायु पूरे शरीर में मौजूद है। शरीर में सभी हलचलें इसके कारण ही होती हैं। व्यान वायु शरीर के लचीलापन और विस्तार, संकुचन और विश्राम, पलकों के खुलने और बंद होने आदि का कारण बनता है। यह स्वायत्त केन्द्रों, मोटर केन्द्रों संवेदी तंत्रिकाओं, मोटर तंत्रिकाओं, प्रतिवर्त धमनियों आदि की कार्यात्मक इकाई है। यह मुख्य रूप से कोशिकाओं, परिसंचरण और पसीने की पारगम्यता को नियंत्रित करता है।

व्यान वायु का शरीर में स्थान- व्यान वायु पूरे शरीर में होती है मुख्य रूप से दिल में मौजूद रहती है।

व्यान वायु के सामान्य कार्य- व्यान वायु शरीर के सभी स्वैच्छिक और अनैच्छिक मूवमेंटों को नियंत्रित करता है। यह रिफ्लैक्स एक्सन और तंत्रिका आवेगों के संचरण के लिए जिम्मेदार होता है। यह हृदय की लय को नियंत्रित करता है। इसके अलावा वयान वायु पसीने के स्राव को प्रेरित करता हैं।

व्यान वायु बढ़ने के कारण होने वाले रोग- जब शरीर में व्यान वायु के सत्तर में वृद्धि या असंतुलन होता है तो कुछ शारीरिक समस्याएँ भी हो सकती है। ऐसी समस्याओं में बुखार आना और संचार संबंधी बीमारियों के होने की संभावना अधिक होती है।

अपान वायु क्या हैः अपान वायु लम्बोसैकेरल प्लेक्सस को नियंत्रित करता है। यह मुख्य रूप से उन्मूलन या उत्सर्जन में भूमिका निभाता है।

शरीर में अपान वायु का स्थानः अपान वायु शरीर के लगभग सभी हिस्सों में मौजूद रहती है। फिर भी जानकारों के अनुसार अपान वायु के शरीर में मुख्य स्थान इस प्रकार हैं।

श्रोणी मूत्राशय, गर्भाशय जांघों वृषण पेट की मांसपेशियों, पेल्विक कोलन सामान्य कार्य।

मल त्याग, पेशाब मासिक धर्म का निष्कासन भ्रूण की डिलीवरी

अपान वायु के बढ़ने से होने वाले रोग- शरीर में अपान वायु के संतुलन बिगड़ने या इसकी मात्रा अधिक होने से कुछ स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। जिनमें कब्ज, मूत्राशय, गर्भाशय, अंडकोष आदि से संबंधित बीमारियां शामिल हैं।

वात चक्र के अनुसार दवाएं लेना- यह सिद्धांत तब लागू किया जाता है जब किसी में वात विकार का सामान्यीकरण होता है और पूरे शरीर में वात लक्षण दिखाई देते हैं। वात रोगों को दूर करने के लिए दवाओं का सेवन भोजन करने के 2 से 3 घंटे बाद सेवन करना चाहिए। इसका मतलब यह हे कि भोजन पचने के बाद दवाओं का सेवन किया जाना चाहिये। यह स्थिति उन रोगियों के लिए है जो वात के कारण पेट संबंधी परेशानियों से परेशान हैं। इसके अलावा वात रोगी इससे संबंधित दवाओं को शाम या देर रात में भी ले सकते हैं। यह जब लागू होता है जब आप तंत्रिका संबंधी विकार, सामान्यीकृत शरीर दर्द और गठिया आदि से पीड़ित होते हैं।

वात और मौसम में क्या संबंध है- वात या रोग मौसम के अनुसार अपने प्रभाव दिखाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार गर्मी के मौसम में वात का संचय होता है। वर्षा ऋतु में वात की अधिकता (वात प्रकोप) होती है जबकि बढ़े हुए वात का शम (वात प्रशम) सर्दी के मौसम में होता है।

ग्रीष्म ऋतु और वात- ग्रीष्मकाल में शरीर की शक्ति कम हो जाती है जिसके कारण पाचन शक्ति भी कमजोर हो जाती है। अधिक मात्रा में पसीना आने के कारण शरीर में पानी की कमी भी आने लगती है। प्रकृति में ग्रीष्म काल के दौरान शुष्क और लघु गुणवत्ता वाले खाद्य पदार्थों की उपस्थिति होती है। जिसके कारण शरीर में वात का संचय होता है। हालांकि इस दौरान वात नहीं बढ़ता है। लेकिन गर्मी के मौसम में अधिक गर्मी होने के कारण यह दबे हुए रूप में जमा हो जाता है। इसे वात संचय कहते हैं।

बारिश का मौसम और वात- बरसात के मौसम में शरीर की ताकत और पाचन की आग कम होती है। लेकिन इस दौरान शरीर का तापमान गर्म से ठंडे के रूप में परिवर्तित होते रहता है। जो कि गर्मी के मौसम में दबे हुए वात को बढ़ाता है। इस चरण को वात की अधिकता या वात प्रकोप कहा जाता है।

शरद ऋतु और वात- सर्दी के मौसम में भूमि या जमीन गीली और वातावरण में गर्मी के कारण वात का वृष या अंत होता है। इस चरण को वात का शमन (वात प्रशम) कहा जाता है।

वात असंतुलन और इसके लक्षण- शरीर में यदि वात संतुलित अवस्था में होता है यह बेहतर स्वास्थ्य के लिए अच्छा है। लेकिन वात के असंतुलन या वात में वृद्धि या कमी कई प्रकार बीमारियों और रोग का कारण बन सकता है। वात में कमी या वृद्धि को वात असंतुलन कहा सकता है। वात में कमी या वृद्धि दोनों के अलग-अलग लक्षण होते हैं।

वात की कमी के लक्षण और स्वास्थ्य स्थितियां- जब किसी व्यक्ति को नीचे बताए गये लक्षण महसूस होते हैं। ऐसी स्थिति शरीर मे वात की कमी को दर्शाती है। इन लक्षणों में शामिल हैः

तीखा, कड़वा और कसैला स्वाद भोजन करने की इच्छा होना।

शुष्क, खुरदरें और हल्के जैसे आतंरिक गुणों वाले भोजन पंसद करना।

संवेदनाएं कम होना, असंतोष होना, तंद्रा या ऊंघना, थकावट महसूस होना आलस्य आना।

सुस्त चाल, बोलने में थकान लगना कमजोर पाचन शक्ति सामान्य रूप से घटे हुए वात के लक्षण शरीर में बढ़े हुए कफ के सापेक्ष होते हैं। इसलिये निम्न लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं। अत्यधिक लार बनना, जी मिचलाना एनोरेक्सिया बढ़ी हुई वात लक्षण और स्वास्थ्य स्थितियां।

किसी भी व्यक्ति निम्नलिखित लक्षण बढ़ी हुई वात को दर्शाते हैं। अधिक गर्म और अधिक मीठे स्वाद वाले खाद्य पदार्थ खाने की इच्छा होना, दुबर्लता होना, शरीर का वजन स्वतः ही घटना, त्वचा का काला या सांवला होना, ताकत में कमी महसूस होना, कब्ज, सूखा और कठोर मल आना, सूजन होना, उनीदापन होना, चक्कर आना, अप्रांसगिक बातें करना।

इस प्रकार आचार्य चरक, सुश्रुत आदि ऋषियों ने बहुत अनुसंधान के बाद जो सिद्धांत स्थापित किये हैं वे आज भी अकाट्य हैं आयुर्वेद को जानने समझने के लिए उस विचारधारा को अंगीकार करना आवश्यक है।

पौराणिक कथा

❊ ब्र. सुदेश जैन ❊

एक राजा ने एक अत्यंत सुन्दर, हष्ट-पुष्ट प्रशिक्षित और शुभ लक्षणों वाला मूल्यवान घोड़ा खरीदा, उसकी विशेषता की चर्चा पूरे राज्य में तो थी ही-राजमहल और रानियों में भी थी। महारानी घोड़े को देखने की जिज्ञासा लेकर अपनी परिचारिकाओं के साथ अस्तबल जा पहुँची। अचानक आई भीड़ देखकर घोड़ा जोरों से हिनहिनाया तो महारानी डर कर वहाँ से भागी। भागम-भाग में रानी का नवलखा रत्नहार टूटकर अस्तबल में घोड़े की लीद में बिखर गया। परिचारिकाओं ने इधर-उधर बिखरे रत्न इकट्ठे किये और लौट आई, पर घोड़े की लीद में एक रत्न पड़ा रह गया।

सबेरे अस्तबल की सफाई करने वाली सेविका को लीद में चमकता हुआ वह रत्न दिख गया तो उसने अपने पैर से रगड़कर उसकी लीद साफ की और रत्न उठाकर अपने पल्लू में बांध लिया।

अपने घर आकर सेविका ने वह रत्न ध्यान से देखा और उसे धो-पोंछकर नगर के ही एक जोंहरी को दिखाने-बेचने को ले गई। जौहरी देखते ही समझ गया कि यह हीरा बहुमूल्य है पर वह एक नौकरानी के पास कैसे हो सकता है? कहीं यह नकली हीरा तो नहीं।

उस जौंहरी में रत्न परखने की एक विशेष योग्यता थी। वह जिस रत्न को परखता था तो उसे अपने पैरों के अंगूठे से दबाता था। जो रत्न नकली होता वह अंगेठे के दबाब से फूट जाता था। इस रत्न को यह जानते हुये कि रत्न बहुमूल्य व शुद्ध है फिर भी उसने उसे अपने पैर के अंगूठे से दबा दिया। ऐसा करते ही रत्न से एक वेदनायुक्त छंद सुनाई दिया।

छंदः- जब चेरी पायन मली, तब न भई मोहे पीर।
जान जौंहरी पग धरे, फाटो जात शरीर ॥

अर्थः- जब सेविका ने लीद साफ करने को मुझे पैरों से रौंदा तब उस ना समझ चाकर के पैरों तले दबने पर भी मुझे कष्ट नहीं हुआ पर जानते हुये भी इस पारखी जौंहरी ने मुझे पैर से दबाया तो वेदना और अपमान से मेरा हृदय फटा जा रहा है।

शिक्षाः- जब कोई सामान्य व्यक्ति किसी को दोष लगाता है तब व्यक्ति को दोष लगाने वाले की अज्ञानता जानते हुये कि इसमें समझ नहीं है, ज्ञानी को कष्ट नहीं होता पर जब कोई विशिष्ट ज्ञानी भी कहे-सुने का आधार बनाकर किसी निर्दोष को दोषी प्रचारित कर देता है तो उसका सारा जीवन तिरष्कृत और पीड़ा दायक नरक जैसा हो जाता है। ज्ञानियों को सावधान रहना चाहिये कि कोई उनकी असावधानी से धर्म च्युत न हो जाये।

एक झूठ के लिये हजार झूठ

❊ जितेन्द्र मंगलचंद्र काळे, शिरपुर ❊

श्वेतांबरीय ट्रस्टी दिलीप शाह के नाम से प्रकाशित पत्रक में संक्षिप्त इतिहास का पहला झूठ 939 वर्ष पूर्व 1142 में प.पू.आ.भ. श्री अभयदेव सूरिजी मा.सा. के निश्रा में श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिमाजी मंदिर में प्रतिष्ठित की गई।

तथ्यः- अभयदेव सूरि की समाधी 1139 में गुजरात के कपड़बंज में हुई।

विमर्शः- 1. तो फिर 1142 में श्री अभयदेव सूरि श्री अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान की प्रतिष्ठा करने शिरपुर कैसे आ गये ?

2. अभयदेव सूरि यदि अनेक हुए तो मात्र तीन का उल्लेख पट्टावलियों में मिलता है जिनका काल 1142 में मेल नहीं खाता है।

संस्थान का वहीवट किसका रहा इसके ऐतिहासिक तथ्य

987 ई. में राष्ट्रकूटिय दिगम्बर जैन धर्म अनुयायी राजा ऐल ने पवली मंदिर का निर्माण कराया 1406 ईसवी में पवली मंदिर का जीर्णोद्धार हुआ 1680 में भट्टारक धर्मचन्द जी ने शिरपुर बस्ती मंदिर में यंत्र की स्थापना की ई. सन् 1824 में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर में भट्टारक राम कीर्ति और ब्रह्मकीर्ति के सान्निध्य में जीर्णोद्धार उपरांत मूर्ति का स्थलांतर हुआ इस जिनालय का प्रबंधन भट्टारक पद्मनंदी रत्नकीर्ति देवेन्द्रकीर्ति ने 1901 तक क्रमशः सम्हाला 1901 में अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महाराज संस्थान की स्थापना हुई जिसके अध्यक्ष शामलाल ओंकारदास कासलीवाल थे यह ट्रस्ट दिगम्बर श्वेताम्बर की संयुक्त रूपेण संस्था बनी। इसके पहले भट्टारक प्रबंधन के साथ साजिश रचकर पोलकरों का उपयोग करके अंग्रेजों की नीति को अपना कूट पत्र लेखन का प्रयोग किया और कई दस्तावेज फर्जी बनाये और श्वेताम्बर बहीवट दार सिद्ध करने की दूरगामी योजना का हिस्सा यह पत्र व्यवहार रहा। इन सब तथ्यों से सिद्ध होता है कि 1901 तक कारंजा के भट्टारक परंपरा के दिगम्बर जैन गादी के संतों ने ही प्रबंधन सम्हाला 1901 के पहले कोई भी अधिकृत ट्रस्टी नहीं रहा अतः श्वेतांबरीय ट्रस्टी या बहीवट दार होने का दावा झूठ सिद्ध होता है।

1903 में पोलकरों के विरूद्ध मेहकर कोर्ट में दिगम्बर+श्वेताम्बर पंचो ने मिलकर केस लड़ा और नई व्यवस्था के अंतर्गत पोलकरों को 261/- रू. वेतनमान देने की शुरुआत हुई। इससे पहले पोलकर निर्माल्य नैवेद्य के ऐवज में ही सेवा देते थे। 1903 में 14 अप्रैल को नौकरों की नियुक्ति हुई। 10 सितंबर 1903 में दिगम्बर+श्वेताम्बर ने संयुक्त रूप से अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर का कब्जा लिया 1 अप्रैल 1903 में पोलकरों के खिलाफ मामला दर्ज करने हेतु बैठक हुई बैठक की अध्यक्षता शामलाल ओंकारदार कासलीवाल (दिगम्बर) खामगाँव ने ही इससे यह सिद्ध होता है कि दिगंबरों ने श्वेतांबरों को शिरपुर जैन तीर्थ में पूजन की सुविधा व अनुमति दी

जिस सुविधा का दुरूपयोग तीर्थ हड़पने हेतु श्वेतांबरों ने किया।

श्वेताम्बर साधु हंसविजय का आगमन 1901 में शिरपुर तीर्थ पर हुआ 1909 में श्वेताम्बर साधु आनंदसागर आये जिन्होंने अपने साथ लाये शस्त्र, गुडों के माध्यम से तीर्थ पर कब्जा करने हेतु मूर्ति यंत्र पधराने हेतु हिंसक आक्रमण दिगंबरों पर किया।

लेप की प्रकिया 1909 में दिसंबर तक चली जिसमें भूधर कारीगर ने मूर्ति का श्वेतांबरीकरण करने हेतु कंदौरा कचौटा बनाये। दिगंबरों के द्वारा विरोध करने पर उसने स्वयं कंदौरा कचौटा हटाये परंतु श्वेताम्बरों ने दिगम्बर पर 10,0000/- रू. का डेमेज केस डाला बाद में यही मामला 4/10 के नाम से जाना गया यह मामला वाशिम, अकोला, नागपुर और लंदन तक गया जिसमें श्वेताम्बरों को प्रिवी कौंसिल से डिक्लेयर डिक्री मिली जिसके आधार पर श्वेताम्बर पक्ष ने 1933 में ऐतिहासिक महाद्वार तोड़ा दिगंबरों के विरोध को मान्यता देते हुए (केस नं. 72/3/1933-34) के ऑर्डर में कहा कि दिगम्बर किसी भी बदलाव का विरोध कर सकते है। अर्थात दिगंबरों को किसी भी तोड़फोड़ के विरोध करने का अधिकार मिला।

1944 में श्वेतांबरों ने गादी मूर्ति हटाने के लिये अर्जी दी (MJC/63/198) अर्जी नं. को न्यायालय ने पूर्णता खारिज कर दी जिससे दिगंबरों को गादी रखने भंडार दान पेटी रखने का अधिकार मिला और मैनेजमेंट का भ्रम टूटा।

वर्ष में 5 बार ध्वजारोहण करने का अधिकार मात्र दिगंबरों को ही है।

पवती मंदिर में 9 कायोत्सर्ग मुद्रा में तीर्थंकर की मूर्ति नग्न रूप में मंदिर के कलापूर्ण 3 द्वारों में तथा 3 स्तंभों में उत्कीर्ण है जिससे यह सिद्ध होता है कि पवली मंदिर पूर्ण रूप से दिगम्बर पंथ/समाज का है इस मंदिर पर दिगंबरों ने कभी कब्जा जबरन नहीं किया है। फिर भी श्वेतांबरों ने 1962 में 218/32 केस दर्ज किया जिस पर 2 जनवरी 2025 को दिगम्बर पक्ष को स्टे मिला।

1958 में लेप उतारकर जब अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मूर्ति का मूल दिगम्बर स्वरूप चरित्र प्रकट हुआ। जिस आधार पर श्वेताम्बर के निम्न कथन भ्रम पूर्ण मिथ्या सिद्ध हुए।

1. अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति रेत गोबर मिट्टी की बनी परंतु लेप उतरने के बाद मूर्ति काले पत्थर की प्रकट हुई जिससे श्वेताम्बर द्वारा फैलाया भ्रम भूटा सच सामने आया।

2. मूर्ति में लेप उतारने के बाद कंदोरा और कचौटा भी पत्थर में नहीं था इससे मूर्ति में श्वेतांबरों ने चोरी छिपे श्वेतांबरीकरण करने का प्रयास किया।

इन मुद्दों के आधार पर 288/60 मामला कोर्ट में चला फ्रॉड भी सिद्ध हुआ किन्तु 1999 के वर्शिप प्लेस बिल के कारण हमें न्यायिक प्रतिसाद नहीं मिला।

आज भी सुप्रीम कोर्ट में दिगंबरों की (SLP) पेंडिंग है जिस पर निर्णय होना शेष है अभी तक

किसी मामले में दिगम्बर हारे नहीं है श्वेताम्बर पक्ष को अपनी जीत का भ्रम नहीं फैलाना चाहिये।

सुप्रीम कोर्ट के अंतरिम आदेश की व्याख्या गलत की जा रही है।

आज भी दिगंबरों का मालिकाना हक अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर पर है।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ महाराज संस्थान समस्त अचल सम्पत्ति पर दिगम्बर पंथ का अधिकार था और रहेगा।

अंतरिक्ष पार्श्वनाथ बस्ती मंदिर में 16 वेदियाँ और 45 मूर्तियाँ जिनका विवरण 1913 में प्रकाशित यात्रा दर्पण नामक पुस्तक के पृष्ठ क्र. 32 से 38 तक में दिया गया 16 में से 15 वेदियाँ पूर्ण दिगम्बर इनमें विवाद मात्र अंतरिक्ष पार्श्वनाथ की मूर्ति का है अन्य किसी पर विवाद नहीं है।

समय सारणी (टाइम टेबल) मात्र 1 मूर्ति अंतरिक्ष पार्श्वनाथ पर लागू होता है अन्य वेदी या मूर्ति पर नहीं।

दिगम्बर लोग अन्य मूर्ति व वेदी पर किसी भी समय दर्शन पूजन करने का अधिकार रखते हैं।

यात्रा दर्पण 1913 के अनुसार दिगंबरों के शिरपुर में 40 परिवार व 188 महिला पुरुष थे। श्वेताम्बर का शिरपुर में एक भी परिवार मूल निवासी नहीं है।

खामगाँव में श्वेताम्बर समाज 200 वर्ष से पूर्व राजस्थान व गुजरात से आयी श्वेताम्बर साधु शीलविजय जी ने 1691 में अपने जैन तीर्थ माल ग्रंथ में स्वयं लिखा है। बरार से लेकर समुद्र तक एक मात्र दिगम्बर ही दिगम्बर है।

आचार्य मदनकीर्ति ने **विविध तीर्थ कल्प** जिनप्रभसूरि से 100 वर्ष पूर्व अंतरिक्ष पार्श्वनाथ को चतुर्विंशतिका ग्रंथ दिगम्बर घोषित किया।

आर्कोलॉगी सर्वे रिर्पोट 1902 में लिखा है कि अंतरिक्ष पार्श्वनाथ मंदिर दिगम्बर जैन समाज का है।

1967 के खूनी होली शिरपुर नहीं भूला है कि श्वेताम्बर कितने अत्याचारी है।

शिरपुर के अजैन समाज में एक पुरानी कहावत आज भी प्रचलित है कि नंगे का खाओगे तो नंगे हो जाओगे अर्थात् इससे यह सिद्ध होता है अंतरिक्ष पार्श्वनाथ भगवान दिगम्बर अचेलक नग्न है उनके कंदोरा कचौटा लेप में बनाया गया है। अब बुजुर्गों की इस कहावत की ओर भी दृष्टि देना होगी।

टेम्पल का अर्थ मात्र सीट ऑफ गॉड है इसके बारे में भी भ्रम फैलाकर मेनेजमेंट और टेम्पल शब्द की गलत व्याख्या की जाती है।

मंदिर की मुंडेर पर नग्न कायोत्सर्ग मुद्रा तीर्थंकर मूर्ति उत्कीर्ण है।

उपरोक्त तथ्य के आधार पर आप स्वयं समझ गये होंगे कि सत्य पथ का राही कौन है और श्वेतांबरीय पक्ष ने धन बल के आधार पर चीन जैसी प्रयोगवादी नीति अपनाकर नगर, समाज, न्यायालय को कितना भ्रमित किया है। किन्तु अब सत्य समझने में देर नहीं लगेगी।

अंगूर (Grapes)

लेटिन नाम- बाइटिस विनिफेरा

फलों का मीठापन फ्रक्टोज है। फ्रक्टोज फल शर्करा है। यह अंगूरों में अधिक मिलती है। ताजा अंगूर कच्चे हरे, काले होते हैं। सूखने पर इन्हीं को किशमिश, मुनक्का कहते हैं। अंगूर नहीं मिलने पर किशमिश, मुनक्का काम में लें, समान लाभ होगा। किशमिश में दूध के सभी तत्व मिलते हैं। अतः जहाँ दूध का सेवन नहीं किया जा सकता हो, किशमिश सेवन करके दूध का लाभ ले सकते हैं। अंगूर, किशमिश और मुनक्का में वे सभी तत्त्व होते हैं जिनकी शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए आवश्यकता होती है। बीमारी समाप्त होने के बाद अंगूर खाने से खोई हुई शक्ति शीघ्र आ जाती है। अंगूर पर रहकर मनुष्य अपना जीवन निर्वाह कर सकता है। अंगूर खाते रहने से रोग-प्रतिरोधक शक्ति बढ़ती है। मन प्रसन्न रहता है, भूख अच्छी लगती है।

सामान्यतया अंगूर में 10% से 30% शर्करा होती है। इसीलिए फलों में शक्तिदाता के रूप में अंगूर का विशेष स्थान है। अंगूर-शर्करा ग्लूकोज के स्वरूप में होने से आसानी से पच जाती है और पाचनतंत्र पर किसी भी प्रकार का दबाव नहीं पड़ता। अतः दो किलो अंगूर खाकर दिन भर तरोताजा, फुर्तीला रहा जा सकता है।

मधुमेह के रोगियों को अंगूर नहीं खाना चाहिये। छोटे बच्चों को भी 50 से 100 ग्राम अंगरू रस पिलाया जा सकता है।

अंगूर में मेसिक्र साइट्रिक तथा टार्टरिक अम्ल प्राकृतिक रूप में होते हैं अंगूर में कुछ मात्रा में पोटेशियम, सोडियम तथा कैल्शियम भी होते हैं। अंगूर का नैसर्गिक माधुर्य अम्लपित्त को दूर करने में सहायक है। अंगूर में प्राजीविक-बी तथा महत्वपूर्ण खनिज तत्व विशेष मात्रा में पाये जाते हैं। अंगूर में टार्टरिक अम्ल होता है। किन्तु वह पोटाश और टार्टरेट स्वतंत्र रूप में होता है। वह आंत एवं गुर्दों के रोगों में लाभदायक है।

शरीर में आँतें गिजाई की तरह पड़ी रहती हैं। इनमें अनावश्यक द्रव्य पड़ा रहता है। वह कालान्तर में विष बन जाता है। इससे पेट में दर्द होने लगता है। यह विष आँत के म्युक्रस-मैम्बरिन के माध्यम से समस्त शरीर में फैल जाता है। इसका बुरा प्रभाव आँखों, गुर्दों तथा यकृत (Liver) पर पड़ता है। अंगूर रस इस विष को बाहर खींच निकालता है।

अंगूर रक्त संचार को बदल डालता है। अंगूर से ब्लड ट्रान्सफ्लुजल प्रक्रिया गतिशील होती है। इससे उत्पन्न नया ताजा रक्त पुरानी पेशियों को बदलकर नयी पेशियाँ उत्पन्न करता है। ये नयी पेशियां महीनों तक कार्यरत रहती है तथा शरीर को निर्दोष बनाये रखती हैं। इससे जीवन-शक्ति बढ़ती हे। इसलिए नित्य अंगूर खाना लाभदायक है।

अंगूर रस पीने या खाने से पेट एवं आँते शुल, स्वच्छ हो जाती है। नया लाल रक्त संचारित

होने लगता है। त्वचा मुलायम और चमकीली होती है। चेहरे पर अद्‌भुत निखार आता है। आँखों की शक्ति बढ़ती है। सुनने और सूँघने की शक्ति बढ़ जाती है।

अंगूर सेवन से अन्य कोई दुष्प्रभाव नहीं होंगे, क्योंकि अंगूर नितांत निर्दोष हैं। रोगों को दूर करने के लिए अंगूर का सेवन धैर्यपूर्वक करना चाहिये। अंगूरों का प्रभाव एक-दो दिन में नहीं दिखाई देगा। अंगूरों का प्रभाव चार सप्ताह के उपरांत मालूम होने लगेगा। छठे सप्ताह के अंत तक मरीज के रूप रंग में काफी परिवर्तन दिखाई देगा। चेहरे पर लाली छा जायेगी, आँखों की आभा बढ़ जायेगी, कमजोर तथा क्षीण आवाज के स्थान पर मधुर आवाज निकलने लगेगी।

आरंभ में नित्य एक समय में 100 ग्राम अंगूर खाने चाहिए। फिर उसकी मात्रा बढ़ाकर चार-पांच दिनों में दो से तीन किलोग्राम अंगूर आसानी से खाये जा सकते हैं। बच्चे अपनी इच्छानुसार खायें।

अंगूर खाना एक दम बंद नहीं करना चाहिये, अपितु अंगूर का परिमाण (मात्रा) शनैः-शनै घटाते चले जाना चाहिये। इस प्रकार अंगूर खाने से रोग दूर होकर शरीर स्वस्थ बनेगा।

अंगूर स्वस्थ मनुष्यों के लिए पौष्टिक भोजन है और रोगी के लिए शक्तिप्रद हैं । जिन बड़े-बड़े भयंकर एवं जटिल रोगों में किसी प्रकार का कोई पदार्थ खाने-पीने को नहीं दिया जाता है उनमें अंगूर या दाख दी जाती है । भोजन के रूप में अंगूर कैंसरमय (टीवी) पायरिया, ऐपेण्डीसाइटिस, बच्चों का सूखा रोग, सन्धिवात, फिट्स, रक्त विकार, आमाशय में घाव, उपदंश (Syphilis) बार-बार मूत्र त्याग, दुर्बलता आदि में दिया जाता है। पक्का अंगूर थोड़ा सा दस्तावर लेकिन शीतल नेत्रों के लिए हितकारी, पुष्टिकारक, रस व पाक में मधुर, स्वर शोधक, रक्त शोधक, वीर्यवर्धन तथा शरीर में स्थित होता है।

पथरीधन चूर्ण

पथरी की अचूक दवा

सेवन विधि–

1) यह चूर्ण सुबह भोजन के बीच में लिया जायें।

2) पानी दिनभर अधिक मात्रा में लें, पेट खाली न हो।

3) प्रथम खुराक लेने के बाद, दूसरी खुराक एक दिन छोड़कर ही ली जाये।

नोट– यह औषधि निःशुल्क दी जाती है। ठीक होने पर औषधि निर्माण हेतु सहयोग कर सकते हैं।

प्राप्ति स्थान –**ब्र. जिनेश मलैया, संस्कार सागर**
श्री दिगम्बर जैन पंचबालयति मन्दिर, बॉम्बेहास्पिटल के पास, इन्दौर (म.प्र.)
फोनः 0731-3193601 मो.:8989505108, 6232967108

दवा देने के विभिन्न स्थानों पर केन्द्र है आप भी अपने यहां केन्द्र चाहते हैं तो सम्पर्क करें

खजुराहो की अनूठी आदिनाथ जिन प्राचीन प्रतिमा

✻ डॉ. महेन्द्र कुमार जैन (मनुज) इंदौर ✻

खजुराहो मध्यप्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित है और अत्यंत कलापूर्ण भव्य मंदिरों के कारण विश्वभर में प्रसिद्ध पर्यटन केन्द्र है। एक हजार वर्ष पूर्व यह चंदेलों की राजधानी था, किन्तु आज तो यह एक छोटा सा गाँव है जो खजुराहो सागा अपरनाम निनौरा ताल नामक झील से दक्षिण-पूर्वी कोने में बसा है। यह स्थान महोबा से 55 किमी. दक्षिण की और, हरपालपुर से 16 किमी. व पन्ना से 43 किमी. पश्चिमोत्तर दिशा में है। इलाहबाद, कानपुर, झाँसी, ग्वालियर, बीना, सागर, भोपाल, जबलपुर आदि से बस द्वारा छतरपुर होते हुए खजुराहो पहुँच सकते हैं। इन सभी स्थानों से खजुराहो तक पक्की सड़क है और नियमित बस सेवा है। रेल से यात्रा करने के लिए खजुराहो को इंदौर, उदयपुर, मंडुवाडीह, भोपाल, कुरुक्षोत्र आदि से जोड़ दिया गया है।

चंदेल काल के कई जैन शिलालेख खजुराहो में पाये गये हैं। पार्श्वनाथ मंदिर में सबसे पहला संवत् 1011 (954 ईस्वी) है, और आखिरी संवत् 1234 (1177 ईस्वी) है, यह खजुराहो में अंतिम चंदेला युग का शिलालेख भी है। कीर्तिवर्मन (शासनकाल 1060-1100) के समय में, राजधानी महोबा में स्थानांतरित हो गई, और खजुराहो का पतन हो गया।

खजुराहो में एक साहू शांतिप्रसाद जैन पुरातात्विक संग्रहालय है, जहाँ चंदेल काल की ऐतिहासिक जैन कलाकृतियाँ संरक्षित हैं। इस संग्रहालय में एक अद्‌भुत और अनूठी प्राचीन तीर्थंकर आदिनाथ की सपरिकर प्रतिमा है। इसका द्विस्तरीय परिकर है। मूलनायक प्रतिमा पदमासनास्थ है। बलुआ पाषाण से निर्मित अत्यंत कलात्मक है। परिकर मे प्रायः 2,3,5,7,12, 24,36,108,1000 तक अन्य प्रतिमाएं शिल्पित किये जाने के उदाहरण हमें मिलते हैं किन्तु खजुराहो की यह प्रतिमा अन्य प्रतिमाओं के अंकन की परम्परा से बिल्कुल हटकर है, इसीलिए यह बहुत महत्वपूर्ण व अनूठी है।

इस प्रतिमा के प्रथम स्तरीय परिकर में मूलनायक के अतिरिक्त 20 तीर्थंकर प्रतिमाएं हैं। मूलनायक प्रतिमा चतुःस्तंभीय आसन पर स्थापित है। आसन में मध्य में धर्मचक्र, उसके दोनों और सिंहासन के विरूद्धाभिमुख दो सिंह शिल्पित हैं। आसन पर आगे एक राज्यमुद्रा जैसा प्रतीक बना है, जिसमें संभवतः मोटी प्रज्ज्वलित मशाल, उसके दोनों और बैठा हुआ एक-एक शार्दूल (ब्याल), आसन पर एक और अतिरिक्त गद्दी दर्शायी गई है, जिस पर मूलनायक तीर्थंकर आसीन हैं। जिनासन के आगे मध्य में तीर्थंकर के लांछन के रूप मे एक बैठा हुआ सुदृढ़ वृषभ अंकित किया गया है। उसके दोनों और भक्त युगल हैं।

सिंहासन के दोनों पार्श्वों में मूलनायक के यक्ष-यक्षी शिल्पित हैं। प्रतिमाशास्त्र के नियमनुसार मूलनायक तीर्थंकर के दक्षिण के और यक्ष और बाम और यक्षी शिल्पित है। यक्ष का मुख गाय के समान कर्ण-विषाण युक्त है जिससे यह प्रथम तीर्थंकर का गोमुख यक्ष जान पड़ता हे। वाम पार्श्व की यक्षी निश्चित रूप से चक्रेश्वरी होगी।

यक्ष और यक्षी के ऊपर एक-एक आसन पर चंवरधारी द्विभंगासन में खड़े शिल्पित हैं। इनकी ऊँचाई मूलनायक प्रतिमा के स्कन्धों तक है। इन्हें विविध आभूषणों-पैजनियां, अधोवस्त्र, कटिसूत्र, कटिमेखला, भुजबंध, मणिबंध, यज्ञोपवीत, एकावली, मौक्तिक, उपग्रीवा आदि गलहर, कर्णोत्पल और किरीट से सुसज्जित दर्शाया गया है। इनके मूलनायक की ओर के हाथों में चंवर है और विरूद्ध हस्त में एक श्रीफल के जैसा फल धारण किये हुए हैं। दोनों चंवरधारी यक्षों के एक-एक पार्श्व में एक लघु मानवाकृति शिल्पित है, जिनकी ऊँचाई चंवरधारियों के कटि तक है। मूलनायक तीर्थंकर के दोनों घुटने, हथेलियां और स्कंध से दाहिना हाथ भग्न है। मुख, नासिका को भी क्षति पहुंचाई गई है, फिर भी मुख-मण्डल कांतियुक्त है। प्रतिमा के वक्ष पर कलात्मक श्रीवत्स चिह्न है। कैश-लटें दोनों स्कंधों पर सुंदरता से टंकित की गई हैं। घुंघराले केश, शिर के ऊपर उष्णीष, शिर के पीछे कलात्मक प्रभावल शिल्पित है। शिरोभाग के दोनों और गजलक्ष्मी का गल शिल्पित है। गज की गर्दन पर अभिषेकातुर कलशहस्त व्यक्ति आसीन हैं, तो उसी हाथी पर उस व्यक्ति के पीछे विरूद्धाभिमुख एक महिला बैठी हुई अंकित है। मूलनायक के शिर के ऊपर छत्रत्रय सुशोभित, छत्रत्रय के ऊपर मृदंगवादक है। छत्रत्रय के दोनों और माल्यधारी गगनचर और उनके ऊपर पुष्पवर्धक देव और देवी जोड़े से शिल्पित हैं।

दोनों और के परिकर की जिनमुद्राओं को देखें तो चंवरधारी के स्कंधभाग के निकट से एक पद्मासन, उसके ऊपर दो समानान्तर कार्योत्सर्ग, उनके ऊपर एक पद्मासन, फिर दो कायोत्सर्ग और इनके ऊपर समानान्तर चार तीर्थंकर, जिनमें दो कायोत्सर्ग और दो पद्मासन हैं। इस तरह एक ओर 10 प्रतिमाएं और इतनी ही दूसरी ओर तथा एक मूलनायक इस तरह 21 प्रतिमाएं प्रथम स्तरीय परिकर की हुई।

मूलनायक प्रतिमा के स्कंध-लेश, लांछन वृषभ और गोमुख यक्ष व चक्रेश्वरी यक्षी के अंकन से निश्चित होता है कि यह प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ ऋषभदेव की सपरिकर प्रतिमा है।

द्वितीय स्तरीय परिकर अन्य परकरों की परम्परा से हटकर है। इसमें दोनों और एक एक कायोत्सर्गस्थ सप्तफणयुक्त प्रतिमा है। दोनों प्रतिमाओं के पाश्वों के आराधक युगल, चंवरधारी, सप्तफण, श्रीवत्स, छत्रत्रय, गगनचर माल्यधारी इनका समन रूप से अंकन है। किन्तु आसन में वैभिन्नता है। दायें तरफ की प्रतिमा के आसन में सिंहयुगल हैं तो बायीं से आसन में यक्षी अंकित है। बायीं ओर के बाम पार्श्व में द्विवंभागासनस्थ एक के ऊपरिम भाग में दो आभूषणों से सज्जित स्त्री छबियां हैं, तो दायीं प्रतिमा के पार्श्व में कायोत्सर्ग जिन प्रतिमा है। इस द्वितीय स्तरीय परिकर में वतन में मध्य में पद्मासनस्थ पंच फणयुक्त तीर्थंकर उनके पाश्वों में एक-एक कायोत्सर्ग जिन पुनः उनके पाश्वों में दो पंक्तियों में पांच-पांच कायोत्सर्ग जिन अंकित है। वितान में दोनों कोनों अर्थात् दो पंक्तियों में कायोत्सर्ग जिन के उपरांत मण्डल में एक-एक पद्मासन प्रतिमा है। और उनके पार्श्वों में एक-एक कायोत्सर्ग जिन अंकित है। इस तरह इस द्वितीयस्तरीय परिकर में वितान सहित 32 प्रतिमायें शिल्पित दिखती हैं। यह प्रतिमांकन अनूठा है, ऐसा अंकन अन्यत्र दुर्लभ है।

इस प्रतिमांकन का समय 10वीं से 12वीं शदी का जान पड़ता है, क्योंकि खजुराहों की जैन मूर्तियों के निर्माण का समय सही है। यह विश्लेषण केवल छायचित्र है आधार पर किया गया है।

मंदिरों का अतिशय क्यों खतम हो रहा है ?

✻ डॉ. अरविंद प्रेमचंद जैन, भोपाल ✻

किसी भी साध्य प्राप्ति में माध्यम भी पवित्र होना चाहिये। पहले जैन मंदिरों के निर्माण में इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता था कि मंदिर निर्माण करने वाले मांसभोजी सप्त व्यसनी नहीं हों। निर्माण में छने हुए जल का उपयोग होता था और तो और, इतिहास में कई इस तरह की घटनाएँ हैं जिनमें जिक्र है कि कैसे मंदिर और मूर्ति निर्माण कर्ताओं को उनके निर्माण कार्य में संयम का पालन करना पड़ता है।

आज कल तो मंदिर कमेटियों ने अपने विवेक को खूंटी पर टांग रखा है। मंदिर की वेदियों का मार्बल का काम मुस्लिम/मांसाहारी कारीगरों से कराया जा रहा है। जबकि एक तो मांस भक्षण उनका प्रमुख खाद्य पदार्थ है और दूसरा वे लोग मूर्ति पूजन को शैतान और काफिरों का काम मानते हैं। हराम मानते हैं। यहां यह ज्ञातव्य हो कि इस्लाम में बुतपरस्ती (मूर्ति पूजा) अक्षम्य है। अतः इस्लाम मानने वाले कारीगरों के मन में भी मंदिर-मूर्ति में किसी तरह की श्रद्धा का भाव तक नहीं होता है। पर कई जैन मंदिरों की कमेटियों के मुखिया अपने पद के गरूर में इतने चूर रहते हैं कि मंदिर में वेदी आदि बनवाते समय समाज के अन्य लोगों की सलाह को दरकिनार कर मांसाहारी कारीगरों से काम कराने में कोई बुराई नहीं समझते हैं।

मार्बल की खरीद भी उन लोगों से खरीदते हैं, जबकि मार्बल के जैन व्यवसायी उपलब्ध होते हैं। इस तरह की स्वतः आमंत्रित की गयी अशातना एक प्रमुख कारण है कि आज कल बन रहे मंदिरों और नवीन वेदियों में न तो वह श्रद्धा भाव बन पाता है और न ही उन धर्मायतनों में अतिशय रह पाता हैं। समाज में भी यह सब अशांति की ही भावना को जन्म देता है। कई बार तो मुखिया लोगों के परिवार में भी इसके कुनिमित्त फलित होते देखे गये हैं।

समय-समय पर कई स्थानों पर मंदिर कमेटी के मुखियाओं के आचरण पर भी उंगलियाँ उठती रहती हैं कि न उनका नशे-पत्ते का त्याग होता है और न रात्रि भोजन का। कई तो नित्य मंदिर भी नहीं जाते हैं। मंदिर के निमित्त आयी राशि को भी लोग व्यक्तिगत कार्यों में लगा देते हैं।

अगर कहीं आपके पास कोई धर्मायतनों का निर्माण हो रहा हो तो उपरोक्त संबंध में अपनी बात अवश्य उठायें कि मांसाहार करने वाले कारीगरों से काम नहीं ही कराया जाये।

अधिकांशतया मंदिर निर्माण के समय ही बहुत पदाधिकारियों के भवन निर्माण भी ही होते हैं। क्या यह आश्चर्य की बात नहीं है ? इसके अलावा आजकल नवधनाढ्य जिनकी आजीविका का स्त्रोत शराब मांस बिक्री के साथ न्यायोपार्जित धन का न होना जिसके बारे में जन सामान्य को जानकारी भी होती है उनके द्वारा बढ़ चढ़कर उच्चतम बोलियां लेकर समाज के मुखिया बनकर दानवीर बन जाते हैं और उनकी अनुमोदना भी मुनियों के द्वारा की जाती है उनका तर्क हैं कि उनका धन का दुरुपयोग होने की अपेक्षा मंदिर निर्माण के साथ दान में लग रहा है यह अच्छी बात हैं उनके तर्क से असहमति नहीं हैं पर दानदाताओं के धन का मंदिर की शुचिता में प्रभाव अवश्य पड़ता होगा। जान बूझकर और आज्ञनता में अंतर जरूर हैं।

इसका ज्वलंत उदाहरण कुण्डलपुर के बड़े बाबा की विशालकाय मूर्ति के स्थान्तरण में बाधा आ रही थी उस समय आचार्य श्री ने क्रेन चालक जो पंजाबी था उससे इशारे से पूछा कि तुम शराब मांस पीते खाते हो तो उसने इशारे से कहाँ हाँ। उसी समय आचार्य श्री ने उससे त्याग करने को कहा और उसने स्वीकार किया और बड़े बाबा की मूर्ति यथास्थान पहुँच गयी।

जैन दर्शन के अनुसार धन आदि पाप पुण्य से मिलता है और उससे कोई इंकार नहीं कर सकता है पर स्त्रोत का प्रभाव अवश्य पड़ता हैं जिस कारण वर्तमान में जो मंदिरों के निर्माण में अन्याय का धन लगता है वहाँ के मंदिरों में उतने प्रतिशत अतिशय की कमी होना देखा जाता हैं वैसे व्यापार आदि में धन बिना पाप कषाय के बिना आना असंभव हैं।

इसका यह आशय नहीं है कि निर्माण कार्य बंद हो यो उनकी सहभागिता न हो यह संवेदनशील मुद्दा हैं चिंतनीय और विचारणीय है इर सिक्के को दो पहलु होते हैं मेरा अपना विचार हैं प्रत्यक्ष्य और अप्रत्यक्ष्य में क्षमा प्रार्थी रहूँगा।

कविता

सिंदूर ऑपरेशन

✻ संस्कार फीचर्स ✻

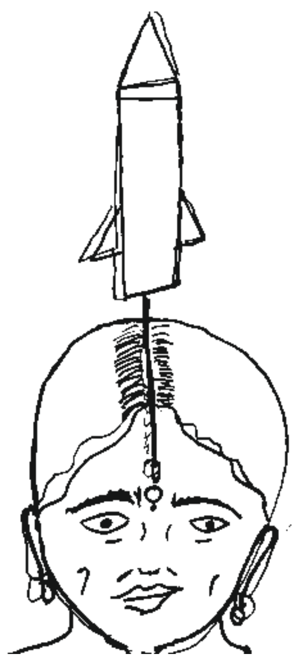

बहिनों का पोछा था सिंदूर,
आतंकी बच नहीं पाये
भले छिपे थे दूर, ऑपरेश सिंदूर,
पाक का विनाश हुआ भरपूर उठा धुँआ, उठी धूल
पाक की टूटी कमर, याद रखेगा पूरी उमर
एक था मोदी जिसने कहर बढ़ाया
सौ आतंकियो को जन्नत पहुँचाया
उड़ाये सेना के कैंप आतंकी टेंट पाक के ड्रोन
मच्छर मक्खी से मार गिराये भारतीय सेना ने
एयर बैस बचाये बाल नहीं बांका कर पाया पाक
क्योंकि उसके इरादे थे नापाक सेना को सलाम
उसने किया बड़ा काम भारत माँ का बचाया सिंदूर
सबक सिखाया उनको जिनने उजाड़ा था
पहलगाम में बहनों का सिंदूर
पाक पर कहर बन गया **ऑपरेशन सिंदूर**

चलो देखें यात्रा

नवोदित तीर्थ-चैतन्यधाम

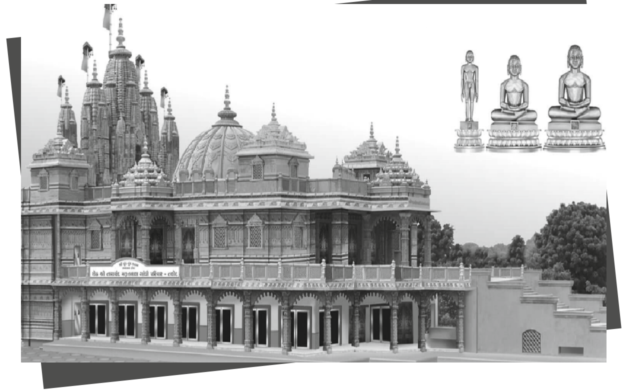

महत्व एवं दर्शनः-विशाल परिसर में निर्मित एक मंदिर है। जो 2008 में निर्मित हुआ। यहाँ पर महावीर स्वामी की, पार्श्वनाथ स्वामी की, सीमंधर स्वामी की, एक ऊँचे प्लेटफार्म पर विराजित है। ये प्रतिमाएँ लगभग 71 इंच, 62 इंच, 65 इंच है। उसके अलावा बहुत सी अपर धातुओं की मुर्तियाँ है। यहाँ पर नीचे वाले हिस्से एक बहुत बड़ा प्रवचन हॉल सुसज्जित है। ऊपर वाले हिस्से में वर्तमान चौबीसी के दर्शन होते है।

मार्गदर्शनः यह क्षेत्र 6 किमी. पहले चित्तौडा सर्किल से है। यहाँ से क्षेत्र का गेट चैतन्य धार्म के पहले वैष्णव मंदिर के यहाँ से आता है।

नाम एवं पताः श्री दिगम्बर जैन मंदिर (ट्रस्ट) चैतन्यधाम धणप, जि. गांधीनगर 382355, फोनः 079-23272222, प्रबंधकः श्री अशोक जैन मो. 9924619467, संपर्कः श्री राजूभाई वी. शाह, अहमदाबाद -09825030606 श्री अमृतलाल शाह मेहता- 9428246773।

सुविधायें - 2 गेस्ट हाउस, 3 हॉल एवं सुविधायुक्त लगभग 100 कमरे है।

विशेषः यहाँ से अक्षरधाम 25 किमी. पर है। कफेटोरिया, पार्क, म्युजिअम भी है। उत्कृष्ट शिल्पकला की रचना गांधीनगर स्थित नारायण ट्रस्ट द्वारा संचालित है।

आगम दर्शन

आचार्य जयसेन द्वारा निराकृत केवली मुक्ती

आचार्य जयसेन ने प्रवचनसार की 19वीं गाथा की व्याख्या करते हुये केवलीभुक्ती प्रकरण को विभिन्न दृष्टीकोण से शंका समाधान के माध्यम से विषय को स्पष्ट किया है। किसी ने शंका की थी कि केवली भुक्ती होती है क्योंकि उनका औदारिक शरीर होता है और असातावेदनीय का उदय होता है। इसलिये वे हमारे जैसे ही भोजन करते है। उपरोक्त आशंका का समाधान करते हुये आचार्य श्री ने कहा 1. भगवान के शरीर औदारिक नहीं होता है किन्तु उनका शरीर परम औदारिक शुद्ध स्फटिक मणी के समान होता है। दोषों से रहित सप्तधातुओं से रहित होता है अतः औदारिक शरीर केवली के भोजन का कारण नहीं बनता है।

2. असातावेदनीय का उदय का सद्‌भाव होने पर भी केवली भुक्ती का कारण नहीं बनता है क्योंकि केवली भगवान के मोह का अभाव होता है जिस प्रकार धान्यादि बीज जलमिट्टी खाद आदि सहकारी कारण के बिना अंकुरित नहीं होता है वैसे ही असातावेदनीय कर्म मोहनीय कर्म के सहकारी के बिना क्षुधादी कार्य को उत्पन्न नहीं करता है। क्योंकि यह गाथा अंश कहता है। **मोहस्य बलेण घादवे जीवं** अर्थात मोह के बल से ही जीव का घात होता है। यदि कोई कहता है कि मोह के अभाव में भी क्षुधा आदि परिषह उत्पन्न होते हैं कि फिर केवलज्ञानी के रोग आदि परिषह भी उत्पन्न होंगे। फिर भी क्षुधा आदि उत्पन्न नहीं होते हैं क्योंकि **भुक्तीयुपसर्ग अभावात्** इस कथन से अन्य भी दूषण आते हैं। यदि क्षुधा की बाधा है तो क्षुधा क्षीण शक्ति होने से अनंतवीर्य नामक गुण नहीं होगा।

(क) क्षुधा से दुखी होने के कारण अनंतसुख नहीं होगा।

(ख) जिव्हाइंद्रिय के द्वारा स्वाद लेने से मतिज्ञान उत्पन्न होगा केवलज्ञान संभव नहीं और इसके अन्यकारण भी हैं।

3. असातावेदनीय के उदय की अपेक्षा से सातावेदनीय का उदय अनंतगुणा होता है इससे जैसे शक्कर की बहुत बड़े ढेर में एक नीम का बुंद गिर जाये तो वह कार्यकारी नहीं होता है वह शक्कर को कड़वा नहीं करता है। इसी प्रकार असातावेदनीय के उदय को समझना चाहिए। अतः मोह के अनुदय में और सातावेदनीय की बहुलता होने से केवली की भूख की उत्पत्ति ही नहीं होती है और वे हम जैसा आहार नहीं करते हैं। इसी प्रकार अन्य कई बाधक कारण हैं जैसे प्रमत्त संयत आदि साधुओं के वेद का उदय होने पर भी मोह का उदय मंद हो जाने के कारण अखंड ब्रह्मचारी के स्त्री परीषह की बाधा नहीं होती है। जिस प्रकार नवग्रीवक आदि के अहमिद्र देवों के वेद का उदय होने पर भी मोह के उदय की मंदता होने से स्त्री विषय की बाधा नहीं होती है। ठीक उसी प्रकार केवली भगवान के असातावेदनीय का उदय होने पर भी समस्त मोह का अभाव हो जाने के कारण भूख की बाधा नहीं होती है। अतः केवली भगवान के हम जैसे भोजन करने का कोई भी कारण नहीं बनता है।

कच्चिदाह-केवलिनां भुक्तिरास्ति, औदारिकशरीर सद्धाभावात् । असद्धेदा कर्मोदयसद्धावाद्धा । अस्मदादिवत् । परिहारमाह-तद्धगवतः शरीर मौदारिकं न भवति किंतु परमौदारिकम् - शुद्धस्फटिकसकाशं तेजोमुर्तिमयं वपुः । जायते क्षीणदोषस्य सप्तधातु विवर्जितम् ॥ यच्चोक्तमसद्धेद्योदयसद्धवातत्र परिहारमाह- यथा बीहयादिवीजं जलसहकारिकारण सहित मङ्कुःरादिकार्य जनयाति तथैवासद्धेधकर्म मोहनीयसहकारिकारण सहितं क्षुधादिकार्यमुत्पादयति । कस्मात् मोहस्य बलेण धाददे जीवं इति वाचनात् । यदि पुनर्मोहाभावेऽपि क्षुधादिपरिषहं जनयति तर्हि वधरोगादिपरिषहमपि जनयतु न च तथा । तद्‌पि कस्मात् । भुक्त्यपसर्गाभावात् इति वाचनात् । अन्यदपि दूषणमस्ति । यदि क्षुधावाधास्ति तर्हि क्षुधाक्षीणशक्तैरनन्तवीर्य नास्ति । तथैव क्षुधादुःखितस्यानन्तसुखमपि नास्ति । जिह्वेन्द्रियपरिच्छिति रूपमतिज्ञानपरिणतस्य केवलज्ञानमपि न संभवति । अथवा अन्यदपि कारणनास्ति । असद्धेधोद्‌यपिदाया सद्धेद्योदयोऽनन्तगुणोस्ति । ततः कारणात् शर्क रागादिमध्ये निम्धकणिकावदसद्धेद्योदयो विधमनोऽपि न द्यायते । नर्थेवन्यदपि बाधकमास्ति-यथा प्रमत्तसंयतादि तपोधनानां वेदोदये विद्यमानेऽपि मन्दमोहोदयात्वदखण्ड ब्रम्हचारिणां स्त्रीपरिषहबधा नास्ति, यथैव च नवग्रैवेयकासहमिन्द्रदेवानां वेदोदये विद्यनावेपि मन्दमोहोदयेन स्त्रीविषयबाधा नास्ति, तथा भयवत्यसद्धेधोदवे विधमानेऽपि निरवशेषमोहभावात् क्षुधाबाधा नास्ति।

कविता

दानवता के दाग मिटा दों

✻ संस्कार फीचर्स ✻

पर्यावरण की रक्षा है अहिंसा में
प्रदूषण का विस्तार है हिंसा में
लोभ लालच बढ़ाता है प्रदूषण
सुविधा त्याग बनता है जीवन में भूषण
अधिक कमाने की लालसा
व्यसन भोगों की विलासता
पतन की और ले जाती है मानव
वतन का पतन रोको पर्यावरण रक्षा करना है
मानवता का आधार पर्यावरण है
दानवता का आधार प्रदूषण है
दिशा निश्चित करो आगे बढ़ो विनाश नहीं
विकास बात जरूरी है
पर्यावरण की रक्षा भी जरूरी है
उठो कुछ करो पर्यावरण रक्षा अभियान में
दानवता के दाग मिटा दो अब इंसान में।

समस्या पूर्ति प्रतियोगिता
मई 2025

मिला गुरु सम्बोध

प्रथम-

गुरु का आशीष बड़ा होता है
पंगू भी पर्वत पर खड़ा होता है
मुश्किल से होता है सद्गुरु शोध
पुण्यात्मा को मिला गुरु सम्बोध

नीरज जैन, पुणे (महाराष्ट्र)

द्वितीय-

महान गुरु का संदेश महान
विद्यासागर गुरु महान
गुरु से मिलता आगम बोध
पल पल मिला गुरु सम्बोध

दिशि जैन, खुरई (म.प्र.)

तृतीय-

भाग्यवान नर सद्गुरु पावे
गुरु चरण लख मन हर पावे
मिटे मान मन सकल कुबोध
सुशिष्य मिले गुरु संबोध

पर्यूष जैन, सागर (म.प्र.)

वर्ग पहेली क्र. 306
अप्रैल 2025 के विजेता

प्रथम : अंशिका जैन, बासौदा (म.प्र.)
द्वितीय : श्रेष्ठ जैन इंदौर (म.प्र.)
तृतीय : संगीता जैन, दमोह (म.प्र.)

माथा पच्ची

निम्न अक्रमबद्ध वर्णों कोक्रमबद्ध बनाकर रिक्त स्थान में एक सार्थक शब्द बनाइए।

1. आ द् अ द् अ द्व ण् आ अ ल् अ र् ष् द
2. ई ओ अ स् आ क् अ र् अ प् र् व् न् त् त् र् सं
3. क् इ ओ त् इ आ य् ग् त् इ आ इ न् द् ए द् श प्र
4. स् अ र् अ आ आ द् आ स् अ व् इ र् अ उ र् प् अ व् द् यू ग वि
5. अ स् क् आ र् अ आ स् ग् अ र् सं

परिणाम :
अगस्त 2022: (1) संस्कार सागर (2) जैन संदेश (3) कुन्दकुन्द वाणी (4) अर्हत वचन (5) शोधादर्श

पुराण प्रेरणा

मन की व्यथा बड़ी

सति बन्धुविरोधे हि न सुखं न धनं नृणाम ।।

मनुष्य लोक में सुख वही है जो चित्त को संतुष्ट करने वाला हो परंतु बन्धुजनों में विरोध होने पर मनुष्यों को न सुख प्राप्त होता हे औन न धन ही उनके पास स्थिर रहता है।

अपवादो हि सहयेत रक्तेन न मनोव्यथा ।।

रागी मनुष्य अपवाद को तो सह सकता है परंतु मन की व्यथा को नहीं सह सकता।

तमः पतनकाले हि प्रभवत्यपि भास्वतः ।

सूर्य के पतन का जब समय आता है तब अंधकार की प्रबलता हो ही जाती है।

पापोपशमनोपायाः सन्त्येव सति जीविने ।।

यदि जीवन रहा तो पाप को शांत करने के बहुत से उपाय हो जावेंगे।

अत्यभ्यर्ण विपात्तीनां मन्त्रिणो हि निवर्तकाः ।।

यद्यपि राजा का वचन अन्याय रूप था तथा मंत्री ने उसे मान लिया सो ठीक ही है क्योंकि मंत्री अत्यंत निकटवर्ती आपत्तियों को ही दूर करते हैं।

षटकर्णो भिद्यते मंत्रो रक्षणीयः स यत्नतः ।

छह कानों में पहुँचा हुआ मंत्र फूट जाता है उसका रहस्य खुल जाता है इसलिये मंत्र की यत्नपूर्वक रक्षा करनी चाहिये।

तप्तं तप्तेन योज्यते ।

संतप्त वस्तु दूसरी संतप्त वस्तु के साथ सुख में मिलाई जा सकती है।

केरियर

धन कुबेर बनाता चार्टड अकाउटेन्ट

सनदी लेखाकार यह एक उपाधि है जिसे ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के देशों और आयरलैंड गणराज्य की व्यवसायिक लेखाशास्त्र संस्थाओं या संघ के सदस्य इस्तेमाल करते हैं।

पात्रता: 12वीं पास

अवधि: 3 स्तरों में 4.5 से 5 साल तक

कोर्स: चार्टड अकाउंटेन्ट कोर्स

फीस: 2 लाख से 2.5 लाख

नौकरी: कंपनियों के वित्तीय विवरणों का ऑडिट करना।

क्लाइंट को वित्तीय सलाह देना

टैक्स रिटर्न दाखिल करना

व्यावसायिक प्रथाओं का ऑडिट करना

कंपनियों के फाइनेंशियल मैनेजमेंट और स्ट्रक्चर को सुनिश्चित करना।

वेतन: 8 लाख से लेकर 60 लाख तक

इंस्टिट्यूट: इंडियन इन्सिट्टयुट ऑफ फाइनेंस एण्ड अकाउंट्स- पूणे

आई.सी.ए.आई- दिल्ली

सी.एम.एस. फॉर सी.ए- हैदराबाद

■ 1 मार्च

- आई.एस.आई से जुड़ी आतंकी अबूनकर भरूच की जमानत मुम्बई हाईकोर्ट ने खारिज कर दी।

- जानगरः अनंत अम्बानी ने पद यात्रा के दौरान 250 मुर्गियाँ दूनी कीमत देकर करने से बचाई।

- मुम्बईः हाईकोर्ट ने कहा जरूरी सामान की दुकानें 24 घंटे खुली रह सकती हैं।

■ 2 मार्च

- रिजर्व बैंक ऑफ इण्डियन की डिप्टी गवर्नर पूनम गुप्ता बनी।

- मंडला (म.प्र.) 14-14 लाख के ईनानी महिला नक्सली ढेर हुई।

- बनासकांठाः जिले के हीसा के अवैध पटाखा फैक्ट्री विस्फोट होने 21 लोगों की मौत हुई।

■ 3 मार्च

- वक्फ बिल राज्य सभा में लोक सभा के बाद पास हुआ।

- सुप्रीमकोर्ट के न्यायाधीश अपनी सम्पत्ति सार्वजनिक करेंगे। न्यायाधीशों में सहमति हाईकोर्ट ने पश्चिम बंगाल के 25753 शिक्षकों की नियुक्ति को अवैध घोषित।

■ 4 मार्च

- फिल्म अभिनेता मनोज कुमार का निधन हुआ के 87 वर्ष के थे।

- वक्फ संशोधन विधेयक राज्यसभा में पास हुआ।

- दक्षिण कोरिया के राष्ट्रपति यून सुक योल मार्शल लॉ लगाने से पद से हटाये गये।

■ 5 मार्च

- श्रीलंका अपनी जमीन को भारत के खिलाफ इस्तेमाल नहीं होने देगा राष्ट्रपति अनुरा कुमारा दिसनायके ने आश्वासन दिया।

- वक्फ विधेयक के खिलाफ आप सुप्रीम कोर्ट पहुँची। भारत-श्रीलंका के 7 समझौता हुए।

- ओटावाः कनाड़ा एक भारतीय नागरिक की चाकू घोपकर हत्या हुई।

■ 6 मार्च

- दमोहः फर्जी हृदय रोग विशेषज्ञ के इलाज से 7 लोगों की मौत हुई एन.एच.आर सी ने जाँच शुरु की।

-ट्रम्प के खिलाफ लाखों अमेरिकी सड़क पर आये

■ 7 मार्च

- न्यूगार्कः तहव्बुर राणा की प्रत्याशी रोक की अर्जी खारिज हुई।

- मुम्बई से वाराणसी जा रहे विमान में महिला की मौत हुई।

- सोना प्रति 10 ग्राम 1929 रूपये सस्ता हुआ।

■ **8 मार्च**

- वक्फ कानून की अधिसूचना जारी हुई।

- आंध्र डिप्टी सी.एम पवन कल्याण के काफिले के जाम में फँसे जेईई की परीक्षार्थी परीक्षा नहीं दे पाये।

- हैदराबाद बम कांड के 5 आरोपियों की मौत की सजा 98 न्यायालय ने बरकरार रखी।

■ **9 मार्च**

- लखनऊः सीएम योगी ने कहा उत्तरप्रदेश जैन तीर्थंकरों की पवित्र भूमि हैं।

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा जैन धर्म में अनेकांत और अहिंसा का सिद्धांत आतंकवाद और युद्ध का समाधान देता है।

- फिल्म निर्माता सलीम अख्तर का निधन हुआ।

■ **10 मार्च**

- मुम्बई 11/26 के हमले में तहुब्बर राणा को अमेरिका से भारत लाया गया एन.आई.ए की 18 कस्टडी में रखा गया।

- उ.प्र. बिहार में बिजली गिरने से 100 लोगों की मृत्यु हुई।

- राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने स्लोवाकिया के बच्चों के साथ रामायण पर आधारित कठपुतली कार्यक्रम देखा।

■ **11 मार्च**

- रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन ने ग्लाइड बम गौरव का सफल परीक्षण किया।

- न्यूयार्कः टूरिस्ट हैलीकाप्टर ईधन खत्म होने से नदी में गिरा सी.ई.ओ का पूरा परिवार खत्म हुआ।

- तुलसी गबार्ड ने कहा ई.वी.एम. हैक करके नतीजे बदले जा सकते हैं भारत चुनाव आयोग बोला हमारी ई.वी.एम दूसरे देशों से अलग है।

■ **12 मार्च**

- सोनीपतः ओ.पी. जिंदल यूनिवर्सिटी में गर्लफ्रेंड को ट्रॉली बेग में हॉस्टल लाया गया।

- उपराष्ट्रपति जगदी धनगड़ ने सम्राट विक्रमादित्य पर आधारित महानाट्य का उद्‌घाटन किया।

- पश्चिम बंगाल वक्फ बिल विरोधी आंदोलन दंगे में बदला 3 की मौत हुई।

■ **13 मार्च**

- अनका पल्ली (आंध्र) एक पटाखा फैक्ट्री में आग लगी 8 लोगों की मौत हुई।

- गुना (म.प्र.) हनुमान जयंती शोभायात्रा के दौरान पथराव हुआ 9 लोग गिरफ्तार हुये।

- बांग्लादेश की एक अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया।

■ **14 मार्च**

- पी.एन.बी के 13000 करोड़ घोटाले में मेहुल चौकसी बेलसियम में गिरफ्तार हुआ।

- युद्ध में मारे गये फिलिस्तानी बच्चों की याद में 17000 शूज रखकर श्रद्धांजली दी गई।

- ऋतुजा वर्हाडेने पुणे ने की एन.डी.ए की परीक्षा में देश प्रथम स्थान प्राप्त किया।

■ **15 मार्च**

- प्रताप सिंह खचरियावास पूर्व मंत्री राजस्थान के घर पर ई.डी का छापा पड़ा।

- नेशनल हेराल्ड मामले सोनिया गाँधी एवं राहुल गाँधी पर ई.डी. ने चार्ज शीट दाखिल की।

- कल्याणपुरा जिला भिंड (म.प्र.) में महिला सुशीला देवी की हत्या कर आरोपी गहने लेकर भागे।

■ **16 मार्च**

- न्यायमूर्ति भूषण गवई सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश नियुक्ति की सिफारिश हुई।

- औषधि नियामक संस्था सी.डी.एस.सी.ओ ने 35 पेन किलर और शुगर की दवा पर रोक लगाई।

- मुज्जफरपुर (बिहार) बरियारपुर थाना क्षेत्र में आग में जलकर 4 बच्चों की मौत हुई।

■ **17 मार्च**

- भारत के विदेश मंत्रालय ने कहा पी.ओ.के. भारत का अंग है पाकिस्तान खाली करे।

- सुप्रीम कोर्ट ने वक्फ कानून पर स्नागन नहीं दिया।

- चित्रपति बी.शांताराम पुरुस्कार महेश मांजेकर और मुक्ता वर्वे के देना तय हुआ।

■ **18 मार्च**

- भारत में 16 वारदातों में अंजाम देने वाला आतंकी हैप्पी पासिया अमेरिका में पकड़ा गया।

- भगवद् गीता एवं भरत मुनि का नाट्य शास्त्र यूनिस्की की सूची में शामिल हुआ।

- इलाहबाद हाईकोर्ट ने टूटते रिस्तों के बाद अपराध का रंग देना चिंता का विषय बताया।

■ **19 मार्च**

- हिन्दू नेता भावेश चंद्रराय की हत्या मामले में भारत ने बांग्लादेश सरकार को लताड़ा।

- जम्मू-कश्मीर, पाक में 5.9 तीव्रता से भूकंप आया।

- मुंबई के विर्ले पार्ले पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर तोड़ने के विरोध प्रदर्शन में हजारों की रैली निकाली।

■ **20 मार्च**

- अमेरिका के उपराष्ट्रपति जे.डी. वेंस और उनकी पत्नी उषा का भारत आना तय हुआ।

- सांसद निशिकांत दुबे ने सुप्रीम कोर्ट पर प्रश्न दागे । उनके बयान और टिप्पणी पर कॉंग्रेस बिफरी।

- अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के विरोध में 50 शहरों में जोरदार शांतिपूर्ण प्रदर्शन हुआ।

■ **21 मार्च**

- ईसाई गुरु फ्रांसिस पोप का निधन हुआ । वे 88 वर्ष के थे।

- झारखंड बोकारों में मुठभेड़ में 8 नक्सली ढ़ेर हुए।

- इलाहबाद हाईकोर्ट ने अपने फैसले में कहा महज लिंक करना अपराध नहीं।

■ **22 मार्च**

- यू.पी.एस की परीक्षा परिणाम घोषित हुए शक्ति दुबे ने टॉप किया।

- पहलगामः आतंकी हमले में 26 पर्यटकों की मौत हुए तथा 13 घायल हुए। नरेन्द्र मोदी (प्रधानमंत्री) सउदी अरब को दौरा छोड़ भारत आये।

- अमरौली (गुराजत): प्रशिक्षण विमान क्रैश हुआ एक पायलट की मौत हुई।

■ **23 मार्च**

- भारत ने पाकिस्तान से सिंधू जल संधि को खत्म कर स्थगित किया बीजा भी समाप्त

किया गया पाकिस्तानी नागरिकों को देश छोड़ने को कहा।

- उरी में दो आतंकी मार गिराये । कुलवाम में मुठभेड़ हुई।

- इस्तांबुल (तुर्की) में 6.2 की तीव्रता से भूकंप आया।

■ 24 मार्च

- मधुबली बिहारः प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने कहा आतंकियो को मिट्टी में मिला देंगे।

- भारतीय नौसेना ने गाइडेड मिसाइल का टेस्ट किया 70 किमी. दूर सटीक लक्ष्य भेदा।

- खुफिया एजेंसियों के हाथ सबूत लगे आतंकियों और उनके हैंडलरों के बीच दो गुप्त संचार पकड़े।

■ 25 मार्च

- पाक के रक्षामंत्री ख्वाजा आसिफ ने स्वीकार की हम दशकों से आतंक पोष्ज्ञण का गंदा काम कर रहे है।

- ब्रिटिश नीदरलेंड फ्रांस ने पहलगाम हमले की निंदा की और भारत के साथ है वचन दिया।

- आर.बी.आई ने इंपीरियल अर्बन बैंक का लाइसेंस रद्द किया।

■ 26 मार्च

- अब 294 पाकिस्तानी नागरिक पाकिस्तान लौटे।

- ईरान के बंदरगाह पर भीषण धमाका हुआ 4 की मौत 500 घायल हुए।

- इसरो ने सेमीक्रायोजेनिक इंजन का सफल परीक्षण किया।

■ 27 मार्च

- ईरान के राष्ट्रपति मसूद पे जैशिकियन ने कुलगाम हमले की निंदा की।

- एन.सी.ई. आर. टी से मुगल बाहर हुए 7वीं के पाठ्यक्रम में बदलाव होगा।

- मंदसौरः वेन कुए में गिरी 11 लोगों की मौत हुई।

■ 28 मार्च

- पाक सेना 50 आतंकियों को एल.ओ.सी से हटाकर बंकरों ले गई यह भारत खौफ नजर आये।

- सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि माता पिता बच्चों में मोबाईल की लत लगा रहे है।

- खैबर परब्तूनख्बा (पाक) में शांति समिति के दफ्तर में बम धमाका हुआ 7 मरे 9 घायल हुए।

■ 29 मार्च

- पी.एम. आवास पर तीनों सेना प्रमुखों की बैठक हुई प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सेना को खुली छूट दी।

- महाराष्ट्र सरकार ने भौसले घराने की तलवार लंदन में 47.15 लाख में खरीदी।

- कनाडा में खालिस्तान समर्थ जगमीत की पार्टी 343 में से मात्र 7 सीटें जीती लिवरल पार्टी को 168 सीटें मिली।

■ 30 मार्च

- अक्षय तृतीया पर 12 टन सोना 400 टन चांदी बिकी।

- केन्द्र सरकार ने देश में जातिगत जनगणना का निर्णय केबिनेट मीटिंग में लिया।

- ढाकाः सनातनी जागरण जोटे के प्रवक्ता चिन्मय कृष्णदास को हाईकोर्ट ने जमानत दी।

इसे भी जानिये

राजस्थान के मुख्यमंत्री

1	हीरालाल शास्त्री	1949-1951
2	सी.एस. वेंकटाचारी	1951
3	जयनारायण व्यास	1951-1954
4	टिकाराम पालीवाल	3मार्च 1952-31 अक्टू
5	मोहनलाल सुखाडिया	1954-1957-1962-1967
6	बरकतुल्लाह खान	1971-1973
7	हरिदेव जोशी	1973-1977, 1985-1988
		1989-1990
8	भैरोसिंग शेखावत	1977-1980-1992
9	जगन्नाथ पहाडिया	1980-1981
10	शिचरण माधुर	1981-1985, 1988-1989
11	हीरालाल देवपुरा	1985
12	अशोक गेहलोत	1998-2003, 2008-2013
13	वसुंधरा राजे	2003-2008, 2013-2018
14	भजनलाल शर्मा	15 दिस. 2023 अभी जारी

कविता

अनंत की यात्रा

❊ संस्कार फीचर्स ❊

अनंत की यात्रा पर निकल पड़े
अनंत अनंत सत्ता का धाम
अनंत गुणमय अनंत अभिराम आत्म चैतन्य चिन्तन मय
शिव सुखधाम पूर्ण निष्काम सुख साधन
सहज योग से मिलता है
आत्मा को अंतर में पूर्ण विश्राम यही है
अंतर का मुक्तिधाम
बस यही हैं यात्रा का विश्राम

दिशा बोध

निष्कपट व्यवहार

1. जो यह चाहता है कि वह घृणित न समझा जावे, तो उसे स्वयं कपटपूर्ण विचारों से अपने आपको बचाना चाहिए।
2. अपने मन में यह विचारना पाप है कि मैं अपने पड़ौसी की सम्पत्ति को कपट द्वारा ले लूँगा।
3. वह वैभव, जो कपट द्वारा प्राप्त किया जाता है, भले ही बढ़ती की और दिखाई देता हो, परन्तु अन्त में नष्ट होने को ही है।
4. अपहरण की प्यास अपने उन्नतिकाल में भी अनन्त दुःखों की ओर ले जाती है।
5. जो मनुष्य दूसरों की सम्पत्ति को लाभकारी दृष्टि से देखता है और उसको हड़पने की प्रतीक्षा में बैठा रहता है, उसके हृदय में दया को कोई स्थान नहीं और प्रेम तो उससे कोसों दूर है।
6. लूट के पश्चात् जिस मनुष्य को लोभ की प्यास बनी रहती है, वह वस्तुओं का उचित मूल्य नहीं समझ सकता और न वह सत्यमार्ग का पथिक ही बन सकता है।
7. वह मनुष्य धन्य है, जिसने सांसारिक वस्तुओं की असारता को समझकर अपने हृदय को दृढ़ बना लिया है। वह फिर अपने पड़ौसी को धोखा देने की गलती नहीं करेगा।
8. जिस प्रकार तत्वज्ञानी साधु-सन्तों के हृदय में सत्यता निवास करती है, उसी प्रकार चोर, ठगों के मन में कपट का वास नियम से होता है।
9. उस मनुष्य पर तरस आता है, जो छल तथा कपट के अतिरिक्त और किसी बात पर विचार ही नहीं करता, वह सत्यमार्ग को छोड़ देगा और नाश को प्राप्त होगा।
10. जो दूसरों को छलता है, वह स्वयं अपने शरीर का भी स्वामी नहीं रहने पाता, जो सच्चे हैं, उनको स्वर्ग का नित्य उत्तराधिकार रहता है।

करूणामयी शिक्षा के जनकः आत्मजयी तीर्थंकर

✻ अजित जैन, (जलज) टीकमगढ़ ✻

पूरी धरती को ही अपना कुटुम्ब मानने वाली भारतीय संस्कृति को असंख्य श्रमण वैदिक ऋषि मुनियों ने अपने ज्ञान एवं आचरण से पल्लवित एवं पुष्पित किया है। पाश्चात्य संस्कृति उपभोगवाद के सिद्धांत पर काम करती है जहाँ पर प्रकृति के सभी अंग पर्वत, पानी, पेड़, पशु, पक्षी मनुष्य मात्र के उपयोग/उपभोग के लिये ही मान लिये गये हैं। जबकि भारतीय संस्कृति प्रकृति के प्रति कृतज्ञ होकर परोपकार, सहयोग एवं त्याग की भावना को समेटे हुये है।

भारतीय संस्कृति के स्वर्णकाल में श्रमण वैदिक, परंपराओं के सुमेल से सत्य, अहिंसा और धर्म का जबर्दस्त बोलबाला था। वैदिक परम्परा में शिथिलता आने पर श्रमण परंपरा के अंतिम तीर्थंकर महावीर ने अपनी जिन परम्परा का सुविकसित स्वरूप स्वयं जीकर दिखा दिया।

श्रमण जैन परम्परा व्यक्ति पूजा के बजाय गुणों की उपासक है। जिसने स्वयं को जीत लिया, वहीं जिनेन्द्र है। जो जिनेन्द्र तीर्थंकरों के बताये मार्ग पर चलता है, वही जैन है।

महावीर स्वामी कहते हैं।

धम्मो मंगल मुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसति, जस्स धम्मे सया मणो।।

धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अहिंसा, संयम और तप उसके लक्षण हैं । जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है, उसे देव भी नमस्कार करते हैं।

अहिंसा एवं अनेकांत की शिक्षा

जीवमात्र की व्यथा को आत्मसात कर लेने के बाद, सबके मंगलमय जीवन के लिये, सर्वकालिक, सर्वभौमिक सत्य की करूणामयी शिक्षा देने वाले आत्मविजेता ही तीर्थंकर कहलाते हैं। तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा को सर्वोच्च स्थान दिया। हिंसा नहीं करने का भाव करूणा के विकास के साथ जुड़ा हुआ है। हिंसा-विरोधी/विपक्षी के प्रति हीनता/उपेक्षा के भाव से शुरु होती है। दूसरे प्राणियों को भी अपने प्राण उतने ही प्यारे हैं जितने कि हमको ऐसी समानुभूति होते ही जीवदया आत्मदया बन जाती है।

वीर वचनों को सुनकर उस समय के धुरंधर महामनीषी महावीर स्वामी से बहस करने लगे। महावीर स्वामी ने सभी पक्षों को सुना /समझा और फिर अकाट्य उत्तर दिया।

तम्हा सव्वे वि णया, मिच्छादिट्ठी सपक्ख पडिबद्धा।
अन्नोन्नणिस्सिया उण, हवंति सम्मत्त सब्भावा।।

अपने अपने पक्ष का आग्रह रखने वाले सभी नय मिथ्या हैं और परस्पर सापेक्ष होने पर वे ही सम्यक्भाव को प्राप्त हो जाते हैं ।

इस अद्भुत स्याद्वाद को अनेकांत के नाम से विरले विद्वान जान एवं समझ पाये हैं। सभी

पंथों, परम्पराओं को सुन्दर समन्वय करने वाले इस सापेक्षवाद में विपक्ष के पक्ष को भी पर्याप्त स्थान मिलता है। विपक्षी/विरोधी के प्रति घृणा/हीनता के स्थान पर उसकी परिस्थितियों के प्रति सदाशयता रखकर ही सामंजस्य/विकास का रास्ता बनाया जा सकता है। आधुनिक युग में राजनीति में अहिंसा और अनेकांत का सुन्दर उपयोग कर महात्मागांधी ने महावीर के विचारों को ही विश्वव्यापी स्वरूप प्रदान किया है।

परिग्रह परिमाण/ अपरिग्रह की आवश्यकता

अहिंसक भाव भूमि के लिये विनम्रता अति आवश्यक है। महावीर ने कहा-

विणओ सासणे मूलं, विणीओ संजओ भवे।
विणयाओ विप्पमुक्कस्स, कओ धम्मो कओ तवो ।।

विनय जिनशासन का मूल हैं। संयम तथा तप से विनीत बनना चाहिये। जो विनय से रहित है, उसका कैसा धर्म और कैसा तप ?

आचार से अहिंसा, विचार में अनेकांत तभी पनप सकते हैं जब जीवन में अपरिग्रह भाव आना आरंभ हो। वर्तमान के चरम उपभोगवादी युग का एकदम उलट अपरिग्रही जीवन है जो कि आज की धधकती धरती को शांत करने का एक मात्र स्थाान है।

धनसंपदा की प्रचुरता सुख नहीं देनी, तपत्याग की भावना ही आत्म संतोष देगी। अपना सारा राजपाट छोड़कर नग्न अवस्था में वर्षों प्रकृति के सहज सान्निध्य में अपने आत्मा के गुणों को चरम पर लाकर परमात्मा बने प्रभु ने कहा-

सव्वग्रंथ विमुक्को, सीइभूओ पसंतवित्तो अ।
जं पावइ मुत्तिसु हं न चक्कवट्टी वि तं लहइ ।।

सम्पूर्ण ग्रंथ परिग्रह से मुक्त, शीतीभूत, प्रसन्न-विरत श्रमण जैसा मुक्ति सुख पाता है, वैसा सुख चक्रवर्ती को भी नहीं मिलता है।

व्यष्टि शुद्धि से समष्टिशुद्धि का अपूर्व आदर्श देने वाले श्रमण साधकों ने न्यूनतम उपभोग से अधिकतम आनंद प्राप्ति का सरल सा सूत्र दिया है। परंतु आज के युग में सरल होना और सरल कहना ही सबसे कठिन हो गया है। परंतु हम अपने उपभोग की वस्तुओं को धीरे-धीरे कम करके त्याग करने के बाद सुख भोगने के वैदिक सूत्र-तेन त्येक्तेन भुंजीया-का छोटा सा प्रयोग तो अपने जीवन में कर ही सकते हैं।

विज्ञान के सूत्र में प्रयोगों द्वारा सिद्ध सिद्धांत ही नियम बनते हैं। महावीर ने जो कहा, जीकर दिखाया। उनके बाद, उनको हजारों सालों से जिसने जितना जाना, परखा, जिया उसे उतना ही सुख, आनंद मिलता रहा।

करूणामयी शिक्षा की आवश्यकता

आज थोपे गये, इकतरफा ज्ञान का भयंकर आक्रमण चल रहा है। बच्चों से बचपन छीनकर दिलो दिमाग में संवेदनहीनता का पाठ पढ़ाया जा रहा है। जिंदगी की दौड़ में लोग प्रदर्शन

और तुलना में अपना और अपने बच्चों का भविष्य दाँव पर लगा रहे हैं। कुछ देर ठहर कर अपने जीवन को देखने परखने का अमर समय मिल सके। (इसे जिन परम्परा में प्रतिक्रमण नाम दिया गया है) तो पता चले कि हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं ?

अगर बच्चों को ज्ञानार्जन में आनंद नही आ पा रहा है, शिक्षक को सीखने में संतोष नहीं मिल पा रहा है तो दिमाग पर बोझ बढ़ाने से कोई लाभ मिलने वाला नहीं है।

ज्ञानार्जन आनंद यात्रा है आत्मा का विकास है, सुख की तलाश है। अपने और अपने बच्चों के सुखद भविष्य के लिये, हरी भरी धरती को बनाने और बचाने के लिये हमें एक बार फिर अपनी जड़ों की और लौटना ही होगा। मशीनी विकास कलयुग के चरम आभासी विश्व की और जो रहा है जहाँ बनावटी बुद्धिमत्ता हम सब को निगल सकती है। आइये एक बार फिर हम अपने आनंददायी, करूणामयी शिक्षा शास्त्र से अहिंसा, अनेकांत, अपरिग्रह का परम सत्य प्राप्त करें। बढ़ती क्रूरता संवेदनहीनता, भौतिकता विश्वव्यापी समस्यायें हैं और इनका सच्चा समाधान अपनी भारतीय संस्कृति ही दे सकती है। आइये एक कदम आगे बढ़ायें, जीवन को सुमित चंदन बनायें।

पावनता के पथ पर रखिये अपना पहला पग।
पहला पग ना रूके कभी तो झुक जायेगा जग।।

कविता

गीदड़ भभकी

संस्कार फीचर्स

गीदड़ भभकी बहुत सुने, धमकी स्वर मंद पड़े
परमाणु बम की बात कही, पर याद करो अपने डर की
काली सी बस रात वही नींद आँख से चली गई
पाकी सेना सहम गई भरत ने हुंकार भरी पाकिस्तानी
धरती कांप उठी सिंधू का पानी अब तुम्हें नहीं
पाक जनों को जगह नहीं
बंद अटारी बाघ की चौकी पाकिस्तानी भारत छोड़ो
अब भारत का रहम नहीं आतंकी हमले सहन नहीं
अब सबक सिखाया जायेगा हर आतंकी
चुनचुन कर देखो एक दिन मारा जायेगा
भारत के तेवर बदल गये सोते शेर अब जाग गये
अब खैर नहीं आतंकी की उनके आका मुल्लों की
बची खुची जो जमी है उनकी मिट्टी में वह अवश्य मिलेगी

आचार्य महावीरकीर्ति और उनकी श्रुतसेवा

❊ आर्यिका श्री ज्ञानमति माताजी ❊

वर्तमान समय में मनुष्य का शारीरिक बल दिन प्रति-दिन घटता जा रहा है, कई बार खाकर भी शरीर में शक्ति एवं स्फूर्ति नहीं आती, यह क्षीणता स्वयंमेव आ रही है। कुछ तो श्रावक प्रमाद बश शरीर के दास बने हुए हैं किन्तु हीन संहनन के कारण कठिन तपश्चर्या की भावना होते हुए भी साधु तीव्र गर्मी, सर्दी को झेल नहीं सकते। यदि शरीर संहनन से अधिक काम लिया जाता है तो धर्म-ध्यान में बाधा उपस्थित हो जाती है। ब से 25-50 वर्ष पूर्व पहले के, और अब के संहनन में बड़ा परिवर्तन आ गया है।

ऐसी परिस्थिति में भी साधु यथाशक्ति तपश्चर्या कर रहे हैं। उन्हीं में से थे महान तपस्वी, उपसर्गजयी, प्रकाण्ड, विद्वान, बालब्रह्मचारी, प्रातः स्मरणीय, विश्ववंद्य आचार्य शिरोमणि महावीकीर्ति जी महाराज उनको उम्र 61 वर्ष की होते हुये भी नवजवान के समान स्फूर्ति थी। वे अद्वितीय गुणों के भंडार थे। उनका असामयिक निधन दिगम्बर जैन समाज के लिए महान क्षोभ का विषय है।

जैन धर्म में सल्लेखना का बड़ा महत्व बतलाया है। जीवन भर की साधना का फल अंत समय के परिणामों पर अवलिम्बत रहता है और समाधि को सुधारने के लिए यावज्जीवन पुरुषार्थ किया जाता है, क्योंकि समाधि के समय कई प्रकार की शारीरिक, मानसिक विकलतायें उपस्थित हो जाती है, कई प्रकार के तूफान आते हैं जिनका निवारण, पूर्वाभ्यास एवं साधु समागम से ही किया जा सकता है, यदि समाधि के समय में धर्मात्माओं का सान्निध्य मिल जाता है तो समाधि सुधर सकती है अन्यथा अनेक प्रकार के संकल्प विकल्प-पूर्वक मरण होकर दुर्गतियों में भ्रमण करना पड़ता है। स्व. आचार्य श्री महावीर कीर्ति महाराज को समाधिरत साधु या श्रावक की वैयावृत्ति करने की तीव्र रूचि थी। यही कारण था कि आप परम पूज्य गुरुवर आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के अंतिम चातुर्मास में (खानिया जयपुर में) उनके निकट आ गये एवं अंतिम समय तक उनकी सुश्रूषा करते रहे।

उन्हीं दिनों में हमें भी आपके निकट सान्निध्य में लगभग 6 माह रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन दिनों वे संघस्थ साधुओं एवं श्रावकों को न्याय, व्याकरण, सिद्धान्तादि ग्रंथों का अध्ययन कराते थे। उनमें से अष्टसहस्री, राजवार्तिक, अनगार धर्मामृत, शब्दार्णव चन्द्रिका आदि ग्रंथों के अध्ययन में सम्मिलित होने का अवसार प्राप्त हुआ। वे अध्ययन कराते हुए कई अनुभव की बातें बतातें रहते थे।

प्रकरण आने पर शिष्यों का मनोबल बढ़ाने के लिए हमेशा कहा करते थे कि- **पठितव्यं तनु पठितव्यं अग्रे-अये स्पष्टं भविष्यति।**

आज उन्हीं की देन है कि मुझ जैसी अल्पज्ञ को अष्ट सहस्री जैसे न्याय के महान एवं क्लिष्टतम सत्य का हिन्दी अनुवाद करने का साहस एवं शक्ति प्राप्त हो सकी। उन्हीं दिनों लगभग 6

माह तक उच्च का क्रम चलता रहा किन्तु विशाल ग्रंथ एवं अनेक विषय होने से सबका अध्ययन पूर्ण नहीं हो पाया। क्योंकि चातुर्मासोपरांत आचार्य श्री शिवसागर जी महाराज का गिरनार यात्रार्थ विहार होने से आपका समागम नहीं रहा। मन में बड़ा दुःख हुआ कि इन अपूर्ण विषयों का अध्ययन कौन करायेगा ? तब आचार्य श्री महावीरकीर्ति महाराज ने बड़े प्रेम से कहा कि- जिनवाणी का विनय करते हुए अति-भक्ति आदि पूर्वक गुरु का स्मरण करके भगवान के समक्ष बैठकर अध्ययन अध्यापन करने से स्वयमेव ज्ञान का क्षयोपशम वृद्धिंगत होता है भगवान के समक्ष बैठने से अपत्य भाषण का विशेष भय रहता है, एवं भगवान की कृपा प्रसाद से क्लिष्ट विषय सरल बन जाते हैं, आचार्य श्री के आशीर्वाद ने यह निधि प्रत्यक्ष में प्राप्त हुई। इस व्यावर नगर में 13 वर्ष पूर्व ब्र. राजमल जी (वर्तमान मुनि श्री अजिसागर जी) क्षु. जिनमति जी (वर्तमान आर्यिका श्री जिनमती जी) आदि को अनेक अपिठत एवं अपूर्ण पठित ग्रंथों का अध्ययन गुरु प्रसाद के बल से ही कराया गया। गुरुओं के कृपा-प्रसाद से तो संसार-समुद्र पार किया जा सकता है। कहा भी है-

ग्रंथार्थतो गुरु परंपरया यथावत् श्रुत्वावधार्य भवभीरूतया विनेयान्।
ये ग्राह्यन्त्युभय नीति-बलेन सूत्रं, रत्नत्रय प्रणयिनों गुरुवः स्तुमस्तान्॥

ग्रंथ एवं उसके अर्थ को गुरु-परम्परा-गुरु मुख ये यथावत् पढ़कर एवं अवधारित करके जो साधु भव-समुद्र से भयभीत हैं तथा निश्चय और व्यवहार रूप दोनों नयों का अवलंबन लेकर अपने शिष्यों को सूत्रादि ग्रंथ पढ़ाते हैं, उन रत्नत्रय धारी आचार्य परमेष्ठियों का हम स्तवन करते हैं। गुरु परम्परा से समझे बिना विपर्यास भी हो जाता है। बिना गुरु के आधार के पूर्वा पर सम्बंध समझे बिना यथावत् समझ में नहीं आता। जिन्हें एक शब्द का भी विपर्यास होने से अनंत संसार में परिभ्रमण का भय है और जो गुरु स्वयं रत्नत्रय से पवित्र होते हैं, वे ही सच्चे हितकारी होते हैं। आचार्य श्री महावीकीर्ति जी महाराज से सभी गुण विद्यमान थे।

अन्य विषयों में तो आप निपुण थे ही, साथ ही मंत्र, तंत्र, ज्योतिष, निमित्त आयुर्वेद आदि का भी अच्छा ज्ञान था। आप एक विशिष्ट तपस्वी साधु थे। वर्तमान त्यागियों में आप सर्वोपरि थे। आपके जीवन में असाधारण विशेषतायें रही हैं। आपकी सभी क्रियाओं में बड़ी सतर्कता एवं सावधानी रहती थी। देव गुरु व शास्त्र के महान विनयी थे। प्रमाद तो आपको छू तक नहीं सकता था। स्वाध्याय करते समय यदि कमर के नीचे हाथ लग जाता तो हाथ धोकर ग्रंथ को स्पर्श करते। कहते थे कि जिनवाणी सर्वज्ञ तुल्य है, सूर्य सहया है। जिनवाणी भगवान के समान आदरणीय है जिनवाणी के विनय से ही केवल ज्ञान की प्राप्ति होती है। इसी कारण उन दिनों आपने यादगार रूप में जिनमति माताजी को आत्मानुशासन कंठस्थ करने को कहा।

पू. आचार्य श्री के वचनों से बड़ा आत्मिक बल मिलता था। आपके वचनों में बडी सिद्धि थी, शिष्यों पर अनुग्रह निग्रह में आप अत्यंत निपुण थे। यही कारण था कि आप एक विशाल संघ के अधि-नायक बने। आप शिष्यों के सुख-दुःख का तो पूरा ध्यान रखते ही थे, साथ ही ज्ञानार्जन

की नो उचित व्यवस्था स्वयं करते थे, आपका जीवन एक ग्रंथ रूप था।

किसी भी वीतराग साधु की समाधि होने पर खेद तो होता ही है किंतु आप जैसे महान् सूर्य का अस्त हो जाना अधिक दुःखप्रद प्रतीत होता है, क्या कोई ऐसी माता है ऐसे नर रत्न को जन्म देकर आचार्य श्री की पूर्ति कर सके ? विद्वान पंडित होकर त्याग-मार्ग में लगने के उदाहरण बहुत कम दृष्टिगत होते हैं । उसमें कई कारण हैं कोई तो क्षोदक्षेम करने में लगते रहते हैं कोई ज्ञान से गर्विष्ट होकर अपने को ही सर्वज्ञ समझने लग जाते हैं, कोई शक्तिहीनता या प्रमाद से त्याग-मार्ग में अग्रसर नहीं होते । वर्तमान में विद्वान होकर साधु बनने वालों में समाधिस्थ आचार्य श्री सुधर्मसागर जी महाराज, आचार्य श्री महावीरकीर्ति जी महाराज एवं आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज ज्ञात होते हैं। धनिकों में त्यागी बनने का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण बम्बई के जौहरी मोतीलाल जी (फर्म घासीराम पूनमचंद) ने प्रस्तुत किया जो कि वर्तमान में आचार्य श्री श्रुतसागर जी महाराज के संघ में पू. श्री सुबुद्धिसागरजी मुनि-राज के नाम से विख्यात हैं ।

इस दुष्कार काल में जैनेश्वरी दीक्षा को अंगीकार कर कठिन तपश्चर्या को धारण करने वाले विरले ही महापुरुष हैं जो कि स्वयं नग्न दिगम्बर वीतरागमुद्रा धारण कर साक्षात मोक्ष का मार्ग बतला रहे हैं।

आज आचार्य जी हमारे समक्ष नहीं हैं किन्तु उनका आदर्श हमारे सन्मुख है जिससे प्रत्येक मनुष्य अपने जीवन को पवित्र एवं उज्जवल बना सकता है, उनकी अमिट देन इस पृथ्वी मण्डल पर चिरकाल तक रहकर उनके नाम को अमर बनाये रखेगी। शत् -शत् हार्दिक श्रद्धांजलि।

कविता

पहलगाम का हमला

✻ संस्कार फीचर्स ✻

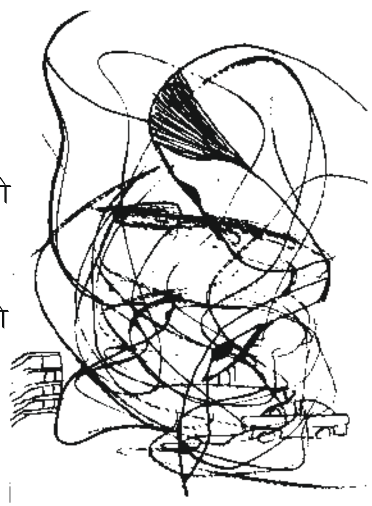

निहत्थे लोगों पर वेगुनाहों पर आतंक की भाषा
कितनी निराशा खून की प्यास भारत को न आयी रास
गुस्से में आया सारा देश न चलेगा आतंकी भेष
नेस्त नाबूद कर देंगे आतंक को मिट्टी में मिला देंगे
आतंक की बची कुची जमीन को भी मिट्टी में मिला देंगे
पहलगाम का हमला भारत की आत्मा पर हुआ है
आतंकियों ने एक सोते शेर को छुआ है ये देशवासी
सहन नहीं करेंगे आतंक के ताबूत पर आखिरी कील ठोंकेंगे
पाक घबड़ा रहा है गीदड़ भंभकी दे रहा है
शेर के सामने हाँफ रहा है बस कुछ समय बाद
हाथ उचे किये पाक माँगेगा शरण
गिड़गिडायेंगा पकड़ेगा भारत के चरण

कहानी

मजाक में मौत

लेखक: 105 एलक श्री सिद्धांतसागर जी महाराज

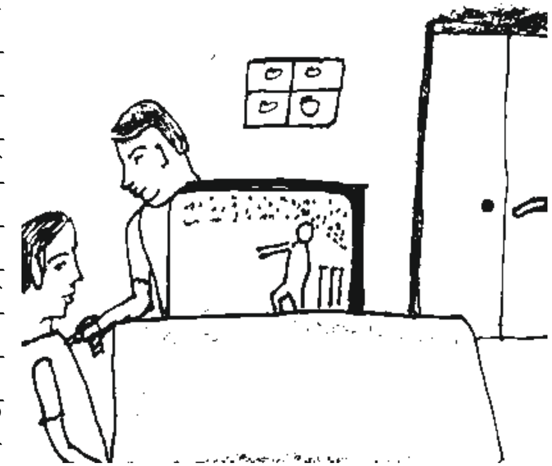

रात्रि के आठ बज रहे थे टीवी ऑन थी ओर टीवी पर चल रहा था आई.पी.एल का मैच परिवार के सभी सदस्य शादी की रस्म अदा करने के लिए घर से बाहर जा चुके थे मेरठ के एक छोटे से परिवार में जहां का थाना परीक्षतगढ़ लगता है वहाँ के खजूरी गांव में आई.पी.एल देख रहे बहुत सारे लोग अपने घरों में कैद थे हैदराबाद टीम की जीत होने वाली थी मैच चल रहा था और परिवार के सारे लोग जहां शादी में गये थे वहीं पर मोहम्मद यूसुफ और कैफ दोनों देख रहे थे मैच बहुत अच्छा चल रहा था मैच के चलने से लोगों से बड़ा उत्साह था क्योंकि क्रिकेट का बुखार प्रायः सभी लोगों के लिए अच्छी तरीके से चढ़ जाता है और जब कैफ और यूसुफ दोनों देख रहे थे मैच घर में कोई नहीं था यूसुफ पढ़ाई लिखाई करने में बहुत तेज था और वह मुस्लिम समाज का एक होनहार युवक था मोहम्मद कैफ की ऊँचाई पाँच फुट छह इंच थी वह सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने जा रहा था लेकिन तेरह वर्षीय यूसुफ जिसका पढ़ने में कोई मन नहीं लगता था वह आठवीं भी पास नहीं हो पाया था लेकिन उसका क्रिकेट में और भी अन्य कई चीजों में खूब मन लगता था उसके दादाजी सदैव कहा करते थे यार तू नहीं पढ़ तो चलेगा लेकिन तुम अगर क्रिकेटर भी बनना चाहे तो अच्छा क्रिकेटर बन तू क्रिकेट भी खेलता नहीं है सिर्फ मैच देखने का बुखार तेरे अंदर चढ़ा रहता है मोहम्मद हसन उसके दादाजी थे मोहम्मद हसन को हथियार रखने का बड़ा शौक था वह बंदूक भी रखते थे पिस्तौल भी रखते थे चाकू भी रखते थे और इसके साथ-साथ कभी कभी हथगोले भी रखा करते थे क्योंकि उनको लड़ाई झगड़े तो करने में

ज्यादा मजा नहीं आता था लेकिन लड़ाई झगड़े करवाने में मजा आता था वह हमेशा जब भी कोई भी दंगे फसाद होते थे तो अपनी पिस्टल लहराते करके वहां पहुंच जाते थे और लोगों को धमकाने का काम भी करते थे धमकाने के साथ-साथ वे कभी कभी खुद भी मैदान में उतर जाते थे आज शादी की रस्म में बंदूक लेकर गये थे और पिस्तौल घर छोड़कर गये पिस्तौल को अलमारी में से यूसुफ ने निकाली और यूसुफ ने अलमारी से निकालने के बाद वह पिस्तौल से खेलता रहा मोहम्मद कैफ ने उससे कई बार कहा ये दादाजी के हथियार है दादाजी के पास ही रहना चाहिये तू इनसे क्यों खेलता है वहीं रख दे तब हसन कि इस पिस्तौल को उछाल करके यूसुफ ने कहा आज अगर हैदराबाद टीम जीतती है तो मैं बोलो कितनी गोलियां चलाऊँगा कैफ ने कहा गोली है तो चलाना हम मना नहीं करते हैं लेकिन गोलियों को सावधानी पूर्वक चलाती पड़ेगी क्योंकि गोलियों के चलाने में कभी गोली किसी को भी लग सकती है यूसुफ बोले मुझे सब पता है मैं ऐसी गोली चलाऊँगा अगर किसी को लग भी जाए तो मुणे इसकी क्या परवाह है उसकी किस्मत होगी अल्ला को अगर मंजूर होगा यह गोली किसी को लगना है उसे कौन बचा सकता है फानूस बनके जिसकी हिफाजत खुदा करे वह चिराग क्या बुझे जिसे रोशन खुदा करे कैफ ने कहा यार तू तो शायरी करने लगा यूसुफ सीधे से क्रिकेट देख और मजा ले यह पिस्तौल को तू अलमारी में रख दे लेकिन यूसुफ की कोई बात समझ में नहीं आई और यूसुफ उस पिस्तौल को इधर पटकता उधर पटकता उठाता रखता फिर कहीं निशान लगाता कही कहता मैं अलमारी का कांच फोड़ दूँ क्या कैफ समझाता मोहम्मद कैफ ने उसे समझाया आरे भैया तू अलमारी का कांच फोड़ेगा खिड़की का कांच फोड़ेगा नुकसान किसका होगा दादा जी आकर किस पर चिल्लाएंगे तेरे पर चिल्लाएंगे तो क्या फायदा निकलेगा पर वह कहता है कहीं न कहीं तो मैं गोली चलाऊँगा ही उद्दंड यूसुफ को समझाना कैफ के बस की बात नहीं थी उसको अगर वह डराता तो उसके हाथ में पिस्तौल थी वह मोहम्मद कैफ पर चला सकता था परंतु मोहम्मद कैफ ने बहुत ठंडे दिगमाग से काम लिया और एक बार उससे कहा कि एक काम करो तुम आइस्क्रीम खालों और मोहम्मद कैफ ने फ्रिज में से आइस्क्रीम निकाली खुद भी एक प्लेट में दी और उसके प्लेट में दे दी जैसे ही उसके प्लेट पर आइस्क्रीम गई उसने पिस्तौल को छोड़ दी पिस्तौल को छोड़ने के बाद उसने मोहम्मद कैफ ने पिस्तौल को अलमारी के भीतर रखकर के लॉक कर दिया और चाबी अपने पास रख ली और मोहम्माद कैफ जो है ना क्या फिर से टीवी देखने लगा मैच अच्छा चल रहा था क्रिकेटर ने छक्का मारा हैदराबाद की टीम के बल्लेबाज ने छक्का मारा तो फिर उछल गया

मोहम्मद यूसुफ और कैफ भी उछल गया लेकिन कैफ ने गद्दे के नीचे जो चाबी रख रखी थी अलमारी की वह चाबी कैफ के उछलते ही हसन ने उठा ली तो उसके लिये यूसुफ ने चाबी उठा ली और चाबी उठाकर के घूमने लगा बोलो बोलो अब क्या बोलते हो तुमने अपने मन की कर ली ना मैं अब अपनी मन की करूंगा और उसने अलमारी का ताला खोल लिया और ताला खोलकर के फिर पिस्तौल बाहर निकाल ली यूसुफ पिस्तौल को लेकर के पूरे घर में घूमता फिरा ओर उसने कहा आज तो किसी न किसी को मैं मारूंगा घर में बंधी बकरी को जब यूसुफ निशाना बनाने लगा तो मोहम्माद कैफ ने कहा अरे इस बेगुनाह को गोली मार कर के तू क्या जन्नत में चला जायेगा अरे बेवकूफ किसी बेगुनाल को गोली नहीं मारी जाती है तो यूसुफ ने कहा फिर मैं खिड़की में मारूंगा खिड़की कांच तोडूंगा मोहम्माद कैफ ने फिर समझाया कि भाई ये पिस्तौल मजाक बाजी की चीज नहीं होती है इस पिस्तौल से मजाक नहीं करना चाहिये।

क्योंकि इससे मजाक करने वाले निश्चित तौर पर कभी न कभी किसी न किसी तौर पर अपना कुछ न कुछ नुकसान ही कर लेते हैं पर यूसुफ न तो पढ़ने में मन लगता था न उसको खेलने में उसका सिर्फ क्रिकेट देखने में मन लगता था और उद्दंडता करने में मन लगता था मोहम्मद कैफ ने अपनी पूरी की पूरी ताकत यूसुफ को समझाने में लगा ली लेकिन यूसुफ नहीं माना और यूसुफ ने आखिरी में बंदूक अपनी पिस्तौल तान दी मोहम्मद कैफ के ऊपर कैफ ने उसको समझाया और उससे यह कहा कि तुझे मारना है तो यह कांच तोड़ दें न बकरी को मार न मुझे मार यूसुफ बोला अब जिसकी किस्मत में होगी उसे लगेगी गोली मैं इसका जिम्मेदार नहीं हूँ मैं तो सिर्फ गोली चलाऊँगा मोहम्मद कैफ एक बार पलंग के नीचे बैठ गया उसने कहा तू अगर बाहर नहीं निकलता है तो मैं टीवी में गोली मार दूंगा कैफ बड़ा परेशान हो गया कैफ ने कहाँ अगर टीवी फुट जायेगी तो भी दादाजी क्या कहेंगे हजारों का नुकसान हो जायेगा इसके बाद भी यूसुफ मानने तैयार नहीं हुआ आखिरकार उसने आइस्क्रीम भी खाली सब कुछ कर लिया पर यूसुफ अपनी उदंडता पर कायम रहा और इसके बाद यूसुफ ने बस वही किया जो नहीं करना चाहिये था उसने गोली चलाने के लिए पिस्तौल का ट्रिगर दबाने की धमकी दी तो मोहम्मद कैफ ने कहा तू क्या कर रहा है तो उसने मोहम्मद कैफ की कनपटी पर बंदूक रख दी और कहा अब मैं चलाऊँ कैफ ने हाथ जोड़े उसके अरे मालिक के लिए अल्लाह के लिए मुझे वबक्श दे पर यूसुफ को कोई फर्क नहीं पड़ा और आखिरकार यूसुफ ने मजाक करने के तौर पर गोली चला दी गोली जैसी चली मोहल्ले में आवाज पहुंच गई गोली चलने की मोहल्ले के लोग इकट्ठे हो गये बोले क्या हुआ क्या हुआ दरवाजे बंदर कर लिये यूसुफ ने उसके

अब्बा कहीं से आ गये और अब्बा ने उसके लिये समझाकर दरवाजा खुलवाया दरवाला खुलवाया तो देखा मोहम्मद कैफ जिस बिस्तर पर पड़ा था वहां पर खून की खून बह रहा था तभी यूसुफ से पूछा क्या हुआ तो यूसुफ ने अपनी खुद्दारी और दमदारी दिखाकर के कहा मैंने गोली मार दी कैफ की मौत हो चुकी थी कैफ की मौत होने के बाद पूरा मोहलला इकट्ठा हो गया शादी की जहां पर रस्में चल रही थी शादी की वहां पर खबर पहुंच गई और मोहम्मद हसन भी वहां से जल्दी आ गए उन्होंने कैफ को देखा लिपटकर के रोने लगे अरे एक होनहार मेरा इंजीनियर बनने वाला मुस्लिम समाज का नाम ऊँचा करने वाला लड़का था उसे भी इस नादान ने मौत के घाट उतार दिया सबकी गुस्सा यूसुफ पर थी पर यूसुफ को कोई न मारे कोई डाँटे नहीं इस बात का विशेष्ज्ञ ध्यान रखते हुए हसन ने सारी की सारी बातें की परीक्षिगढ़ के थाना प्रभारी वहा पर आ गये और उन्होंने देखा बड़े प्यार से पूछा यूसुफ से तुमने गोली क्यों मारी तो यूसुफ बोला मजाक में मार दी बेटा ऐसी कैसी मजाक बोले यूं हमने पहले से कहा था कि बकरी को मारेंगे तो उसने कहा बकरी बेगुनाह को नहीं मारना चाहिये भाई ने कहा फिर मैंने कहा कि खिड़की कांच तोड़ देंगे तो उसने बहुत बड़ा नुकसान हो जायेगा मैंने कहाँ टीवी पर मारेंगे तो भी बोले बहुत नुकसान हो जायेगा तो मैंनें कहा अब सबमें नुकसान हो रहा है तो इसने मेरी पिस्तौल को छीन लिया अलमारी में बंद कर दी पुलिस को पूरी घटना यूसुफ ने सुना दी पूरी घटना सुनने के बाद पुलिस के अमले ने नाबालिक यूसुफ को थाने ले गये वहां पर कार्रवाई चली अब हसन का धर्म संकट था कि अगर यूसुफ को सजा होती है तो भी गलत है और छुड़वाते है तो भी गलत है।

क्योंकि यूसुफ और कैफ के बीच में रिश्ता जो था वह रिश्ता चचेरे भाई का था और फैफ के पिताजी बहुत गुस्सार में थे उनका एक ही लाड़ला लड़का आज मौत की चौखट पर पहुंच चुका था सिर्फ यूसुफ की नादानी को रोका कैसे जा सकता था यह बात सोचकर के वह बहुत समझने लगा लेकिन उसको एक बात याद आई कि काश मेरे अब्बा ने यह पिस्तौल व्यवस्थित रखी होती तो आज मेरा बेटा नहीं मरा होता हथियारों से खेलना हथियारों से दूसरों को धमकाना जहां बहुत सरल होता है वहीं वे ही हथियार कभी घर को परिवार को बर्बाद करने के कारण बन जाते हैं इस बात को समझना हसन के लिए आज गहराई से पता लग गया कि मैंने अपनी जिंदगी में हथियारों को रखकर के गलती की है क्योंकि हथियार दूसरों को बर्बाद करने के लिये जहां होते हैं वहीं खुद का परिवार भी बर्बाद कर सकते हैं इस बात को हसन ने कभी सोचा भी नहीं था लेकिन हसन की अब इस पछताया बात बात पर सब हंस रहे थे क्योंकि उसको जब उसके पड़ोसी जाकिर समझाता था जाकिर यह कहता था कि वह हसन भाई तुम बहुत नेक इंसान हो लेकिन ये हथियारों का खेल मत खेला करें इससे अपने घर में

आतंकवाद ही पनप सकता है क्योंकि आतंकवाद वहीं पनपता है जहां बच्चों के लिये हथियारों को खिलौने की तरह दे दिया जाता है और हथियारों को खिलौना बना दिया जाता है उस परिवार की मानसिकता हमेशा आतंकवादी बन जाती है उस परिवार के लोग कभी भी यह बात नहीं समझ पाते हैं कि हमें क्या करना चाहिये क्या नहीं करना गुस्सा में खुशी में कभी भी गम में या किसी प्रकार से निराशा में वे उन हथियारों का उपयोग कर सकते हैं इसलिये जाकिर भाई हसन भाई को हमेशा समझाता था लेकिन हसन भाई एक बात कहते थे कि शौक अपना अपना है अपने अपने शौक को किसी के लिये रोकना नहीं चाहिये मैं अपने घर में बहुत अच्छा वातावरण बनाये हुये हूँ मेरे घर के सब बच्चे समझदार है मेरे घर की औरतें सब समझदार हैं इसलिये मेरे घर में कभी भी किसी प्रकार का ऐसा कोई कांड नही हो सकता है लेकिन आज मोहम्मद कैफ की मृत्यु पर हसन को यह बात रोते-रोते कहना पड़ी मैंने कभी नहीं सोचा था मैंने कभी नहीं सोचा था कि मेरे घर में ही मेरे हथियारों से मेरे बच्चे की मौत होगी अब रहा सवाल इस बात का था की यूसुफ का कैसे बचाया जाये पुलिस अपना काम कर रही थी पकड़ रही थी और लायसेंस से युक्त उनकी पिस्तौल थी पिस्तौल का लायसेंस होने से पुलिस के सामने एक दुविधा आ गई कि इस पिस्तौल पर केस कैसे बनाया जाए तो उन्होंने हसन पर केस लापरवाही का बनाया कि यह पिस्तौल बच्चों के हाथ में कैसे दी गई क्योंकि बच्चों के हाथ में कभी भी हथियार नहीं देना चाहिये नाबालिक बच्चों के हाथ में क्योंकि वह कभी भी घटना के शिकार बन सकते हैं इस बात को लेकर के पुलिस ने कार्रवाई शुरु की और हसन पर सबसे पहले केस बनाया गया अब हसन यूसुफ दोनों जेल जाने की ओर थे परंतु बात यह है कि नाबालिक यूसुफ पर केस अलग धाराओं में बन रहा था हसन पर अलग धारा में बन रहा था दोनों जेल में पहुंच गये जेल पहुंचने के बाद यूसुफ दादाजी के जांघ पर सिर रखकर के पूरी रात रोता रहा दादाजी से कहता रहा मैं ने भाई को खो दिया मजाक मजाक में ऐसी भी मजाक कहां तक काम की होती है इस बारे में मैं नहीं सोच पाया तो उसके दादाजी ने कहा हाँसी दिन दस भी बीस दिन की हाँसी कटा देते हैं शीश अर्थात उनका कहना यह था मसमखरी दिन दसकरी अधिक करी तो बीस और रात दीना कि मसखरी कटा देते हैं शीश उसकी मजाक पर उनके लिये बड़ा ताज्जुब हो गया था लेकिन अब जेल में दोनों रोने के सिवा और क्या कर सकते थे पश्चाताप के सिवा क्या कर सकते रात नहीं कटती थी जेल में लेकिन जेलर एक ही बात कहता था हसन भाई गलती यूसुफ की नहीं है गलती तुम्हारी है हथियार रखना सचमुच में मेरी बहुत बड़ी गलती हो गई यह मजाक यूसुफ की मजाक मेरे एक बेटे को खो दिया और मुझे जेल लाई इसीलिये मजाक बहुत कम करना चाहिये ये हसन ने तय किया।

हमारे गौरव

मोक्षमार्ग की साधिका ब्र. पं. चन्दाबाई जी

बीसवीं सदी में नारी जागरण को प्रथम अग्रदूत के रूप में चन्दाबाई प्रख्यात हुई हैं। उन्होंने समाज में व्याप्त कुरीतियों का विरोध किया तथा ज्ञानदीप प्रज्वलित कर नारी को कर्तव्य बोध कराया एवं शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ाया। आज हर क्षेत्र में नारी की जो अग्रणी भूमिका दिखाई देती है वह उनकी देन है। इनका जन्म वृन्दावन के वैष्णव परिवार में वि.सं. 1946 आषाढ़ शुक्ल तृतीया को हुआ था। पिता श्री नारायणदास अग्रवाल सम्पन्न परिवार के जमीदार एवं प्रतिभाशाली ग्रेजुएट विद्वान थे और माता श्रीमती राधिकादेवी। अपनी पुत्री के सौम्य मुख और गंभीर प्रकृति को देखकर उसका नाम चंदाबाई रखा। इनके दो भ्राता थे- श्री जमनाप्रसाद एवं श्री जशेन्द्रप्रसाद और दो अनुजा थी। केशरदेवी और वज्रवाला देवी।

शिक्षाः पांच वर्ष की अवस्था में गणेश पूजन के साथ अ,आ, इ,ई, क,ख,ग,के उच्चारण के साथ चंदाबाई का विद्या संस्कार संपन्न हुआ। विद्यालय में आरम्भिक शिक्षा प्राप्त की। विशेष प्रतिभाशाली होने के कारण गुरूजन उन्हें सरस्वती का अवतार मानते थे। आरंभिक शिक्षा के साथ गीता एवं रामायण भी पढ़ी और गृहोपयोगी कार्यों में निपुणता हासिल की।

वैवाहिक जीवनः लगभग ग्यारह वर्ष की आयु में चन्दाबाई का आरा निवासी सम्भ्रान्त एवं प्रसिद्ध जमीदार जैन धर्मानुयायी पं. श्री प्रभुदास जी के पौत्र श्री बाबू चन्द्रकुमार जी के पुत्र बाबू धर्मकुमार जी से विवाह सम्पन्न हुआ। किन्तु दुर्देव से विवाह के एक वर्ष बाद ही चंदाबाई जी के जीवन में एक वज्रपात हुआ, जब शिखर जी यात्रा से लौटते समय धर्मकुमार जी गिरिडीह में प्लेग से आक्रान्त हो गये और अल्प समय में ही मृत्यु ने उनका आलिगंन कर लिया।

जीवन में नया मोड़: असमय में पति के निधन की घटना से बारह वर्षीया चंदाबाई को संयोगों की क्षणभंगुरता व जीवन के सत्य पहलू का बोध हो गया। उन्होंने मोह श्रृंखला को तोड़ दिया। पितृ तुल्य ज्येष्ठ श्री देव कुमार जी ने अपनी अनुजवधु चन्दाबाई को आरा बुलवा दिया। यहां पर वे पूज्य वर्णी जी एवं मुनि श्री नमिसागर जी के धर्मोपदेश से पुनः ज्ञानार्जन करने में प्रवृत्त हो गई। उन्होंने जैन संस्कृत साहित्य एवं धर्मशास्त्रों रत्नकरण्ड श्रावकाचार, तत्वार्थसूत्र, द्रव्यसंग्रह, परीक्षामुख, न्यायदीपिका, चन्द्रप्रभचरित आदि।

पूज्य वर्णी जी के सान्निध्य में किया। काशी के समान संस्कृत शिक्षा केन्द्र वृन्दावन में कुछ समय रहकर लघु सिद्धांत कौमुदी, सिद्धांत कौमुदी आदि व्याकरण ग्रंथों का अध्ययन किया। राजकीय संस्कृत कालेज काशी की पण्डित परीक्षा उत्तीर्ण की जो आज की शास्त्री परीक्षा के समकक्ष है। उनके जैनधर्म, दर्शन, न्याय के प्रखर पाण्डित्य और विलक्षण ज्ञान के आगे बड़े-बड़े विद्वान भी मूक ही जाते थे।

प्रतिज्ञाः गहन अध्ययन के परिणाम स्वरूप चन्दाबाई के हृदय में ज्ञानदीप प्रज्वलित हो

गया। उन्होंनें निश्चय कर लिया अब मैं सेवा के क्षेत्र में पर्दापण कर असहाय एवं विधवा नारी जाति को सान्त्वना देते हुए उनकी हर संभव मदद करती रहूंगी।

सेवाकार्यः प्रतिज्ञा को कार्यरूप देने के लिए आपने श्री देवकुमार जी को प्रेरित कर अपने ही नगर में सन् 1907 को कन्या पाठशाला की स्थापना करायी। वे स्वयं देख-रेख और अध्यापन कार्य करती। वेदना संतप्त नारी जगत के अज्ञानतमस को दूर करने के लिए उन्होंने सेवा के विभिन्न मार्गोंको अपनाया, समस्त आर्यावर्त को कार्यक्षेत्र बनाया। नारी जाति को शिक्षित एवं ज्ञान सम्पन्न बनाया। अनेक पंचकल्याणक प्रतिष्ठाओं में सम्मिलित होकर तथा अनेक यात्राओं के दौरान भाषण एवं प्रवचन देकर महिलाओं को अनेक कर्तव्य का बोध करा उन्हें संगठित किया।

देशसेवाः स्वतंत्रता आंदोलन में चंदाबाई जी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। वे स्वयं जेल नहीं गयी, परंतु अनेक भाइयों को स्वतंत्रता आंदोलन हेतु प्रेरित किया। अहिंसा और सत्य के सिद्धांतों प्रचार के लिये निबन्ध/लेख लिखकर वितरित किये और जन-जन के हृदय में देशभक्ति/सेवा की भावना जागृत की। कांग्रेस तथा देश के विभिन्न कार्यो के लिए चंदा एकत्रित किया। सन् 1920 से निरंतर चरखा चलाती रहीं। विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया तथा आजीवन खादी ही धारण की।

धार्मिक क्षेत्र में योगदानः जन्म से ही धार्मिक संस्कारों से सम्पन्न चंदाबाई जी की धार्मिक कार्यों पूजन पाठ, प्रतिष्ठा महोत्सव आदि में रूचि रही। उन्होंने श्री देवकुमार जी व परिवार के दौरान होने वाले आपके भाषणों का अनुवाद कन्नड़ में श्री नेमिसागर जी वर्णी किया करते थे।

निष्काम जिन भक्ति से बढ़कर अन्य कोई पुण्य का कार्य नहीं है इसका अनुभव कर उन्होंने जिनमंदिर का निर्माण एवं जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा करायी।

इनमें प्रमुख हैं- राजगृह में द्वितीय पर्वत पर जमीन खरीद कर भव्य मंदिर का निर्माण और सन् 1936 में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा करायी। आरा में 54 शिल्पयुक्त जिनालय होते हुए भी मानस्तंभ की कमी थी। 1939 में संगमरमर का भव्य रमणीय मानस्तंभ तैयार कराया। उनकी ही प्रेरणा से उनकी ननद श्रीमति नेमिसुन्दर जी ने जैन बाल विश्राम के विद्यालय भवन के ऊपर भव्य जिनमंदिर का निर्माण कराया। आरा के अनेक मंदिरों का जीर्णोद्धार भी उनकी ही प्रेरणा से हुआ।

मां श्री चन्दाबाई जी विदुष्ज्ञी, प्रभावी प्रवचनकार एवं वक्ता होने के साथ श्रेष्ठ लेखिका, कहानीकार, कलियत्री, सम्पादिका एवं पत्रकार भी रहीं। उन्होंने महिलापयोगी साहित्य के सृजन में अग्रणी भूमिका अदा की। उनके द्वारा लिखित प्रमुख निबंध संग्रह/कृतियां निम्न है।

1. उपदेशरत्नमाला- इनमें दो भागों में 30 निबंधों का संकलन है।
2. सौभाग्य रत्नमाला- यह नौ निबन्धों का संग्रह है।
3. निबन्धरत्नमाला- यह 18 निबंधों का संकलन है।
4. आदर्श निबन्ध- इसमें निबन्धों की संख्या 20 है।
5. निबन्ध दर्पण- इसमें लगभग 25 से 35 निबंध है।

6. आदर्श कहानियाँ- इसमें अनेक कहानियों का संकलन है।

लेखन के साथ भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद द्वारा संचालित जैन महिलादर्श मासिक पत्र का संपादन सन् 1921 से आकलित किया। जैन व जैनेतर पत्रों व अभिनंदन ग्रंथों में भी आपके साहित्यिक, आचरणात्मक, दार्शनिक व उपदेशात्मक आलेख प्रकाशित हुए हैं।

मां श्री में बचपन से ही कवित्व गुण था। उन्होंने संस्कृत व हिन्दी में अनेक कविताओं का सृजन किया। किन्तु इनमें काव्य की अपेक्षा उपदेश अधिक मुखरित होता है।

कलाप्रियता: सर्वगुण सम्पन्न चन्दाबाई जी कलाविद भी थीं। जैन आगम के अनुसार रत्नगिरि पर्वतपर जिनालय में कलश, मेहराब, जालियां, झरोखे आदि का निर्माण आपने कराया। ध्रुव-धान्य, जय-नन्द आदि 16 प्रकार के प्रमादों की जानकारी होना, बारह दोषों से रहित तीर्थंकरों की दिव्य मूर्तियों को स्थापित कराना, मानस्तंभ में उत्कीर्ण 8 मूर्तियों तथा ऊपर की गुमटी में स्थित मनोज्ञ मूर्तियों का निर्देशन उनकी कलाममर्मज्ञता का प्रभाव है। चित्रकला में मां श्री आद्वितीय स्थान है। वे यद्यपि तूलिका लेकर चित्रों में रंग नहीं भरती तथापि पूजन, विधान, विशेष पूजाओं के अवसर पर सुंदर मांडना पूरना, उनकी चित्रकला प्रियता का द्योतक है। सन् 1950 में धर्मामृत के चित्र बनाने पधारे प्रसिद्ध चित्रकार श्री दिनेश बक्शी को मां श्री ने चित्रकला के संबंध में विशेष परामश दिये थे। संगीत कला को तो मां श्री क्रिया विशाल पूर्व के अंतर्गत मानती थी। उनके भाव विभोर होकर पूजन पढ़ने पर हृदय के तार झंकृत हो जाते थे। वे बालाविश्राम की छात्राओं को गरबा नत्य, संभाली नृत्य, शंकर नृत्य व लोक नृत्य है व प्रोत्साहित करती रहती थी। काव्य कलाविद् तो आप थीं ही।

महत्वपूर्ण एवं रमणीय कार्य: जब हरिजन मंदिर प्रवेश बिल को लेकर समाज में हलचल मची तो आचार्य श्री शांतिसागर जी ने अन्न त्याग कर दिया। उनकी ही शिष्य चंदाबाई जी ने लेखन द्वारा तथा अन्य विद्वानों के साथ अनेक बार दिल्ली जाकर राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद और प्रधानमंत्री श्री पं. जवाहरलाल नेहरू से भेंट की। उन्हें जैन धर्म की वस्तु स्थिति से अवगत कराया। जिससे प्रभावित हो हरिजन मंदिर प्रवेश बिल से जैन मंदिर पृथक् कर दिये गये।

जैन बाला विश्रामः सन् 1921 में श्री सम्मेद शिखर की यात्रा चन्दाबाई ने सपरिवार की। समग्र पर्वत की वंदना के उपरांत श्री पार्श्वप्रभु की टोंक पर श्री बाबू निर्मल कुमार जी की प्रेरणा से एक वर्ष में जैन महिलाश्रम की स्थापना का नियम लिया। स्व. बाबू धर्मकुमार जी की स्मृति स्वरूप आरा नगर में दो मील दूर धर्म कुंज के भव्य भक्त में जैन बालाविश्राम की स्थापना की और परिजनों के सहयोग से विद्यालय भवन और चैत्यालय का निर्माण कराया। यह लौकिक व धार्मिक शिक्षा का केन्द्र तथा भारत वर्ष में नारी जागरण का आद्वितीय प्रतीक बना।

सम्मान: अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महिला परिषद ने ब्र. पं. चन्दाबाई अभिनंदन ग्रंथ प्रकाशित कराकर इस स्वतंत्र देश के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के द्वारा आपको समर्पित कराया।

संयमानुरागः सन् 1906 से ही चंदाबाई जी दैनिक षटकर्मों का पालना कर रही थीं। सन् 1934 में आचार्य श्री शांतिसागर जी से उदयपुर में कार्तिक शुक्ला पूर्णिमा को प्रातः 9 बजे सातवीं प्रतिमा के दान ग्रहण किये। आचार्य श्री शांतिसागर जी और पूज्य गणेशप्रसाद जी वर्णी इनके प्रेरणा स्त्रोत थे। मुख पर साधना की धनी गंभीरता, आँखों में सब कुछ भूलकर सेवा करने की निश्छलता, जीवन का कर्ममय फैलाया और वस्त्र में सादगी, माथे में आगम-पुराण, समविज्ञान और हृदय में वात्सल्य का लहराता सागर, प्रेरणाओं का हिमाचल, एकांत को भाविका और बिहार की महान नारी श्री चन्दाबाई जी ने इस सदी के आठवें दशक के अंत में संसार से सदा के लिए विदा ले ली।

नारी अभ्युख्यान के लिये वे आश्रम की संस्थापिका, संचालिका, अध्यापिका, व्याख्यता, कुशल सेविका, लेखिका कवियित्री और सफल संपादिका के रूप में सदैव आदर के साथ याद की जाती रहेगी।

कविता

पतित पावन शीतलनाथ जी

※ निर्यापक मुनि श्री योगसागरजी महाराज ※

पतित पावन शीतल नाथ जी।
दुरित ताप निवारक नाथ जी॥
शिव सुखामृत आर्णव आप है।
विनितभाव लिये गुण गा रहे॥1॥
चमर चौसठ सुन्दर डौलते।
कनक छत्रत्रयी अति शोभते॥
पवन मन्द सुगन्धमयी चले।
प्रकृति के फल पुष्प सभी खिले॥2॥
मनुज देह अपावन हो भले।
परक पंकज मोक्ष अहो खिले॥
जय नमो जय वन्त सदा हुये।
पद महा अजरामर पा गये॥3॥
धवल कीर्ति ध्वजा पहरा गये।
सुखद शीतल छाँव हले गये॥
अभय का वरदान हमें दिये।
परम पावन जीवन पा गये॥4॥
कुसुम सा मनमोहक काय से।
नममता लवमात्र शरीर से॥
अचल मेरु समान मुमुक्षु है।
तप लिया वह दुर्दर वान है॥5॥
जगह वैभव नश्वर ही रहा।
तव दिगम्बर मात्र सुना रहा॥
दृग खुले उर के निज को लखा।
वह अनंत सुवैभव को दिखा॥6॥
यह चिदम्बर चेतन मूर्ति है।
समयसार प्रशांत समुद्र है॥
तव स्वरूप निहार कृतार्थ है।
भ्रम मिटे मद मोह विलीन है॥7॥

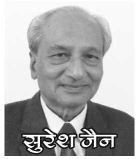

क्रमांक-51 वरिष्ठ नागरिक

बुढ़ापा तथा वरिष्ठता का अंतर

बुढ़ापा तथा वरिष्ठता दोनों के अंतर को समझे और जीवन का आनंद लें । इंसान को उम्र बढ़ने पर..... बूढ़ा नहीं बल्कि वरिष्ठ...... बनना चाहिये।

बुढ़ापा	वरिष्ठता
1. अन्य लोगों का आधार ढूँढता है	1. लोगों को आधार देती है।
2. छुपाने का मन करता है।	2. उजागर करने का मन करता है।
3. अहंकारी होता है।	3. अनुभव संपन्न, विनम्र संयमशील होती है
4. नई पीढ़ी के विचारों से छेड़छाड़ करता है।	4. युवा पीढ़ी को बदलते समय के अनुसार जीने की छूट देती है।
5. हमारे जमाने में ऐसा था की रट लगाता है।	5. बदलते समय से अपना नाता जोड़ती है और उसे अपना लेती है।
6. नई पीढ़ी पर अपनी राय थोपता है।	6. तरूण पीढ़ी की राय समझने का प्रयास करती है।
7. जीवन की शाम में अपना अंत ढूंढता है	7. जीवन की शाम में भी एक नये सबेरे का इंतजार करती है।
8. युवाओं पर बोझ बनता है।	8. युवाओंकी स्फूर्ति से प्रेरित होती है।
9. नकारात्मक पक्ष देखता है।	9. रचनात्मक पक्ष देखती है।
10. कुछ ऐसा न हो जाए सोचता है।	10. सर्वोत्तम की आशा करती है।
11. अपने पर से विश्वास उठ जाता है।	11. अपने पर पूर्ण विश्वास करती है।
12. जीवन निराशावादी हो जाता है।	12. जीवन में नई आशा की उमंग लाती है।
13. धैर्य समाप्त हो जाता है।	13. धैर्यवान और विवेकशील हो जाती है।
14. हर समय बढ़-बढ़ करता रहता है।	14. पहला सुनती है-फिर राये देती है।

वरिष्ठता और बुढ़ापे के बीच का अंतर को गंभीरता पूर्वक समझकर, जीवन का आनंद पूर्ण रूप से लेने में सक्षम बनिये। उम्र कोई भी हो सदैव फूल की तरह खिले रहिये.. उमंग उत्साह में रहिये... और दूसरों के जीवन के लिए प्रेरणा बनिये ।

पुरुष वर्ग रोग-अंडकोष में जलसंचय हाइड्रोसील (Hydrocele) नियंत्रण उपाय

✻ जिनेन्द्र कुमार जैन (इन्दौर) मो. 9977051810 ✻

यह रोग कभी स्वस्थ बच्चों युवकों को हो सकता है, किन्तु औसतन देश के वृद्ध पुरुषों को बहुत प्रभावित करता है। हमारे देश में कई पुरुष ऐसी अंतरंग स्वास्थ्य चिंताओं पर चर्या करने में झिझक महसूस करते हैं। आधुनिक चिकित्सा पद्धति समाधान प्रदान करती है।

अंडकोष (Testicle) यह दो ग्रंथि होती हैं जिनका प्रधान कार्य शुक्राणु, उत्पन्न करना ही है। लिंग की जड़ से युक्त एक चमड़े की मोटी थैली, स्क्रोटम जिसमें दो परत होती हैं जिनके अंदर उक्त दोनों अंडकोष रहते हैं। उक्त थैली के अंदर एक पर्दा होता है इसे दो हिस्सों में बांट देने के कारण बायें व दायें उक्त अंडकोष रहते हैं। स्क्रोटम की दोनों परतों में स्वाभाविक हालत में सिरस-मेम्ब्रेन की तरह एक प्रकार का जल जैसा पदार्थ निकलकर दोनों परतों मुलायम व भींगा रहता है, जिससे दोनों परत एक साथ चिपक नहीं सकती। किसी कारणों से उक्त जल जैसा पदार्थ स्वाभाविक की अपेक्षा अधिक परिणाम में निकलता है और शोषित न होकर दोनों परतों के बीच इकट्ठा रहता है व क्रमशः परिणाम में बढ़ता ही जाता है जिसे अंडकोष में जलसंचल या हाइड्रोसील होना कहते हैं।

कारण: 1. चोट लगने से बहुत अधिक बजन उठाना, घोडे की सवारी करना, बहुत ज्यादा साइकिल चलाना व सीट अधिक कड़क होना, बहुत तेजी से चलना।

2. वृद्धावस्था में रक्त फीका पड़ने या जल की तरह होने पर, टियुबर्कुलो सिस से किसी पुरानी बिमारी से छाती में जल इकट्ठा होने पर, जलोदर रोग होना, एकशिरा या यूरेथ्राइटिस आदि बीमारियों के इरिटेशन से।

3. अंडकोष में संक्रमण होना, हार्निया के कारण आंत या अन्य अंग अंडकोष में दबाव पड़ने से, प्रोस्सटेड ग्रंथि में सूजन या कैंसर होना भी कारण बन सकता है।

4. कुछ बच्चों में जन्म से ही यह स्थिति हो सकती हैं क्योंकि अंडकोष के चारों और तरल पदार्थ जन्म दोष होने से भरने की संभावना अधिक होती है।

लक्षण: 1. अंडकोष में एक बड़ी दर्द रहित गाँठ होती है जिसमें धीमा दर्द जो कुछ समय बाद दुबारा हो सकता है, अंडकोष लाल सूजा हुआ बहुत कड़ा होना, अंडकोष में भारीपन महसूस होना।

2. अंडकोष दबा बहुत छोटा होकर अंत में क्रमशः अदृश्य हो जाता है, अंडकोष के अंदर की तरल पदार्थ रंगविहीन व कभी-कभी कुछ पीले रंग की व इसके साथ ही क्रमशः पिग्मेंट, रक्त, फाइब्रिन, चर्बी, म्यूकस, एपिथेलियम, शुक्रादि के मिलने से हरीआमा, धनी हरी, भूरे रंग की व कभी लाल रंग की भी होती है।

3. साधारण हाइड्रोसील में स्क्रोटम के ऊपरी अंश अंडकोष और नीचे हिस्से के इकट्ठा तरह पदार्थ रहता है फिर भी कभी इरिटेशन या प्रदाह के कारण अंडकोष स्क्रोटस के साथ जुड़ जाता है तब अंडकोष नीचे लटकता रहता है व तरह पदार्थ ऊपर इकट्ठा हो जाता है।

4. यह रोग का दर्द एकादशी अमावस्या से पूर्णिमा तक बढ़ता है।

प्रकार- हाइड्रोसील अंडकोष को एक या दोनों तरफ प्रभावित कर सकता है यह दो प्रकार का होता है। (क) संचारी हाइड्रोसील (Acquired) पेट के भीतर तरल पदार्थो के संपर्क (संचार) में रहता है। उदरगुहा, पेट के अंदर का स्थान जिसमें पेट, आंत, यकृत गुर्दे अन्य स्थित होते हैं। यह संचारी हाइड्रोसील गर्भ के भ्रूण के दौरान होता है जिसके कारण अंडकोष का आकार दिन भर बदलता है तथा वह बड़ा या सूजा दिखाई देता है। (ख) नान कम्यूनिकेटिंग (Congenltal) अंडकोष के अंदर, अंडकोष के आसपास कुछ अतिरिक्त उदर द्रव्य रहता है। इस प्रकार का हाइड्रोसील जन्म से ही मौजूद हो सकता है या बिना स्पष्ट कारण के बाद भी विकसित हो सकता है। यह आमतौर पर एक ही आकार का रहता है या बहुत धीरे-धीरे बढ़ता है।

सावधानियाँ- 1. अंडकोषीय सर्पोट या लंगोट बांधना जो लक्षणों को प्रबंधित करने में सहायता कर भारीपन व बैचेनी की अनुभूति कम होती है व दबाब को कम करते हुये दैनिक कार्यो को अधिक आराम देता है।

2. आराम करते समय अंडकोष के नीचे एक छोटा तकिया या मुड़ा हुआ कपड़ा रखकर लेटने से रक्त संचार में सुधारा और जल संचय को कम करता है।

3. पर्याप्त पानी पीना, भारी बजन न उठाना व तीव्र गतिविधियों से बचने से उपचार से सहायता मिलती है।

4. जीवन शैली में बदलाव करके गतिशील जीवन शैली, वजन सामान्य रखना, सरल योग आसन, व्यायाम, सैर आदि जो किसी भी देखरेख अच्छी तरह से सीखें निस्संदेह जो हाइड्रोसील में उत्कृष्ट लक्षणात्मक गहत प्रदान करने में मदद करेंगा।

5. फल वाला आहार में दैनिक भोजन में सेव, संतरा, आडू, अनानास, अंगूर को शामिल करना व उबली हुई सब्जियाँ, ताजी सब्जियों के सलाद प्रभावी होते हैं। अदरक, कालीमिर्च, हल्दी की चाय नियंत्रित करने में सहायक होती है।

उपचार- 1.आमतौर पर हाइड्रोसील हानिरहित माना जाता है जो अपने आप ठीक हो जाता है विशेष कर बच्चों में, यदि एक वर्ष के बाद भी सूजन बनी रहती है या बढ़ जाती है तो जांच कराना आवश्यक होता है जिसमें शारीरिक परीक्षण और अल्ट्रासाउंड द्वारा अंडकोष में तरल पदार्थ की मात्रा और स्थान का पता लगाया जाता है। यदि स्थिति गंभीर है तो चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार व सर्जरी कराना चाहिये।

2. ऐलोवेरा और आंवला के रस को बराबर मात्रा में मिलाकर सुबह खाली पेट पीने से आराम होता है।

3. काली मिर्च और जीरे के पाउडर को गर्म पानी में मिलाकर पेस्ट बनाकर प्रभावित भाग में लगाना।

4. एप्सम साल्ट बाथ का प्रयोग, बर्फ की ढंडी पट्टियों से सिकाई भी नियंत्रित करती है।

5. होम्योपैथी चिकित्सा पद्धति में स्पांजिया, रोडेड्रान, रसटॉक्स, पल्सटिला, साइलिशिया, अर्निका, ब्रायोनिया, एब्रोटनेम औषधियों का उपयोग रोग व लक्षणों के आधार पर किया जाता है। समय पर उपचार सावधानियाँ व परहेज से रोग मुक्ति मिल सकती है। जिससे शारीरिक व मानसिक रूप से स्वस्थ्य जीवन व्यतीत कर सकते है।

हास्य तरंग

1. एक युवक कई वर्षो की पढ़ाई विदेश में रहकर लाखों रूपये खर्च करने के बाद डॉक्टर बनकर भारत आया। बस स्टेण्ड पर एक पुस्तक देखते ही उसे दिल का दौरा पड़ गया। कारण था 50 रूपये की पुस्तक जिसका नाम था मात्र 30 दिन में प्रसिद्ध डॉक्टर कैसे बने।

2. सिपाही ने घटना स्थल से थाने पर फोन किया यहाँ एक महिला ने अपने पति को गोली मार दी है, थानेदार क्यों ? सिपाही क्योंकि वह आदमी पोंछा लगाये फर्श पर चढ़ गया था। थानेदार- क्या तुमने गिरफ्तार कर लिया उस महिला को सिपाही नहीं-नहीं सर अभी फर्श गीला है।

3. दो महिलायें कुछ समय बाद औषधालय के बाहर मिली तो एक ने पूंछा बहिन आपने राजू बेटे को अंगूठा चूसने की आदत कैसे छुड़ाई। महिला-दवाई तो असर नहीं करी, मैंने उसकी नेकर ढीली सिलवा दी थी जिसे वह उसे ही पकड़े रहता है।

4. सेठी जी अपने स्टोर्स पर आये मित्र को अपने कर्मचारियों की बहुत तारीफ कर रहे थे, वे बड़े ही ईमानदार हैं। हमारे यहाँ की चाबियाँ बाहर ही रहती हैं। अचानक उनकी नजर किनारे पर खड़े कर्मचारियों पर गई जो आपस में बाते कर रहे थे उन्होंने गुस्से से पूंछा क्या बात कर रहे हो ? बताओ, तभी एक कर्मचारी बोला यह कह रहा है कि चाबियाँ नकली है ताला तो खुलता नहीं है।

5. मम्मी जोर से चिल्लाई क्या बात हैं ? नेहा तुम्हारी बहुत आवाज आ रही है। नेहा मम्मी बात यह है कि मैं भैया मम्मी पापा का खेल रहे हैं मैं मम्मी बनी हूँ।

संकलनः जिनेन्द्र कुमार जैन, गौरीनगर

पाक कला

रसमलाई

सामग्री

गाय का दूध (छेना बनाने) एक किलो

किलो फुल क्रीम दूध

शक्कर दो कटोरी लगभग (केसरी दूध में मिलाने के लिये व पानी में पकाने के लिये)

फिटकरी पौना चम्मच

केशर दस पत्तियाँ

विधि- 1 किलो गाय के दूध या टोन्ड दूध को उबाल लीजिये। फिर नींबू रस या फिटकरी से पनीर बना लीजिये। बिल्कुल वही तरीका जो रसगुल्ले का है। उसी तरीके से फाड़ना है। दूध में उबाल आते ही फिटकरी का पानी डाल लीजिये व पनीर फटते ही एक गिलास ठंडा पानी डालिये व छेना की पोटली से निकालकर बिखेर लीजिये मक्खन जैसा हो जायेगा। अब एक तरफ कुकर में तीन कटोरी पानी व एक कटोरी शक्कर डालकर उबाल लीजिये।

एक किलो फुल क्रीम दूध में केशर डालकर पकाये व शक्कर डालिये उसमें 1/2 आधा कटोरी जब पक जाये गैस बंद करिये। आपका केसरी दूध तैयार है अब इसे ठंडा होने रख दीजिये।

जैसे ही कुकर में पानी उबल जाये, तब उसमें छेना की छोटी-छोटी टिक्की या बॉल्स बना कर डालें व कुकर को बंद करके दो सीटी लगा दे। कुकर में सीटी लगायें और कुकर खुलने पर इन टिक्कियों को केसर वाले दूध में डाल ले। स्वादिष्ट रसमलाई तैयार है। ऊपर से पिस्ता बादाम बुरक कर सजा लीजिये। यदि शक्कर नहीं डालनी है तो मत डालिये फीकी भी चला सकते है।

बाल कहानी

जाली जियारूल

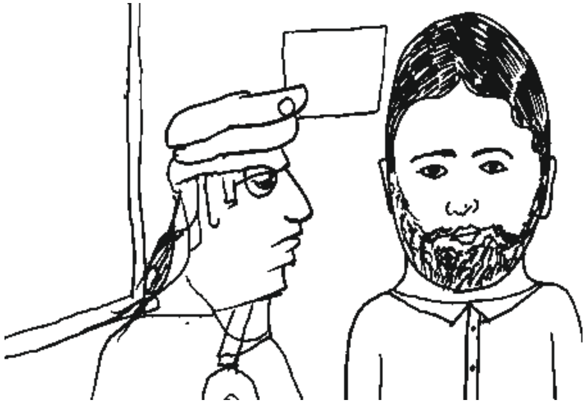

बिहार के पूर्णिमा जिले में जियारूल मोहम्मद रहता था। वह इश्क मिजाजी था। कट्टरवादी बदमाश था। जियारूल की शिक्षा भी बहुत कम थी। वह आवारागिर्दी ही करता था घर का भी कोई काम नहीं करता था इसलिये उसके अब्बा उसे घर से बाहर निकाल दिया था जियारूल की कौम के लोगों ने उसे काम का आदमी समझा और उसे पैसा देकर सिर्फ हिन्दू लड़कियों को फँसाकर उन्हें मुसलमान बनाने का काम सौंपा था। जियारूल ने अपना नाम बदलकर शंकर यादव कर लिया था। वह अपने माथे पर रोरी का तिलक लगाने लगा था और उसने सिर पर चोटी भी बना ली थी। कॉलेज की कैन्टिन के आसपास घूमने वाले इस लड़के जादू पूर्णिया की एक जूली नामक लडकी पर चल गया दोनों के बीच प्यार पखान हो गया था। जूली क्रंवट ने अपनी सब मर्यादाऐं छोड़ दी थी जूली अब क्लास में कम जाती थी वह तो बस कैन्टिन में बैठकर शंकर यादव का इंतजार करती रहती थी। जूली और शंकर यादव के रिस्ते प्रेम विवाह में कब बदल गये किसी को पता नहीं चला।

जूली के सामने शंकर यादव का असली रूप जब सामने आया तब वह ठगी सी रह गयी। जूली को यह पता लगा कि यह शंकर यादव नहीं एक मुसलमान लड़का है और उसे यह भी पता लगा कि मैं इसकी सातवीं पत्नी हूँ तो वह घबरा गई। जियारूल ने जूली का ब्रेनवास करना शुरु कर दिया और उस इस्लाम कबूल करने का दबाव बनाना शुरु कर दिया जूली समझ गई कि मैं एक मुस्लिम युवक साथ बरवाद हो चुकी हूँ तो जूली ने अपने घर वापसी का मन बना लिया। जूली ने जियारूल से साफ शब्दों में कह दिया कि मैं तुम्हें जान चुकी हूँ कि तुम कौन हो तुम एक धोखेबाज जानवर हो और मुझे तुम कमजोर मत समझना में तुम्हारे खून की प्यासी भी बन सकती हूँ। मैंने शादी शंकर यादव से की है। किसी मुसलमान लड़के से नहीं की। जूली का तेवर देखकर जियारूल सख्ते में आ गया और उसे जूली को आजाद कर दिया।

संस्कार गीत

धर्म भाषा का हो न दंगा

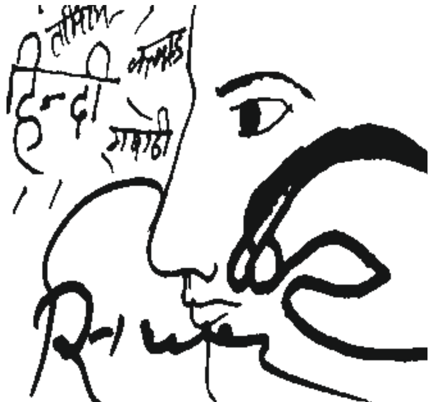

भारत अपना रंग विरंगा
शान है जिसकी ध्वजा तिरंगा

1.
तुंग हिमालय है रखवाला
हिन्द महासागर जल काला
यमुना सिंधू बहती गंगा

2.
विश्वगुरु भारत बन जाये
फिर अखंडता वापिस आये
भारतवासी हर दम चंगा

3.
उन्नति शिखर पर पहुँचे भारत
सत्य अहिंसा मय हो भारत
धर्म भाषा का हो न दंगा

बाल कविता

तीर्थ महिमा

भव सागर से पार उतारे
नौका तीर्थ बने भवि तारे
तीर्थ वंदना जो भी करता
जनम जनम के पाप वो हरता
सिद्ध भूमि तीरथ शुभकारी
पुण्य भूमि तीरथ उपकारी
तीर्थंकर कल्याणक तीरथ
चमत्कारमय अतिशय तीरथ
दर्शनीय तीरथ शुभ होते
जनम मरण दुखड़े खोते
सब तीरथ की करो वंदना
भव दुखकारी कर्म बंधना
तीर्थंकर शुभ नाम उचारे
तीर्थ पाप सब धो दे कारे।

समाचार

पंचकल्याणक सम्पन्न

पनागर- आचार्य श्री समयसागर जी महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में आचार्य पद प्रतिष्ठित होने के बाद प्रथम पद के बाद प्रथम पंचकल्याणक श्री दिगम्बर जैन मंदिर पनागर का हुआ। जिसमें प्रतिष्ठाचार्य वाणी भूषण ब्र. विनय भैया बंडा तपकल्याण के दिन ब्राह्मी सुंदरी बनने का सौभाग्य बाल ब्र. वसु दीदी बंडा, बाल ब्र. दीक्षा दीदी रहली, बाल ब्र. पल्लवी दीदी गुना, बाल ब्र. सलोनी दीदी गुना, बाल ब्र. सोनल दीदी पनागर, बाल ब्र. रूची दीदी कटंगा पनागर, बाल ब्र. रिशी दीदी दलपतपुर, बाल ब्र. प्रियांशी दीदी गुना, बाल ब्र. प्रिया दीदी बनवार, बाल ब्र. डॉ. सत्या दीदी दिल्ली को प्राप्त हुआ।

समाधि दिवस मनाया गया

पंचबालयति मंदिर इंदौर- संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी के गुरु हम सभी के दादा गुरु आचार्य श्री ज्ञानसागर महाराज जी का 53वाँ समाधि दिवस परम पूज्य विद्या शिरोमणि आचार्य श्री समयसागर महाराज जी की आज्ञा से परम पूज्य निष्पक्ष सागर, निस्पृहसागरजी महाराज के सान्निध्य में मनाया गया। इस अवसर पर विश्व हिन्दू परिषद के अंतर्राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री हुकुमचंद जी सावला एवं बाल ब्र. प्रदीप भैया पीयूष, ब्र. संजीव भैया कटंगी, ब्र. रजनीश भैया रहली, ब्र. विकास भैया रहली, ब्र. राजेश भैया टडा के साथ-साथ ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. जिनेश मलैया के मार्गदर्शन में कार्यक्रम संपन्न हुआ।

समाधिमरण

बरासो भिण्ड-आचार्य श्री सुबलसागर महाराज जी के परम शिष्य मुनि श्री अक्षौभसागर महाराज जी का समाधिमरण 28 अप्रैल 2025 को दोप. 12.58 पर बरासो भिण्ड में हुआ।

सुमतिधाम इंदौर-आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में मुनि श्री विश्वतीर्णसागर महाराज जी का समाधिमरण 2 मई 2025 को हुआ।

दीक्षायें सम्पन्न

इंदौर- आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के मंगल शुभाशीष आज्ञा एवं निर्देशन में मुनि श्री सुप्रभसागर महाराज जी के करकमलों से ब्र. राकेश भैया मंडावरा को क्षुल्लक दीक्षा बॉस्केटबॉल सभागृह इंदौर दिनांक 08 मई 2025 को दी गई। जिनका नाम क्षुल्लक श्री विप्रज्ञसागरजी महाराज रखा गया।

सुमतिधाम इंदौर-आचार्य श्री विशुद्धसागर महाराज जी के ससंघ सान्निध्य में गणधर मुनि श्री विवर्धनसागर जी महाराज द्वारा क्षुल्लक श्री विश्वतीर्णसागर महाराज जी को मुनि दीक्षा 1 मई 2025 को दी गई जिनका नाम मुनि श्री विश्वतीर्णसागर महाराज रखा गया।

इंदौर- आचार्य श्री विषदसागर महाराज जी के करकमलों से मोदी जी की नसिया इंदौर में एलक श्री विपिनसागर जी महाराज को मुनि दीक्षा 11 अप्रैल 2025 को दी गई जिनका नाम मुनि श्री विपिनसागरजी महाराज रखा गया।

पट्टाचार्य पद से सुशोभित

भव्य आगवानी

पंचबालयति मंदिर इंदौर- आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के शिष्य आचार्य श्री समयसागर महाराज जी के प्रिय शिष्य मुनि

श्री निष्पक्षसागरजी, मुनि श्री निस्पृहसागर जी महाराज की भव्य आगवानी महिन्द्र शोरूम देवास नाका से पंचबालयति मंदिर तक की जिसमें हाथी, रथ, दिव्यघोष एवं अनेक भक्तों ने आगवानी तक पुण्यार्जित किया।

उदयपुर- मुनि श्री पुण्यसागर महाराज जी को 12 मई 2025 उदयपुर राजस्थान समाज ने आचार्य कल्प पद से अलंकृत किया।

बारहवीं परीक्षा में भारत में टॉप

बी.एस.सी. बारहवीं बोर्ड परीक्षा में उत्तरप्रदेश के शामली जिले की बिटियां शावी जैन सुपुत्री अंकित जैन ने भारत में टॉप किया जिन्होंने 500 में से 499 अंक हासिल किये। संस्कार सागर परिवार की और से बहुत-बहुत बधाई।

त्रय पदधारी का महामस्तिकाभिषेक एवं निर्वाण लाडू

दिगम्बर जैन पंचबालयति मंदिर इंदौर में श्रुतराधना महामहोत्सव के अंतर्गत द्वितीय दिवस संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर महामुनिराज के शिष्य विद्याशिरोमणि आचार्यश्री समयसागर महाराज जी के आज्ञानुवर्ती मुनि द्वय श्री निष्पक्षसागर जी एवं श्री निस्पृह सागर जी की पावन सन्निधि में समवशरण विधान के अंतर्गत आज इन्द्राणियों ने भक्ति भाव पूर्वक चौबीस तीर्थंकरों गणधर परमेष्ठी के अर्घ समर्पित कियें।

सम्पूर्ण क्रियायें ब्र. सुरेश मलैया, ब्र. संजीव भैया जी ने संपन्न कराई। साथ ही सोलहवें तीर्थंकर शांतिनाथ भगवान का महामस्तकाभिषेक एवं विशेष मंत्रों के द्वारा शांतिधारा करते हुये निर्वाण लाडू भी चढ़ाया गया।

प्रथम अभिषेक, शांतिधारा एवं छत्र चढ़ाने का सौभाग्य श्रावकश्रेष्ठी श्रीमति सारिका प्रमोद जैन, सार्थक जैन वैशाली परिवार ने एवं श्रावकश्रेष्ठी श्रीमति ऋतु-भरत जैन, चंद्रकांता जैन परिवार ने प्राप्त किया। श्रीमान् रमेशचंद्र जी जैन क्लर्क कॉलोनी परिवार, श्रीमति सुनीता वीरेन्द्र जैन परिवार, अभिषेक वैसाखिया परिवार, अभय जैन परिवार ने भी यह सौभाग्य प्राप्त किया।

शिखर पर विराजित चारों दिशाओं में पार्श्वनाथ भगवान का अभिषेक शांतिधारा एवं छत्र चढ़ाने का सौभाग्य क्रमशः राहुल जैन स्पोर्ट्स परिवार, संजय जैन बासौदा परिवार, प्रतीक जैन गांधी परिवार एवं आशीष जैन बरायठा परिवार ने प्राप्त किया।

निर्वाण लाडू चढ़ाने का सौभाग्य श्रावक श्रेष्ठी सौरभ जैन, मनीष जैन, संजय जैन अहिंसा, गौरव जैन आदि लोगों ने प्राप्त किया एवं इस अवसर पर प्रतीक जैन परिवार, योगेश जैन परिवार, मनीष जैन बीना परिवार, आशीष जैन बीना परिवार, महेश जैन मालथौन परिवार ने भी इस अवसर पर अभिषेक शांतिधारा चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

इस अवसर पर मुनि श्री अपने प्रवचनों में बताया मुनि श्री ने अपने प्रवचनों में शांतिधारा का महत्व बताते हुये कहा कि शांतिधारा के प्रभाव से रोग, शोक व्याधियों का उपचार होता हुआ देखा गया है यहां तक कि कैंसर जैसे रोगी भी गंधोदक के प्रभाव से ठीक होते हुए देखे गये है। मन में श्रद्धा विश्वास जितना-जितना बढ़ता जाता है उतना-उतना इस अनुष्ठान से श्रावक को लाभ होता जाता है।

वर्ग पहेली 308

1		2	3	■	4		5	6
	■	7				■	8	
9	10		■	■	11		■	■
12		■	13	14		■	15	16
17		■	18		■	■	19	
	■	20			■	21	■	■
22	23		■	■	24			25
■	26		■	27			■	
28			■	29		■	30	

बाये से दाये

1. आचार्य विद्यासागर जी महाराज की दीक्षा नगरी -4
4. जंगल में रहने वाला -4
7. विद्याधर, अखिधर -4
8. सुख अनुकूलता, सुखवेदन -2
9. चलना, हिलना, हठ का भाव -3
11. मूल्य, कीमत, धन -2
12. श्वास, शक्ति ताकत -2
13. हवा वायु -3
15. छाया छाँव, परछाई -2
17. ईसाई साधवी, नानी, मौसी -2
19. गदगद, घूमने फिरने का भाव -2
20. गिरना नीचे गिरना अधोगति -3
22. चाँदी -3
24. आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का समाधि स्थलतीर्थ -4
27. पचाने करने वाला -3
28. बंदर, मर्कट -3
29. क्षण लम्हा -2
30. चील जैसा पक्षी -2

ऊपर से नीचे

1. महाराष्ट्र का एक शहर 7 अक्षर वाला -7
2. पर्वत श्रेणी, करधोंनी -3
3. नस, रक्तवाहनी -2
4. कृपा, आर्शीवाद -2
5. रहना ठहरना निवास -2
6. राम की धर्मपत्नी -2
10. फुलवारी वाटिका उपवन -3
11. देने का खैरात -2
14. देश राष्ट्र -3
16. स्मृति का भाव, स्मरण -2
18. लीन होने का भाव -2
21. सोठ का पूर्व रूप -3
23. यत्न, प्रयास -3
25. रस्म, परम्परा -3

वर्ग पहेली 307 का हल

1 आ	2 चा	रां	ग	■	3 दृ	ष्टि	4 वा	5 द
6 धा	र	■	■	7 व	श्य	■	8 है	र
9 र	ण	थं	10 भौ	र	■	11 ज	न	■
■	■	■	र	■	12 पा	रा	■	र
13 स	14 र	14ए स	■	15 व	न	■	16 अ	ज
17 मं	थ	न	■	ज	■	18 ह	व	■
वा	■	19 द	20 म	न	■	21 बा	धि	22 त
या	■	■	ह	■	23 श्रु	त	ज्ञा	न
24 ग	ज	रा	ज	■	25 ति	र	न	■

....सदस्यता क्र. ....

पता : ....

....

श्रुतराधना महापर्व एवं त्रयपदधारी के तीन कल्याणक के पावन प्रसंग पर

श्री 1008 समवशरण, आचार्य छत्तीसी
श्रुतस्कंध महामंडल विधान, महामस्तकाभिषेक एवं रथयात्रा

दिनांकः 25 मई से 1 जून 2025

मुनि श्री निष्पक्षसागर जी एवं मुनि श्री निष्पृहसागर जी का समवशरण मंडल विधान के पोस्टर का लोकार्पण करते हुये

महामस्तकाभिषेक करते हुये

भव्य समवशरण की रचना

महामस्तकाभिषेक एवं शांतिधारा करते हुये

अर्घ समपितित करते हुये

अर्घ समर्पित करते हुये ब्रह्मचारीगण

समवशरण में अर्घ समर्पित करते हुये इन्द्र गण

समवशरण में अर्घ समर्पित करते हुये इन्द्राणिया

संस्कार सागर पढ़िए सिर्फ एक Click पर www.sanskarsagar.org

सम्पर्क करें - 0731-3193601, 8989505108, 8989121008

प्रिंटिंग दिनांक 27/05/2025, पोस्टिंग दिनांक : 03/06/2025